नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



- रामनवमी : श्री राम-सीता की छवि
- इतने सुंदर चित्र बच्चों ने बनाए
- दक्षिण की लक्ष्मीबाई

अप्रैल '९५

छह रुपए

टाइम्स प्रकाशन


जीवन में भर लो रंग
डायमण्ड कॉमिक्स के संग
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
प्राण
चाचा चौधरी-12
प्राण
जाब और
डाक्टर की कठपुतलियां
अंगार
ताऊजी
और महामंत्र
लम्बू मोटू और
ट्रेनिंग सैन्टर
मैण्ड्रेक-29
फौलादी सिंह
और घोटार
जेम्स बाण्ड-32
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-42
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड
कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2 नई दिल्ली-110020

Scanned with CamScanner

नंदन

अप्रैल '९५
वर्ष : ३१ अंक : ६

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : रामकृष्ण शर्मा
एलबम : डा. एम. एस. अग्रवाल

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**
वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा**; उप-सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार**; चित्रकार : **नारायण**



आओ बात करें

बालस्वामी को आपने नहीं देखा होगा !

बरसों पहले बालस्वामी अचानक मिल गए थे। एक पुराने मित्र उन्हें लेकर आए थे। उन्होंने कहा था— 'बालस्वामी महाराज से मिलो। चालीस बरस से मैं इन्हें देख रहा हूं, ऐसे ही हैं। कई बड़े-बूढ़े कहते हैं कि इनकी उम्र डेढ़ सौ साल से ऊपर है।'

बालस्वामी चेहरे पर मुसकान बिखेरते हुए यह सुनते रहे। गोरा रंग, चेहरे पर तेज। साधु-संन्यासी जैसे गेरुए कपड़े नहीं पहने हुए थे। सफेद धोती, मलमल का कुर्ता और सिर पर गांधी टोपी। देखने में लग रहे थे कोई सोलह-सत्रह बरस के किशोर। स्वामी जैसे तो बिल्कुल नहीं। लेकिन बातों-बातों में लगा कि तपे-मंजे तो हैं। अपने बारे में कोई बात बताते नहीं, कुछ पूछो तो हंसी में टाल जाते।

कई दिन साथ रहे, पर उनका कोई चमत्कार नहीं देखा। हां, उनसे जो भी मिलता, उससे उसी की भाषा में बात करने लगते— तमिल, अंग्रेजी, पंजाबी, राजस्थानी...

कई बरस बाद पता चला— छोटे-से गांव ढिकाना में उन्होंने ग्यारह दिन की समाधि लगाई है। मैं भी देखने पहुंचा। बाद में बालस्वामी ने बताया कि वह कोई चमत्कार नहीं दिखाते, न कोई जादू जानते हैं। हां, गुरु से थोड़ी योग-विद्या जरूरी सीखी थी। स्वामी जी ने बताया —'मेरे गुरु के गुरुजी थे योगी हरिदास,सिद्ध पुरुष थे। मैं तो उनके चरणों की धूलि हूं।'

योगी हरिदास के किस्से पंजाब में यदा-कदा सुनने को मिल जाते हैं। किसी समय उन्होंने कश्मीर के महल में चार महीने तक समाधि लगाई थी। उन दिनों वहां राजा ध्यानसिंह गवर्नर थे। उन्होंने पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह को हरिदास के बारे में बताया। महाराजा रणजीत सिंह ने गवर्नर से कहा --'योग का यह करिश्मा हमें भी दिखवाओ।'

यह काम आसान तो था नहीं। लेकिन ध्यानसिंह ने किसी तरह योगी हरिदास को इसके लिए तैयार कर लिया। वह योगी जी को लेकर लाहौर आए। कुछ दिन तक हरिदास केवल दूध और दही लेते रहे। उन्होंने अपने शरीर को शुद्ध किया। महाराजा के महल में ही एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा गया। महाराजा रणजीत सिंह के दो चिकित्सक अंग्रेज थे— डा. मुरे और डा. मेक्ग्रेगोर।

उस दिन सवेरे ही हरिदास ने नाई से अपनी दाढ़ी बनवाई। समाधि लेते समय हरिदास बड़े से बक्से में पद्मासन लगाकर बैठ गए। कुछ ही देर में डाक्टरों ने देखा कि उनकी नब्ज चलनी बंद हो गई। बक्से को गड्ढे में रखवा दिया गया। ऊपर से मिट्टी डाल दी गई। गड्ढे के ऊपर जौ बो दिए गए। उस जगह पर चारों ओर दीवार बना दी गई। चार हथियारबंद पहरेदार भी वहां रात-दिन पहरा देने लगे।

यों ही उनतालीस दिन बीत गए। इस बीच जौ के हरे-हरे पौधे उस जगह उग आए थे। चालीसवें दिन महाराजा रणजीत सिंह, उनके कई मंत्री और दोनों अंग्रेज डाक्टर वहां आए। मिट्टी हटाई गई। गड्ढे से संदूक निकाला गया। हरिदास का शरीर ठंडा था। वह अचेत थे। उसका चेहरा साफ-सुथरा था। दाढ़ी के बाल नहीं बढ़े थे।

दोनों डाक्टर छाती की मालिश करके हरिदास को होश में लाने लगे। कुछ ही देर में हरिदास को चेत आया। वह ऐसे उठ बैठे मानो लम्बी नींद से जगे हों।

महाराजा रणजीत सिंह तथा उनके साथियों को बड़ी हैरानी हो रही थी। योगी जी को केसर मिले दूध से स्नान कराया गया। महाराजा रणजीत सिंह ने अशर्फियों से भरे कई थाल मंगवाए। वे थाल योगी हरिदास के चरणों में अर्पित किए गए। योगी जी ने धन को हाथ नहीं लगाया। उन्होंने इतना ही कहा— ''भारत की योग-विद्या का लोप न हो, ऐसा कुछ कीजिए।''

महाराजा ने उन्हें अपने राज्य में कहीं भी योग-विद्या सिखाने का फर्मान निकाला। हर तरह की सुविधा देने को कहा।

योग की महिमा का बड़ा बखान है। इससे क्या नहीं हो सकता। पर अच्छे गुरु के बिना इसे सीख नहीं सकते।

—तुम्हारे भइया

तीन बाण

—गिरीश भंडारी

राजा श्वेतकेतु विदर्भ के राजा थे। उनके कोष में अक्षय धन का भंडार था, सेना थी। एक से बढ़कर एक पंडित भी उनके दरबार में विराजमान थे, पर उनको संतोष न था। उस समय महाप्रतापी विक्रमादित्य उज्जयिनी के महाराजा थे। उनके न्याय, प्रताप और विद्वत्ता की चर्चा चारों ओर फैली थी। इससे श्वेतकेतु मन ही मन अप्रसन्न रहते थे।

राजा श्वेतकेतु बहुत बड़े धनुर्धारी भी थे। तीरंदाजी में तो उनका मुकाबला ही न था।

उनका राजमहल एक ऊंची पहाड़ी पर था। राजा अक्सर चांदनी रात में पलंग पर लेटकर तारों भरे आसमान को देखते थे। दास-दासियां पंखा करते। संगीत लहरियां उठतीं। सारा महल संगीत की लहरियों से गूंज उठता पर राजा श्वेतकेतु की चिंता मिटती न थी। रह-रहकर उन्हें सम्राट विक्रमादित्य की ख्याति से ईर्ष्या होती।

एक बार श्वेतकेतु अपने महल की छत पर लेटे थे। अचानक उन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा। ऊपर एक विशाल पक्षी उड़ रहा था। उस पक्षी का शरीर जैसे सोने का बना था। सारे शरीर से एक विचित्र प्रकाश फूट रहा था। राजा श्वेतकेतु आश्चर्य से भर उठे। सारे दास-दासी, संगीतज्ञ चकित हो, देखते रह गए। पक्षी उड़ता हुआ दूर चला गया।

तभी राजा ने अपना धनुष उठाया और एक बाण चलाया। पक्षी के पंखों से उत्पन्न होने वाली आवाज को ध्यान में रखकर, यह बाण चलाया गया था।

अभी तक राजा ने कई बार बाण चलाकर उड़ते पक्षियों का शिकार किया था, कभी भी ऐसा नहीं हुआ था कि निशाना सही न लगा हो। इस बार बाण चला और किसी पक्षी के चिल्लाने की कोई भी आवाज नहीं आई। न ही कोई घायल होकर गिरता दिखाई दिया।

राजा आश्चर्य में डूबे रह गए। उन्होंने फिर से धनुष पर तीर चढ़ा लिया। वह बिलकुल तैयार खड़े हो गए।



उनका इरादा था कि जैसे ही पक्षी दिखेगा, वह ठीक सामने से बाण चलाएंगे।

थोड़ी ही देर बाद प्रकाश का एक पुंज आता दिखाई दिया। वैसा ही पक्षी था। राजा ने पूरी सावधानी से बाण चलाया था। बाण विद्युत की गति से पक्षी की तरफ बढ़ा, पर सबने दांतों तले अंगुली दबा ली। पक्षी ने अपनी चोंच खोली। बाण अपनी चोंच में दबाया और उड़ता हुआ दूर निकल गया। राजा को काटो तो खून नहीं।

तभी एक पक्षी और उड़कर आता दिखाई दिया। जब तक राजा कुछ समझ पाते, यह पक्षी राजा के एकदम निकट चला आया। उसने बिजली की सी फुर्ती से राजा के धनुष को ही अपनी चोंच में दबाया और उज्ज्वल आकाश में खो गया। सब स्तब्ध थे। यह हुआ क्या! ये पक्षी कौन थे? कहां से आए थे?

राजा ने अगले दिन अपनी राजसभा में इस पहेली को सामने रखा। एक लाख सोने की मुद्राओं का पुरस्कार भी घोषित किया, जिससे कि यदि कोई इस बात की पूरी जानकारी दे सके, तो उसे यह पुरस्कार

मिले पर सब व्यर्थ । अंत में राजा के महामंत्री ने कहा कि इस समस्या का हल तो एकमात्र चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ही कर सकते हैं,जो महान विद्वान ही नहीं, सिद्ध पुरुष भी हैं ।

राजा श्वेतकेतु ने फिर विक्रमादित्य की प्रशंसा सुनी । पहले तो उनको ईर्ष्या हुई, फिर उन्होंने सोचा कि इस विचित्र घटना के बारे में तो उन्हें जानकारी हासिल करनी ही है ।

उन्होंने एक ब्राह्मण का वेश बनाया और उज्जयिनी की ओर चल दिए ।

राजा विक्रमादित्य की प्रजा खुशहाल थी । चारों ओर सुख-समृद्धि थी । न्याय,वैभव, धन और प्रसन्नता जैसे सारी प्रजा में समान रूप से बंटी थी। जगह-जगह सम्राट विक्रमादित्य की प्रशंसा हो रही थी । श्वेतकेतु का मन भी निर्मल हुआ । उन्होंने सोचा कि क्या उनकी प्रजा भी ऐसे ही प्रसन्न हैं ? क्या वह भी इसी प्रकार प्रजा का ध्यान रखते हैं ?

श्वेतकेतु विक्रमादित्य के दरबार में पहुंचे । सम्राट विक्रमादित्य सिंहासन पर विराजमान थे । जब ब्राह्मण वेश में श्वेतकेतु दरबार में आए, तो उन्होंने देखा कि उनके छोड़े दोनों बाण और धनुष एक चौकी पर रखे हैं । बिल्कुल उनके ही बाण, वही विशाल धनुष ।

महाराजा विक्रमादित्य ने ब्राह्मण वेशधारी श्वेतकेतु को देखा । उनकी आंखें जिस प्रकार अपने बाणों और धनुष को देख रही थीं, उससे विक्रमादित्य ने सारी बात पल भर में समझ ली ।

''महाराज श्वेतकेतु का स्वागत है । यहां मेरे आसन पर विराजिए ।'' —सम्राट विक्रमादित्य ने अपने सिंहासन पर जगह बना दी ।

श्वेतकेतु ने समझ लिया कि चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य असाधारण व्यक्ति हैं । उनको इस तरह पहचान लेना, उनके दरबार में उनके दो बाणों और धनुष का पहुंच जाना वास्तव में असाधारण घटना ही थी । उनका मन अब इस गुत्थी को सुलझाने के लिए और भी व्याकुल हो उठा ।

सम्राट विक्रमादित्य ने उनकी व्यग्रता को समझा । कहा—''महाराज, मेरे राज्य में ये तीन पक्षी सारे राज्य का चक्कर लगाते हैं । पहला पक्षी है न्याय । अगर न्याय न हो, तो राज्य का आधार ही नहीं है ।

''दूसरा पक्षी है राज्य की सुरक्षा । राज्य में सुरक्षा न हो, तो प्रजा का जीवन मुश्किल हो जाता है । धन हो, सुख हो, अगर सुरक्षा न हो तो सब व्यर्थ ।

'' तीसरा पक्षी है त्याग । राजा का कर्तव्य है कि प्रजा के हित में बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार रहे ।

''राजन, आपने बाणों से तीन दिव्य पक्षियों को गिराने की चेष्टा की । यह चेष्टा तो व्यर्थ ही थी । वास्तव में इन दिव्य पक्षियों को देखकर गिराने की भावना भी मन में आना उचित नहीं है ।''

श्वेतकेतु विक्रमादित्य के चरणों पर झुके –''सम्राट, अब मैं पहली बार समझा हूं कि आपकी यश-पताका चारों ओर क्यों फहरा रही है ? आपने मेरे हृदय को जीत लिया है । आप मेरे राज्य को स्वीकार करें ।''

''नहीं महाराज ! आप अखंड राज्य करें । बस इन तीन बातों का ध्यान रखें । अगर आपने इन बातों का ध्यान रखा तो ये दिव्य पक्षी आपके भी राज्य की रखवाली करेंगे ।''– विक्रमादित्य ने कहा।

श्वेतकेतु विदर्भ वापस आए । आते ही उन्होंने खुद को प्रजा की सेवा में समर्पित कर दिया । ●



नहीं चाहिए धन

—रमाकांत 'कांत'

सोन नदी के किनारे एक जंगल था। वहां कई गांव बसे हुए थे। उन गांवों में अधिकतर चरवाहे, लकड़हारे और अन्य जंगली जातियां रहती थीं। जंगल से लकड़ियां काटना, पशु चराना, जड़ी-बूटियां एकत्रित करना और उन्हें बाजार में बेचना उनका रोजगार था।

इन धंधों से उनका गुजारा नहीं हो पाता था। वे अत्यंत गरीब थे। इसीलिए उनमें से बहुत-से लोग गलत धंधों में भी लग गए थे। चोरी, हत्या, ठगी जैसे काम भी वे करने लगे थे।

उस गांव में सोनक नाम का एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत गरीब था पर था एकदम ईमानदार। संतोषी भी। जो कुछ मिल जाता, उसमें ही गुजर-बसर कर लेता था। कई बार तो इस कारण सोनक और उसकी पत्नी को भूखों भी रहना पड़ता था।

एक दिन, सोनक जंगल से लौट रहा था। उसके सिर पर लकड़ियों का बड़ा-सा गट्ठर था। रास्ते में सोन नदी थी। नाव से पार होने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। इसीलिए उसने नदी तैरकर पार करने का फैसला किया। लकड़ियों को पानी में तैराता, धकेलता हुआ वह नदी के पार पहुंच गया। तेज हवाएं चल रही थीं। वह ठंड से कांप रहा था।

इसी हाल में सिर पर गट्ठर रख, घर की ओर चल पड़ा। कुछ दूर ही चला था कि एक झाड़ी के पास उसने एक धोती और कुर्ता रखे देखे। कपड़े एकदम नए और कीमती थे।

उत्सुकतावश उसने इधर-उधर देखा पर कहीं, कोई नजर नहीं आ रहा था। वह यह भी जानता था कि उसके ही गांव में नहीं बल्कि आसपास के गांवों में भी इतने महंगे कपड़े पहनने वाला धनी आदमी कोई नहीं है। यह जानते हुए भी उसने कपड़ों को छुआ तक नहीं। कपड़े रखकर भूल जाने वाले आदमी की बुद्धि पर उसे तरस जरूर आ रहा था। वह वहां से आगे चल पड़ा।

थोड़ी दूर ही चला था कि उसने देखा कि एक जंगली फल पड़ा हुआ है। उसमें छिपाकर रखी हुई दो स्वर्ण मुद्राएं झाड़ी के नीचे पड़ी थीं। उसे फिर आश्चर्य हुआ कि किस लापरवाह ने उन्हें यों ही फेंक दिया है।

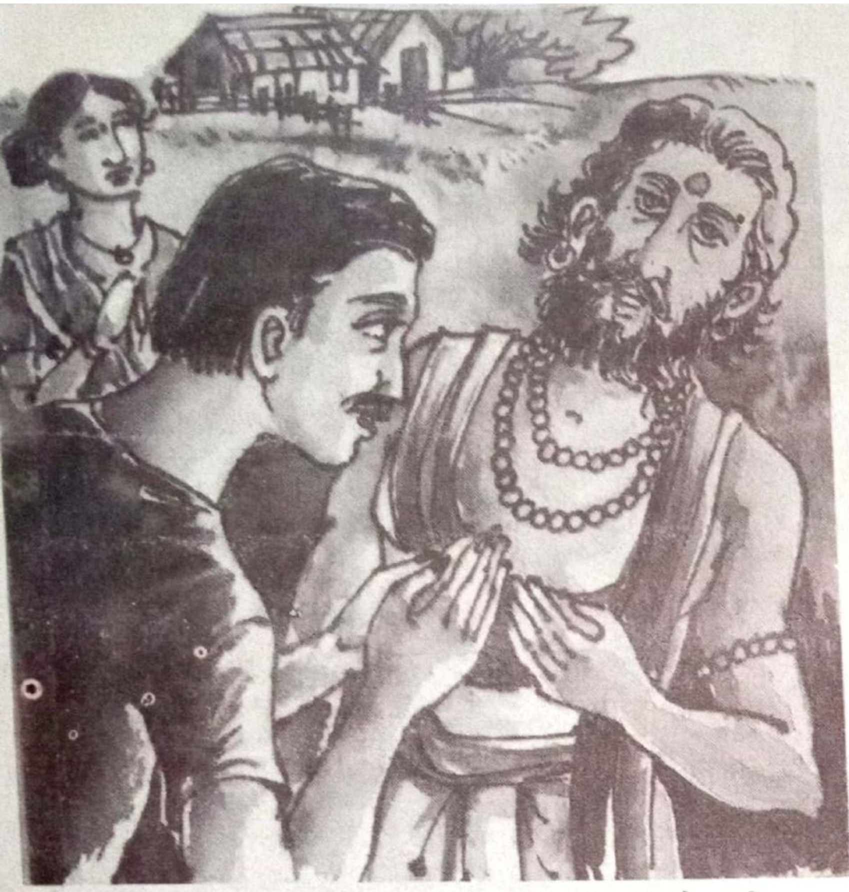
मन ही मन उसने सोचा कि इन चीजों को तो ले लेना चाहिए। पैसे की जरूरत भी है। शायद इसीलिए भगवान ने ये सब चीज उसकी राह में बिखेर दी हैं। दोनों पति-पत्नी कई दिनों से भूखे थे।

जिस तरह यह विचार मन में आया था वैसे ही खत्म भी हो गया। उसे आश्चर्य हुआ कि वह लोभी होता जा रहा है। भला एक जोड़ी कपड़ों और दो स्वर्ण मुद्राओं से जीवन तो व्यतीत नहीं हो सकता। फिर लोभ में क्यों पड़ूं ? बस, हाथ-पैर चलें, मेहनत मजदूरी करने लायक बना रहूं, यही मेरा सबसे बड़ा धन है, यह सोचकर उसने स्वर्ण मुद्राओं की भी अनदेखी कर दी। वह अपने रास्ते चल पड़ा।

उसी दिन सोनक के गांव में एक ज्योतिषी आया हुआ था। वह हाथ और मस्तक की रेखाएं देखकर भविष्य बता रहा था। बहुत-से लोग अपना भाग्य जानने उसके पास जा रहे थे। सोनक की पत्नी गरीबी से परेशान थी। अपना भाग्य जानने उसके पास चल पड़ी। उसने ज्योतिषी से पूछा—"महाराज, आखिर हम यह भूख और गरीबी कब तक सहेंगे ? क्या हम जीवन भर रोटी के लिए तरसते रहेंगे ?"

ज्योतिषी ने उसके हाथ की रेखाएं देखीं। हंसते हुए बोला—"तुम्हारी गरीबी नहीं मिट सकती। तुम्हारा पति नहीं चाहता कि तुम भरपेट रोटी खाओ और आराम से रहो। सच पूछो तो जब तक तुम्हारा पति जीवित रहेगा, तुम्हारी गरीबी यों ही चलती रहेगी।"

"आप भी कैसी बातें कह रहे हैं ! मेरा पति गरीबी दूर करने के लिए कठोर परिश्रम करता है। उसमें कोई दुर्गुण भी नहीं है। फिर भला आप कैसे कह सकते हैं कि वह गरीबी दूर नहीं करना चाहता।"—सोनक की पत्नी बोली।



"तुम सच कह रही हो । तुम्हारा पति मेहनती व भला है । आज ही भगवान ने उसे सुंदर कीमती वस्त्र दिए । वह ठंड से ठिठुरता रहा, पर नहीं लिए । उसे स्वर्ण मुद्राएं दीं, वे भी उसने ठुकरा दीं । अब तुम ही बताओ तुम्हारी गरीबी कैसे दूर हो सकती है ?" —ज्योतिषी ने पूछा ।

"नहीं ? वह ऐसा नहीं कर सकता । यह सब झूठ है ।" —पत्नी बोली ।

"—तुम्हें विश्वास नहीं है तो तुम घर जाओ । तुम्हारा पति सिर पर गट्ठर उठाए अभी घर पहुंचा है । तुम जाकर उससे पूछो ।"

सोनक की पत्नी तुरंत घर गई । उसका पति जंगल से लौटा ही था । उसके वस्त्र गीले थे । वह थका हुआ था । उसने जाते ही पति से पूछा—"क्या आज तुम्हें रास्ते में कीमती वस्त्र और स्वर्ण मुद्राएं मिलीं, जिनको तुमने ठुकरा दिया ?"

सोनक को आश्चर्य हुआ । उसे वहां किसी ने नहीं देखा था फिर भला पत्नी को कैसे पता चल गया ? उसने आश्चर्य पूर्वक कहा—"हां, मिली थीं । मैंने उन्हें नहीं लिया, तुम्हें यह कैसे पता चला ?"

पत्नी ने ज्योतिषी से हुई सारी बातें बताईं । सोनक ने सोचा कि तब तो ज्योतिषी उन चीजों के असली मालिक को भी जानता होगा । वह चाहता था कि उन्हें सही जगह पहुंचा दे, ताकि व्यर्थ में उन्हें देखकर किसी का मन न ललचाए । इसीलिए वह भी पत्नी के साथ ज्योतिषी के पास गया । उसने ज्योतिषी को प्रणाम किया । कहा—"आपने मेरी पत्नी से जो कहा, वह एकदम सच है । पर आप यह तो बताएं कि कौन अभागा उन चीजों को यहां यों ही छोड़ गया है ?"

"तुम्हें इससे क्या लेना-देना ? वह धन तुम्हारे भाग्य में था इसलिए तुम्हें मिला । लेकिन तुमने उसे नहीं लिया, यह तुम्हारा दुर्भाग्य है ।" —ज्योतिषी ने कहा ।

"—मुझे ऐसा धन नहीं चाहिए जो यों मुफ़्त में मिले ।"

"इस तरह तुम लक्ष्मी की अवहेलना कर रहे हो । क्या लक्ष्मी का अपमान करने वाला कभी धनी हो सकता है ?" —ज्योतिषी ने कहा ।

"—मुझे धनी नहीं होना । मुझे मेहनत का फल चाहिए, चाहे गरीबी में रहना पड़े ।" —सोनक बोला ।

—"देखो भूखे मरना मरे हुए जैसा जीवन व्यतीत करना है । तुम मेरा कहना मानो और वे धन-वस्त्र उठा लाओ । वे अभी भी वहीं पड़े हुए हैं । यह समझ लो वे सब तुम्हारे हैं । ईश्वर ने तुम्हार लिए भिजवाएं हैं ।" —ज्योतिषी ने समझाया ।

"नहीं मैं दूसरों के धन को मिट्टी समझता हूं । उसे आप किसी और को दे दें ।" —सोनक बोला ।

ज्योतिषी अधिक देर तक अपने को छिपा नहीं सका । उसने अपने वास्तविक देव-स्वरूप को प्रकट कर दिया । वह बोला—"सोनक, वाकई तुम्हें लोभ नहीं है । तुम्हारा कल्याण हो । मैं वरदान देता हूं कि तुम्हें कभी कोई कमी नहीं रहेगी ।"

सोनक ने कहा—"प्रभु, मुझ अकेले को वरदान न दें, वरदान ही देना है तो ऐसा दें कि बस्ती के सभी लोगों का कल्याण हो ।" ऐसा ही होगा, प्रभु ने कहा और अंतर्धान हो गए । सोनक के गांव वालों ने भी गलत काम करना छोड़ दिया । ●



श्रीराम और सीता जी

सौजन्य : परमार्थ निकेतन

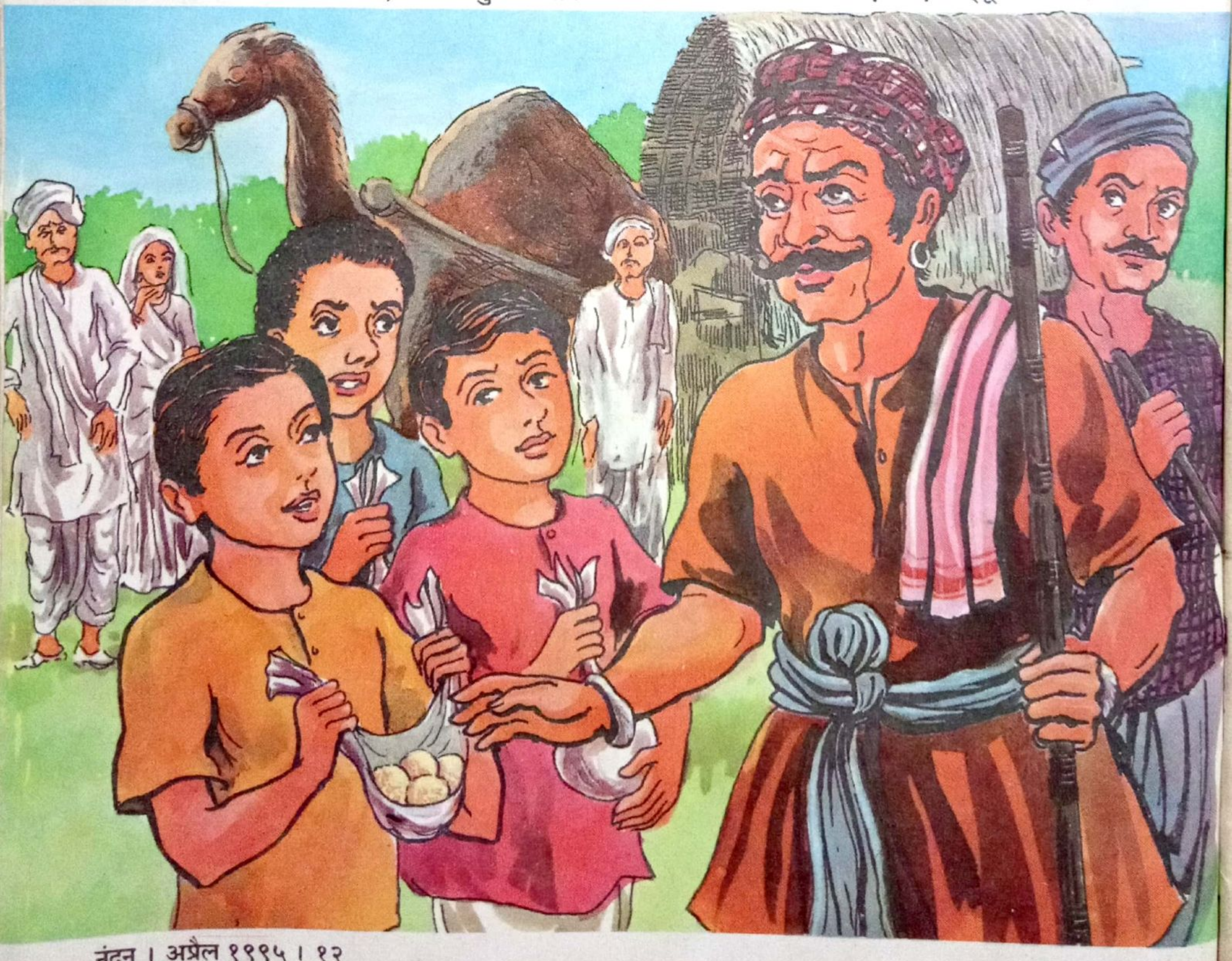
माई के लाड्डू

—जयप्रकाश भारती

ठुम्मक ठुम्मक...ठुम्मक ठुम्मक...ठुम्मक ठुम्मक। ऊंटगाड़ी दिल्ली की ओर चली जा रही थी। आधी रात का समय। ऊंटगाड़ी की सवारियां सोई हुई थीं। कोई ऊंघ रहा था, तो कोई सपना देख रहा था। अचानक गाड़ी रुकी। कुछ शोर-सा हुआ। अच्छा तो लुटेरों ने गाड़ी रुकवा ली थी। जगमल और उसके दो साथी मोटे-मोटे लट्ठ लिए हुए थे। उन्होंने गाड़ीवान के मुंह में कपड़ा ठूंसा, पांव बांधे और बस...। सभी से बोले—"जगमल का नाम सुना है ? किसी की जान नहीं लेता, पर जो कुछ जिसके पास है, निकाल दो वर्ना तालाब में डाल देंगे।"

लोगों को पता था कि ये जो कह रहे हैं, वैसा ही होता है। इस जंगल में उनकी गुहार भला कौन सुनेगा ? उन्होंने नकदी निकाल-निकालकर दे दी। कुल पचास रुपए चोरों के हाथ आ गए। पर तीन बालक अभी भी पड़े ऊंघ रहे थे। चोरों ने उन्हें झिंझोड़ा, कड़ककर कहा—"अबे, तुम्हारे पास क्या है मरदूदो ? घोड़े बेचकर सो रहे हो।"

किशोर उम्र के तीन बालक आंखें मलते उठ बैठे। उनकी समझ में आ गया कि लुटेरों ने ऊंटगाड़ी को रोका है। छोटे दो तो रोने लगे। पर लुटेरे कहां पसीजने वाले थे। तीनों बच्चों के पास छोटी-छोटी पोटलियां थीं। मां ने थोड़े-थोड़े लड्डू बांध दिए थे।



वे पोटलियां उनसे झटककर जगमल और उसके दो लुटेरे साथी अंधेरे में गायब हो गए । गाड़ीवान के बंधे पांव खोले गए । मुंह से कपड़ा हटाया गया । तब कहीं ऊंटगाड़ी आगे बढ़ सकी । फिर वही पहले की तरह ठुम्मक-ठुम्मक... ।

आधा-पौन घंटा बीता होगा । अपने साथियों के साथ जगमल फिर आ धमका । अरे दइया रे, आज किसका मुंह देखा था...पर नहीं, इस बार लुटेरों ने किसी को तंग नहीं किया, न किसी से कुछ मांग की । वे बोले—"अबे छोकरो, लो, अपने लड्डू लो । खाना मजे से । कभी किसी का माल तो हम लौटाते नहीं, पर तुम पर दया कर रहे हैं ।"

हुआ यों कि लुटेरों ने ऊंटगाड़ी लूट ली । वहां जंगल में एक पुराना मंदिर था । वहीं बैठकर वे बंटवारा करने लगे । उन्हीं बच्चों से छीनी पोटलियां खोलीं, लड्डू खाने लगे । तीन लुटेरों ने अलग-अलग पोटलियों से लड्डू निकाले। हर पोटली के एक लड्डू में से चांदी का एक-एक रुपया निकला । उन्होंने सोचा—'सारे लड्डुओं में रुपए होंगे ।' लेकिन यह उनका भ्रम था । सिर्फ तीन लड्डुओं में ही तीन रुपए मिले ।

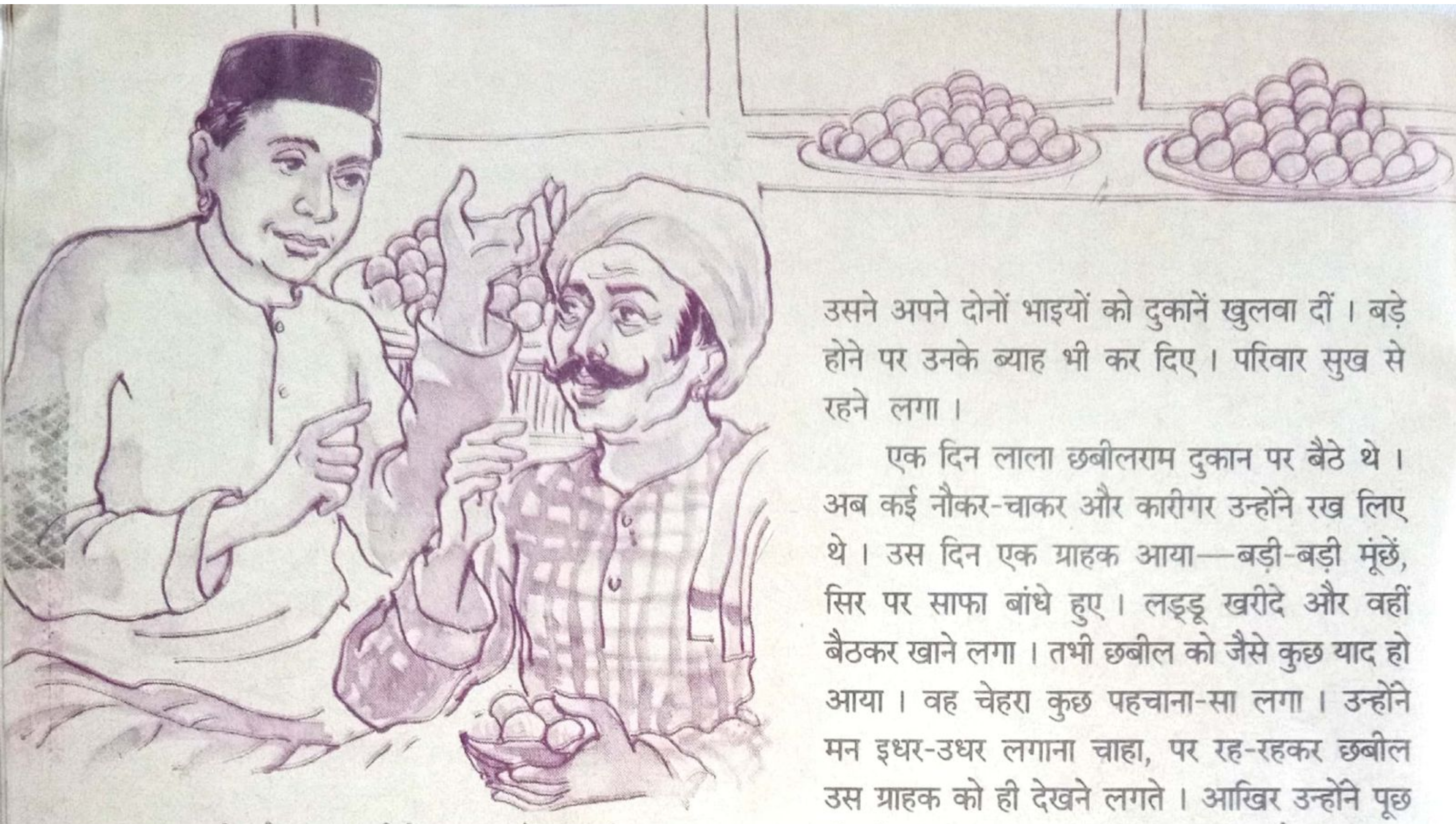
जगमल बोला—"अरे, इन छोकरों की माई ने चांदी का रुपया लाडू में रखा होगा कि दिल्ली पहुंचकर दुःख-सुख में काम आ जाए । यह तो अमानत के रुपए हुए । लौटाओ इन्हें, नहीं तो ये हम पर भारी पड़ेंगे ।" बस, लुटेरे उल्टे पांव लौट पड़े । उन्होंने ऊंटगाड़ी में आंसू बहाते बच्चों को उनकी पोटलियां लौटाईं और यह जा, वह जा... ।

पुराने जमाने में रेलें तो थीं नहीं । मेरठ से ऊंटगाड़ियां चलती थीं । शाम को चलतीं और रात भर चलते-चलते सुबह तक दिल्ली पहुंच जातीं । उस रात छबील और उसके दो छोटे भाई दिल्ली के लिए रवाना होने लगे । उनकी माई ने थोड़े से लड्डू बना दिए थे । उस बेचारी के पास जो जमा-पूंजी थी, उसमें से छबील को कुछ दे दिया । फिर बोली—"लो ये लड्डू, भूख लगे तो खा लेना । पर अपनी-अपनी पोटली के लड्डू खुद ही खाना । एक-दूसरे से बदलना मत ।" माई ने लड्डुओं की तीन पोटलियां बनाईं और हर पोटली के अंदर एक लड्डू में एक रुपया रख दिया । उन दिनों मंदा जमाना था। एक रुपए में भी काफी सामान आ जाता था । उसने सोचा—'क्या पता, दूसरी जगह काम-धंधा मिले या नहीं । थोड़ा सहारा हो जाएगा ।' बच्चों को इस बारे में कुछ भी पता न था ।

ऊंटगाड़ी दिल्ली आ लगी । छबील अपने भाइयों के साथ चांदनी चौक आया । पास ही गली में पुराना राम मंदिर था । वहीं नहाए-धोए । कुछ खाया-पीया । मंदिर में शीश नवाया और फिर चले काम की खोज में । उन्हें खास भटकना नहीं पड़ा । उसके दोनों भाई कपड़े की दुकानों में छोटे-मोटे काम पा गए । छबील फिर वहीं मंदिर के चबूतरे पर आ बैठा । मंदिर के पुजारी से उसने बातचीत की । एक छोटी कोठरी रहने को मिल गई ।

अचानक छबील को न जाने क्या सूझा । घर में मां को लड्डू बनाते वह देखा करता था । उसने कुछ लाई खरीदी, गुड़ खरीदा और लड्डू बनाए ।





उसने अपने दोनों भाइयों को दुकानें खुलवा दीं। बड़े होने पर उनके ब्याह भी कर दिए। परिवार सुख से रहने लगा।

एक दिन लाला छबीलराम दुकान पर बैठे थे। अब कई नौकर-चाकर और कारीगर उन्होंने रख लिए थे। उस दिन एक ग्राहक आया—बड़ी-बड़ी मूंछें, सिर पर साफा बांधे हुए। लड्डू खरीदे और वहीं बैठकर खाने लगा। तभी छबील को जैसे कुछ याद हो आया। वह चेहरा कुछ पहचाना-सा लगा। उन्होंने मन इधर-उधर लगाना चाहा, पर रह-रहकर छबील उस ग्राहक को ही देखने लगते। आखिर उन्होंने पूछ ही तो लिया—"कहां से आए हो चौधरी ?"

"अरे लाला, मैं बेगमाबाद का हूं, जगमल मेरा नाम है।"—ग्राहक बोला।

ऊंटगाड़ी की वह यात्रा और उस रात की घटना—सब कुछ जैसे छबील को याद हो आया। पर मूंछों वाले उस ग्राहक से कुछ नहीं कहा।

लड्डू खाने और पानी पीने के बाद जगमल पैसे देने लगा, तो छबील ने मना कर दिया। जगमल बोला—"लाला जी, मैं मुफ़्त में किसी का माल नहीं खाता। पैसे तो लेने ही पड़ेंगे।"

छबीलराम बोले—"भाई, तुम मुझे नहीं पहचानोगे, पर मैंने तुम्हें पहचान लिया। तुम उस रात ऊंटगाड़ी में चांदी के रुपए न लौटाते, तो मैं यह धंधा शुरू कैसे करता ?"

जगमल की आंखें गीली हो गईं। वह बोला—"लाला, मुझे शर्मिंदा न करो। मन पलट गया और उस दिन के बाद मैंने वह धंधा ही छोड़ दिया। लो, अपने पैसे लो।" उसने छबीलराम को पैसे दिए और कुछ सोचता हुआ-सा झटपट वहां से चला गया। लाला ने उसके दिए पैसे मंदिर में चढ़ा दिए।

रामजी को उन लाई के लड्डुओं का भोग लगाया। एक थाल में लड्डू सजाकर बेचने लगा। लड्डुओं की अच्छी बिक्री हुई। बस, वह यही धंधा करने लगा। चांदनी चौक में दूर-पास के व्यापारी तो बहुत आते ही थे। वे एक-दो पैसे में लड्डू खरीद लेते। खाते तो, खाते ही जाते।। छबीलराम कटरों-गलियों में आवाज लगाया करता—"माई के लाड़ू, लाई के लाड़ू।"

उसका काम चल निकला। तीन महीने में ही उसने काफी रकम जमा कर ली। शुरू में एक थाल भर लड्डू ही बिकते थे। अब तो तीन थाल भर लड्डू बिकने लगे। फिर तो उसने लकड़ी का ठेला खरीद लिया। इस पर लड्डू सजाकर बेचने लगा। हां, जब भी लड्डू की नई खेप तैयार करता, तो रामजी को भोग लगाना न भूलता।

तीन साल बीतते-बीतते छबील हलवाई बन गया। उसकी छोटी-सी दुकान भी एक कटरे में हो गई। अब वह लाई के अलावा कई तरह के और लड्डू भी बनाने लगा। बिक्री दिनोदिन बढ़ती ही गई।

छबील मेरठ से अपनी मां को दिल्ली ले आया।



नौरंगा हिरन

—उदय नारायण तिवारी

किसी समय एक मनुष्य था। वह एक बार नदी में नहाने गया। नहाते-नहाते वह गहराई में चला गया और डूबने लगा। 'बचाओ बचाओ' कहता हुआ, वह चिल्लाने लगा। आसपास कोई आदमी न था जो उसकी पुकार सुनता और उसे बचाने के लिए नदी में कूद पड़ता।

इतने में जाने कहां से नौ रंगों वाला एक हिरन नदी के किनारे पानी पीने आ निकला। उसे डूबते हुए आदमी की चीख-पुकार सुनाई दी। हिरन पानी पीना भूल गया और अपना जीवन खतरे में डालकर नदी में कूद पड़ा। हिरन ने डूबते हुए आदमी को बचा लिया और नदी के बाहर सहारा देकर पहुंचा दिया।

आदमी ने अपने प्राण बचाने के लिए उसका आभार प्रकट किया। झुककर नौ रंगों वाले हिरन को प्रणाम किया और बोला—''हे प्राण-रक्षक! मैं जीवन भर तुम्हारी गुलामी करने के लिए तैयार हूं।''

हिरन इसके लिए राजी नहीं हुआ। उसने आदमी से कहा—''मुझे गुलाम नहीं चाहिए।'' कुछ देर सोचने के बाद हिरन ने आदमी से फिर कहा—''हां, तुम मेरे लिए एक काम कर सकते हो। वह यह कि तुम किसी को भी मेरा पता नहीं बताओगे।''

आदमी ने शपथ खाई और कहा—''मैं तुम्हारा अता-पता किसी को नहीं बताऊंगा।''

इसी बीच उस देश की रानी को एक सपना आया। रानी ने सपने में एक ऐसा हिरन देखा जो नौ रंगों का था और जिसके सींग चांदी के थे।

सुबह होते ही रानी ने राजा से अपना सपना कह सुनाया। साथ ही यह मांग भी की कि राजा जल्दी से जल्दी उस अनोखे नौ रंगों वाले हिरन को पकड़ मंगाए। रानी ने राजा से कहा—''मैं उस सुंदर हिरन के चमड़े से अपने लिए ऐसी पोशाक बनवाना चाहती हूं जो किसी भी दूसरी रानी के पास न हो।''

राजा रानी की बात भला कैसे टाल सकता था! उसने अपने राज में मुनादी करवा दी—'जो आदमी चांदी के सींग वाले नौरंगे हिरन को पकड़कर दरबार में पेश करेगा, उसे आधा राज और बहुत सा धन इनाम

में दिया जाएगा।'

राजा की ओर से की गई इस घोषणा को सुनकर उस आदमी के मुंह में पानी आ गया, जिसकी जान उस नौ रंगों वाले हिरन ने बचाई थी। हालांकि उसने शपथ खाई थी कि वह उस हिरन का अता-पता गुप्त रखेगा।

आदमी बगैर कुछ सोचे-समझे, स्वार्थ में अंधा होकर सीधे राजा के दरबार में पहुंचा। राजा को अपने प्राण-रक्षक हिरन का पता बता दिया। यही नहीं, उसने राजा को उस हिरन के ठिकाने तक पहुंचा दिया। हिरन का ठिकाना एक पहाड़ी की गुफा में था। हिरन अपनी गुफा में आराम से सोया हुआ था।

इसी बीच हिरन के असली मित्र कौए ने आसपास कुछ हलचल सुनी। उसके कान खड़े हो गए। उसने पहाड़ी की चोटी पर उड़कर देखा कि राजा अपनी फौज के साथ उसके मित्र की गुफा की ओर बढ़ रहा है। कौए को दाल में काला दिखाई पड़ा।

कौआ जोर-जोर से कांव-कांव करने लगा, जिसकी वजह से हिरन की नींद टूट गई। फिर वह देखता क्या है कि चारों ओर से राजा की फौज से घिरा हुआ है। उसके लिए जान बचाकर भागने का कोई रास्ता नहीं था।

हिरन ने यह भी देखा कि उसने नदी में डूबते हुए जिस आदमी की जान बचाई थी, वह फौज के आगे-आगे राजा को रास्ता बता रहा है। हिरन ने राजा के सामने हाथ जोड़कर उसे सारी कहानी बता दी कि कैसे उसने आदमी की जान बचाई और बदले में उस आदमी ने घोर विश्वासघात किया।

हिरन ने आदमी की प्राण-रक्षा किस तरह की थी, यह सुनकर राजा की आंखें गीली हो गईं। राजा ने नौ रंगों वाले हिरन को प्राण-दान दिया और कहा कि वह अपनी गुफा में लौट जाए। राजा ने अपने राज में ढिंढोरा पिटवा दिया कि नौ रंगों वाले हिरन का कोई शिकार नहीं कर सकता। उस स्वार्थी आदमी को भी कड़ी सजा दी।

(उन हुआंग की गुफा में चित्रित एक कथा)

मेरा बेटा

—डा. भगवतीशरण मिश्र

महर्षि वेदव्यास चिंतित थे। कारण यह था, दुर्योधन ने पांडवों को छल से जुए में हराकर, उन्हें वन में भेज दिया था। लेकिन दुर्योधन इतने पर भी चुप नहीं बैठा। वह पांडवों का वध करने की योजना बना रहा था।

महर्षि वेदव्यास से दुर्योधन की ऐसी कुटिलता देखी न गई। एक दिन वह धृतराष्ट्र से मिलने दरबार में गए। धृतराष्ट्र ने उन्हें प्रणाम किया। उन्हें आदर से आसन पर बैठाया।

"हे महर्षि,आपने यहां आने का कष्ट कैसे किया ?"—धृतराष्ट्र ने पूछा।

"मैं आपसे अकेले में कुछ बातें करना चाहता हूं।"—महर्षि वेदव्यास ने कहा।

यह सुन, धृतराष्ट्र ने दरबारियों को वहां से चले जाने को कह दिया।

"अब कहिए, आप क्या कहना चाहते हैं ?"—धृतराष्ट्र ने कहा।

"राजन ! आप अपने बेटों के मोह में फंसते चले जा रहे हैं। दुर्योधन ने पांडवों को वन में भेजकर



अच्छा नहीं किया। आपने दुर्योधन को ऐसा करने से मना भी नहीं किया। यह आपको शोभा नहीं देता।''—महर्षि वेदव्यास बोले।

''महर्षि ! सभा में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि लोग भी थे। उनमें से किसी ने दुर्योधन को ऐसा करने से नहीं रोका। फिर मैं तो वैसे भी अपनी आंखों से लाचार हूं।''—धृतराष्ट्र ने कहा।

महर्षि वेदव्यास ने कहा—''अच्छा, जो हो गया, उसे छोड़ दीजिए। पर आप दुर्योधन को अब समझा दीजिए। सुना है, वह पांडवों के वध की योजना बना रहा है। ऐसे में आपको पांडवों की सहायता करनी चाहिए। पांडवों के पिता नहीं हैं। वे मुसीबत में हैं। अब आप ही उनके पिता हैं। फिर भी आप उनकी सहायता नहीं करते। वैसे भी माता-पिता दुर्बल बेटों पर विशेष ध्यान देते हैं।''

यह सुन, धृतराष्ट्र ने पूछा—''वह कैसे ?''



महर्षि वेदव्यास बोले—''इस बारे में मैं तुम्हें एक पुरानी कथा सुनाता हूं।''—कहते हुए कथा शुरू कर दी—

एक बार गोमाता सुरभि इंद्र के दरबार में पहुंची। वह फूट-फूटकर रोने लगी। सुरभि को रोती देख, इंद्र ने पूछा—'तुम क्यों रो रही हो ? बताओ, क्या कष्ट है ?'

'बहुत कष्ट है।'—सुरभि बोली।

'बताओ, क्या बात है ?'—इंद्र बोले।

'आप पृथ्वी लोक देखिए। वहां एक किसान ने मेरे कमजोर बेटे बैल को एक मजबूत बैल के साथ हल में जोत दिया है। वह बैल खेत जोतने में पीछे रह जाता है। किसान उसकी पूंछ मरोड़ता है। उस पर चाबुक बरसाता है। किसान ने उसे मार-मारकर अधमरा कर दिया है।'—यह कहते हुए गोमाता ने इंद्र को बैल दिखा दिया।

यह दृश्य देख, इंद्र का हृदय पिघल गया। वह बोले—'सुरभि, तुम्हारे और भी कई बेटे हैं। वे सभी ऐसे ही मारे-पीटे जाते हैं। फिर तुम्हें इसी बेटे से इतना लगाव क्यों है ?'

सुरभि ने कहा—'हां, मेरे और भी कई बेटे हैं। पर इस बैल को छोड़, वे सभी सबल हैं। माता-पिता अपने सभी बेटों से प्रेम करते हैं। लेकिन जो बेटा दुर्बल होता है, माता-पिता उसे सबसे अधिक प्रेम करते हैं।'

'सुरभि, तुम ठीक कहती हो। मैं अभी तुम्हारे इस कमजोर बेटे के कष्ट को दूर करता हूं।'—कहते हुए इंद्र ने किसान के खेत को पानी से भर दिया। खूब वर्षा हुई। बौछारें तेज थीं। किसान ने बैलों को हल से अलग कर दिया। किसान घर को चला, तो बैल भी उसके पीछे हो लिए।

महर्षि वेदव्यास ने कथा पूरी की। बोले—''राजन ! इस तरह गोमाता सुरभि ने अपने कमजोर बेटे बैल को कष्ट से बचाया। आप भी पांडवों की रक्षा कीजिए।'' कहते हुए वह मौन हो गए। पर धृतराष्ट्र कुछ न कह सके। ●

लौट जाओ

—हरि वल्लभ बोहरा 'हरि'



कई साल बीत गए, जैसलमेर में महारावल जैसल का शासन था। महारावल स्वभाव से ही दयालु और प्रजापालक थे। उनका सामंत हरदेव भी चतुर और स्वामि-भक्त था। हरदेव के जिम्मे ही समस्त राजकोष की देखभाल का काम था।

जैसलमेर राज्य में तो वैसे ही बरसात कम होती थी। साथ ही वहां की बहुत सारी धरती पर रेत के टीले ही टीले फैले हुए थे। कम उपज होने से राजकोष में लगान भी कम ही आता था। मगर जितना भी आता, सामंत हरदेव उसी से राजकाज चलाने का काम बखूबी सम्पन्न कर लेता था। हालांकि यह काम बहुत कठिन और जिम्मेदारी का था।

एक बार पूरे जैसलमेर राज्य में पांच साल तक एक बूंद भी पानी नहीं बरसा। प्रजा में त्राहि-त्राहि मच गई। खेतों में उपज कहां से होती! वहां तो लोगों को पीने का पानी तक आसानी से उपलब्ध नहीं हो रहा था। जब खेतों में उपज ही नहीं हो रही थी, तो भला काहला गांव के किसान सालाना लगान कहां से दे पाते?

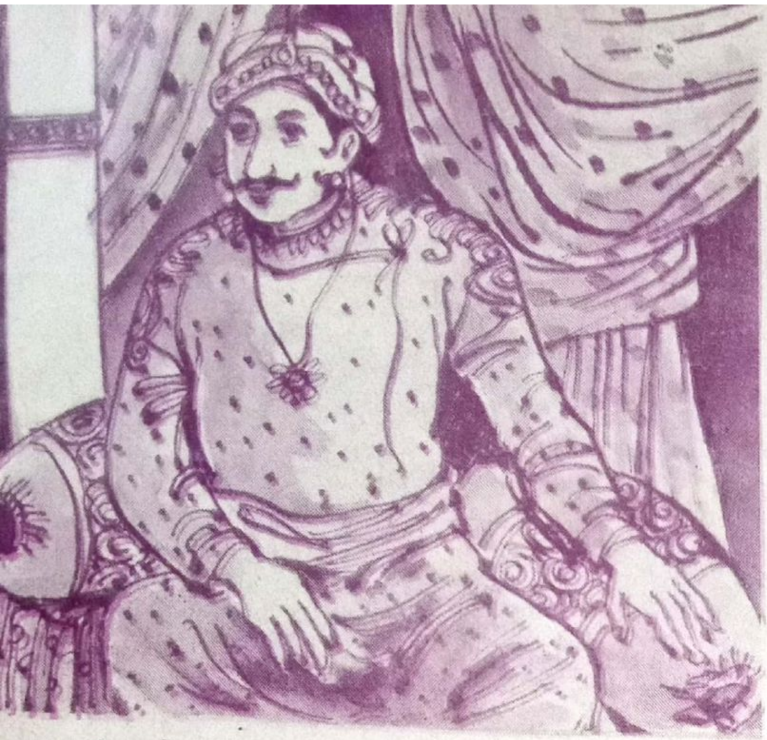
अब तो मुश्किल हो गई। कर वसूल न किया जाए, तो राजकाज कैसे चलेगा? यह सोचकर सामंत हरदेव ने सिपाहियों को आदेश दिया— 'काहला गांव के निवासियों के घरों में जो कुछ भी मिले, जाकर जब्त कर लो।' सिपाहियों ने दुखी मन से सामंत की आज्ञा का पालन किया। काहला गांव के लगभग सभी घरों के बरतन-भांडे, कपड़े-लत्ते, गाय-बकरियां, भेड़ें, ऊंट—सब कुछ लाकर राजमहल के सामने वाले मैदान में इकट्ठे कर लिए गए। रोते-कलपते, आंसू बहाते गांव वासी महारावल जैसल की ड्योढ़ी पर उपस्थित हुए, फरियाद की।

महारावल उस समय अपने खास सलाहकारों के साथ राजमहल की छत पर खड़े किसी गम्भीर विषय पर विचार-विमर्श कर रहे थे। नीचे आंगन में राजकुमार जसहड़ खेल रहा था। चूंकि उस समय महारावल चर्चा में लीन थे, इसलिए काहला गांव के निवासी महारावल से मुलाकात न कर सके। द्वारपालों ने उन्हें अंदर घुसने नहीं दिया।

राजकुमार जसहड़ ने उन दुखी किसानों की सारी बातें सुनी थीं। किसान इतने परेशान थे कि पास में खेलते राजकुमार की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। राजकुमार अपने राज्य की दुखी प्रजा का दर्द जानकर दुखी हो गया।

उसने सोचा, यदि प्रजा से जबरन वसूली गई उनकी सम्पत्ति और ढोर-डंगर उन्हें लौटा दिए जाएं तथा जब तक उपज न हो, तब तक उनसे कोई कर न वसूला जाए, तो इनका दुःख दूर हो सकता है। मगर, यह हो कैसे? राजकुमार दिन-रात इसी प्रश्न में उलझा रहता।

उन्हीं दिनों राजकुमार राजगुरु ईसाल से राजकाज की शिक्षा-दीक्षा ले रहा था। राजगुरु ईसाल ने एक दिन दरबार को सूचित किया कि राजकुमार जसहड़ घुड़सवारी की कला में पारंगत हो चुके हैं। उन दिनों ऐसा चलन था कि ज्यों ही राजकुमार किसी खास कला में प्रवीण होता, आम जनता और सभासदों के समक्ष उसका प्रदर्शन किया जाता। जब देखने वाले संतुष्ट हो जाते, तो मान लिया जाता था कि राजकुमार फलां विषय की शिक्षा पूर्ण कर चुका है। राजगुरु का संदेश दरबार में पहुंचा, तब शुभ मुहूर्त देखकर राजमहल के



प्रांगण में ही घुड़सवारी के प्रदर्शन का आयोजन किया गया। जलसा प्रारंभ होने से पूर्व महारावल जैसल ने कुमार जसहड़ को आशीर्वाद देते हुए कहा—"पुत्र ! यदि तुम आज के प्रदर्शन को सफलता पूर्वक कर सके, तो मैं तुम्हें मुंहमांगा पुरस्कार दूंगा।"

प्रदर्शन प्रारंभ हुआ। राजकुमार के साथ छह अन्य तरुण भी थे जो सभासदों, ठाकुरों और ठिकानेदारों के पुत्र थे। आशा के अनुरूप राजकुमार जसहड़ ने घुड़सवारी की बेहतरीन कला का प्रदर्शन किया। उसकी घुड़सवारी उच्च कोटि की थी। हैरतअंगेज करतब देखकर दर्शकों के मुंह खुले के खुले रह गए। राजमहल का प्रांगण राजकुमार, राजगुरु और महारावल के जय-जयकार से गूंज उठा।

महारावल ने प्रसन्न होकर कुमार की पीठ थपथपाई। बोले—"बेटा, तुम्हारी लगन और हिम्मत देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूं। बोलो, क्या इनाम चाहते हो ?" जसहड़ सिर नवाकर विनम्रता पूर्वक बोला—"पिता जी, मुझे थोड़ा सोचने का समय दीजिए। दिन ढलने तक मैं अपनी मांग लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हो सकूंगा।" इतना कह, कुमार महारावल के पैर छूकर, राजगुरु ईसाल का आशीर्वाद लेने आश्रम की ओर बढ़ गया।

जब सांझ ढले वह वापस राजमहल लौट रहा था, उसने देखा कि आज फिर किसी दूसरे गांव के लोग रोते-कलपते राजमहल में फरियाद करने जा रहे थे। उन्हें देखते ही राजकुमार को अपना संकल्प याद आ गया। वह आगे बढ़ा और उन लोगों के मुखिया से सारा हाल मालूम किया। उनकी परेशानियों के बारे में जानकर राजकुमार का दिल पसीज उठा। उसने कहा—"तुम लोगों को ज्यादा दुखी होने की आवश्यकता नहीं। जाओ, अपने-अपने घरों को लौट जाओ। कल शाम का सूरज ढलने से पूर्व ही तुम्हारी सारी धन-सम्पति तुम्हारे दरवाजों तक पंहुच जाएगी।" गांव वाले कुमार का आश्वासन पाकर अपने गांव लौट गए। इधर कुमार सीधा महारावल की सेवा में उपस्थित हुआ। कुमार को देखते ही महारावल को सवेरे कही बातें याद आ गईं। उन्होंने कुमार से पूछा—"क्यों कुमार, कुछ निर्णय किया ?"

जवाब में कुमार ने दुखी किसानों की जब्त की हुई सामग्री वापस लौटा देने की प्रार्थना की। महारावल ने गांव वालों की दुःख भरी दास्तान कुमार की जुबानी सुनी। सुनकर उन्हें कुमार की समझदारी पर बहुत गर्व हुआ। मारे खुशी के उनकी आंखों से आंसू छलक उठे। उन्होंने कुमार को छाती से लगाते हुए कहा—"कुमार, कुछ तो अपने लिए भी मांगो।"

कुमार विनम्रता पूर्वक शीश झुकाकर बोला—"पिता जी, इन ग्रामीणों की खुशी में ही मेरी खुशी है। यदि आप देना ही चाहते हैं, तो यह आश्वासन दीजिए कि अब भविष्य में यदि किसी साल बारिश की वजह से फसल न हो, तो उस साल लगान न वसूला जाए। इससे प्रजा को बड़ी खुशी होगी। प्रजा की खुशी से बढ़ कर मेरे लिए और कोई पुरस्कार नहीं है।"

महारावल ने ऐसा ही किया। गांव वालों की जब्त की हुई सारी वस्तुएं, माल-मवेशी उनके घर-घर जाकर सही-सलामत लौटा दिए। साथ ही भविष्य में फसल न होने की दशा में लगान न वसूल करने की मुनादी भी करवाई गई।

आज भी बड़े-बूढ़े खेत में हल जोतते समय बड़े सम्मान से महारावल जैसल और कुमार जसहड़ को याद करते हैं, उनके गीत गाते हैं। ●

टूट गई मूरत

—रमेशचन्द्र सिंह

एक राजा था। उसे एक ऐसा राजमहल बनवाने की इच्छा थी, जैसा किसी राज्य में न हो। उसने अपने राज्य के सभी शिल्पियों को बुलवाया और उन्हें राजमहल बनाने का आदेश दिया।

दिन-रात के श्रम से चार कुशल कारीगरों की देखरेख में दस वर्षों में राजमहल का निर्माण हुआ। राजमहल ऐसा था, जैसा किसी राज्य में नहीं था।

अब राजा को चिंता हुई कि उसके राजमहल जैसा कोई अन्य राजमहल न बन जाए। चारों कारीगरों को तहखाने में कैद कर दिया।

राजा के इस निरंकुश व्यवहार से राज्य में काफी असंतोष था। राज्य के साहूकार, मंत्री और दरबारी अप्रसन्न थे। राज्य में किसी भवन का निर्माण नहीं हो रहा था। सारे भवन निर्माण कारीगर राज्य छोड़कर भाग गए।

उसी राज्य में केतु नामक एक युवक रहता था। बचपन से ही कलात्मक मूर्तियां बनाने की ओर उसका रुझान था। किंतु राजा के भय से वह चोरी-छिपे ही अपनी कला की साधना करता था।

केतु रात-दिन इसी चिंता में रहता था कि किस तरह राजा के विचारों में परिवर्तन किया जाय। अंत में उसे एक उपाय सूझा। उसने राजलक्ष्मी की एक सुंदर मूर्ति बनाई। फिर एक दिन वह राज दरबार के सामने मूर्ति लेकर बैठ गया।

राजा के सेवकों ने उसे राजमिस्त्री जानकर पकड़ लिया। फिर उसे मूर्ति के साथ राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने पूछा—''क्या तुम राजमिस्त्री हो?''

''हां, महाराज।''—केतु ने विनयपूर्वक कहा—''साथ ही मैं मूर्तिकार भी हूं।''

—''राजलक्ष्मी की मूर्ति क्यों बनाई है?''

''यह साधारण मूर्ति नहीं है महाराज।''—केतु बोला—''यह राजलक्ष्मी जिस राज्य में रहती है, वह धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है। किंतु किसी कारणवश यह नष्ट हो जाए, तो राज्य की सम्पदा नष्ट हो जाती है।''

''ठीक है।''—राजा ने प्रधान मंत्री से कहा—''मूर्ति को राज-दरबार में स्थापित किया जाए और इसके हाथ काट दिए जाएं।''

यह सुनते ही केतु ने मूर्ति को फर्श पर छोड़ दिया। मूर्ति चूर-चूर होकर बिखर गई।

''मूर्ख, तूने यह क्या किया!''—प्रधान मंत्री बोला।'' फिर उसने राजा की ओर देखकर कहा—''महाराज, इसे मृत्युदंड दिया जाए।''

केतु ने नम्रतापूर्वक कहा—''महाराज, हाथ काटे जाने के भय से मेरा हाथ कांप गया और मूर्ति गिर गई।'' फिर वह धीरे से बोला—''किंतु महाराज, यदि आज्ञा हो, तो इस मूर्ति को मैं फिर से बना सकता हूं।''

राजा ने कहा—''ठीक है, पहले तुम मूर्ति बनाओ। इसके बाद तुम्हारे दंड के बारे में विचार होगा।''

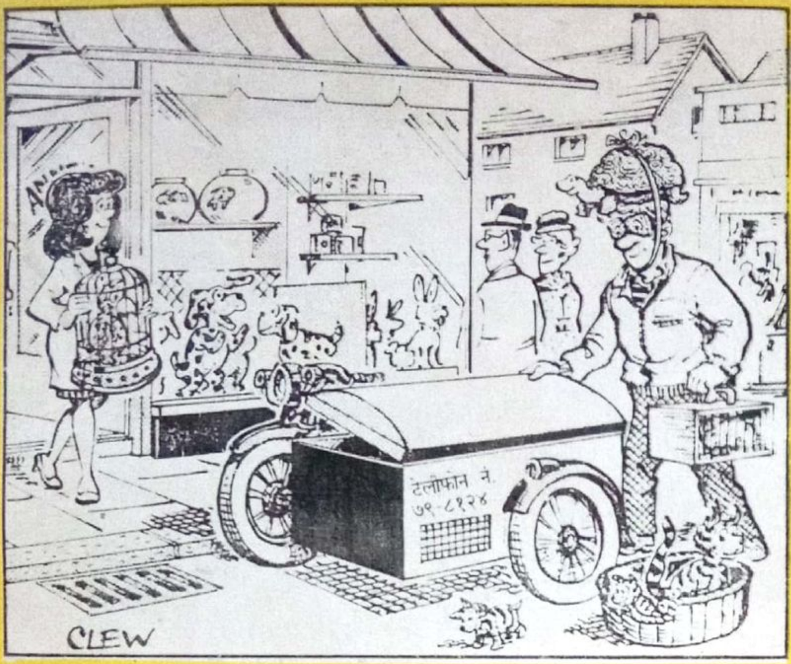
मूर्ति बनाने के बाद केतु को फिर राजा के सामने उपस्थित किया गया। मूर्ति हूबहू पहले जैसी थी।

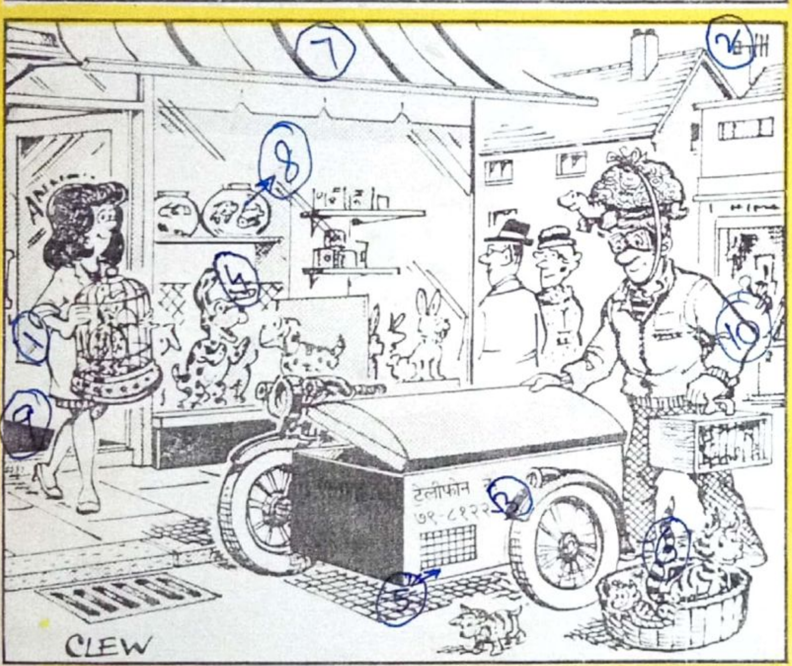
राजा ने कहा—''इसके हाथ काटकर छोड़ दिया जाए।''

केतु ने कहा—''महाराज, यदि मूर्ति फिर टूट गई, तो इसे कौन बनाएगा?''

राजा ने सोचा, तो केतु की बात सही लगी। केतु ने आगे कहा—''महाराज, इसी तरह यदि किसी विपदा के कारण राजमहल नष्ट हो गया, तो इसे कौन बनाएगा? राज्य में तो कोई राजमिस्त्री है नहीं।''

अब राजा की आंख खुली। उसने कहा—''तुम ठीक कहते हो। मुझसे भूल हुई है। कलाकार के हाथ नहीं काटे जाएंगे, बल्कि उन्हें अच्छे काम के लिए प्रोत्साहन दिया जाएगा।''—केतु ने तहखाने में पड़े कारीगरों को छोड़ने की प्रार्थना की। राजा ने मान लिया। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय : **१५ मिनट।**

कहानी लिखो : १३७

☐ सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० अप्रैल '९५ तक कहानी लिखो, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : जून '९५ अंक

चित्र-पहेली : १३७

☐ 'परी देश की सैर' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६"×९" से बड़ा न हो। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता लिखिए। उसे १० अप्रैल '९५ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र नंदन में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : जुलाई '९५ अंक





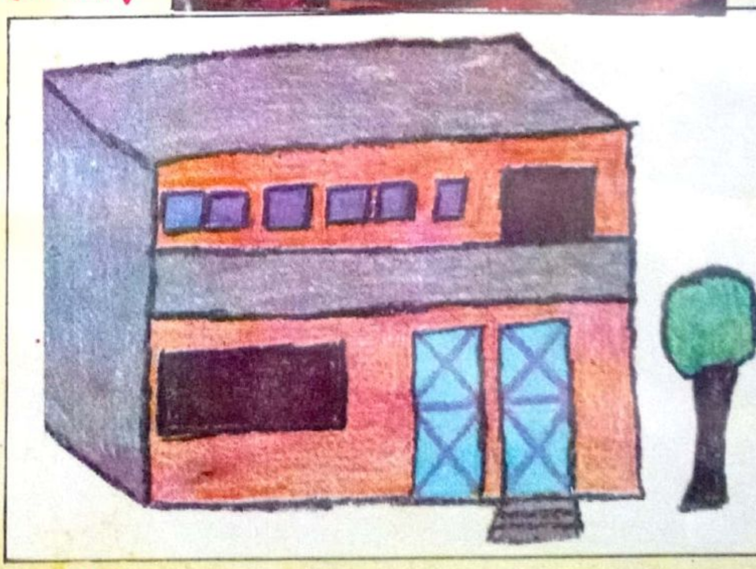
आरती ^

बधाई ! नन्हे कलाकारो

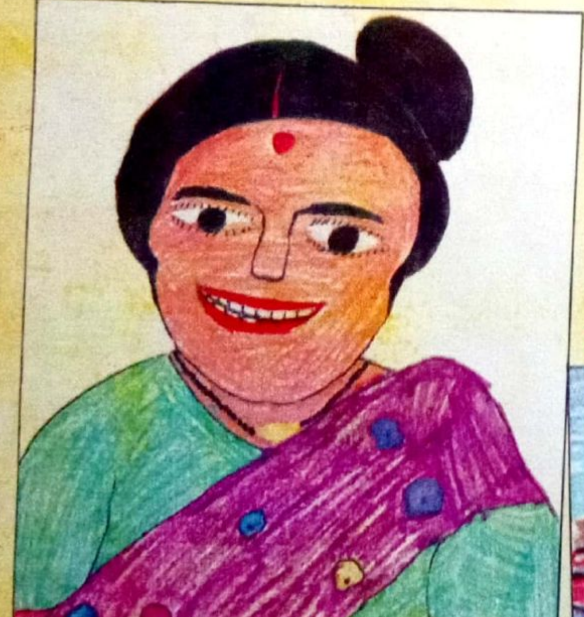
वैशाली सिन्हा >



हर्ष मोदी V



नितिन रावत V



प्रशांत वर्मा V





यवनिका ^



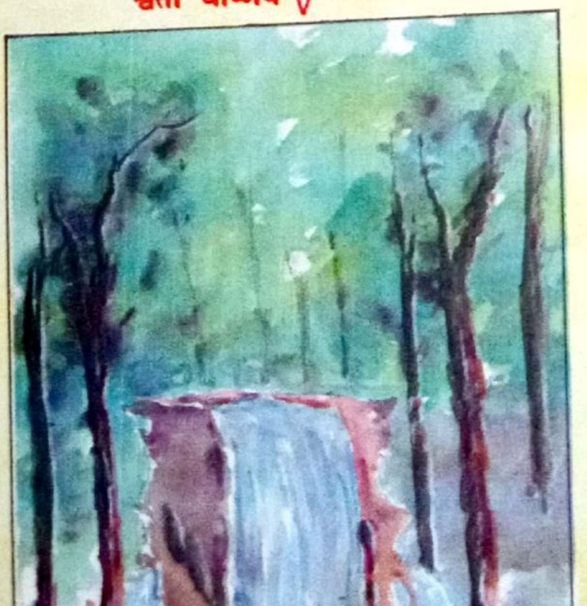
शिल्पा पनेसर >

राजधानी में नंदन चित्रकला प्रतियोगिताओं की काफी धूम रही। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार पाने वाली पेंटिंग्स हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

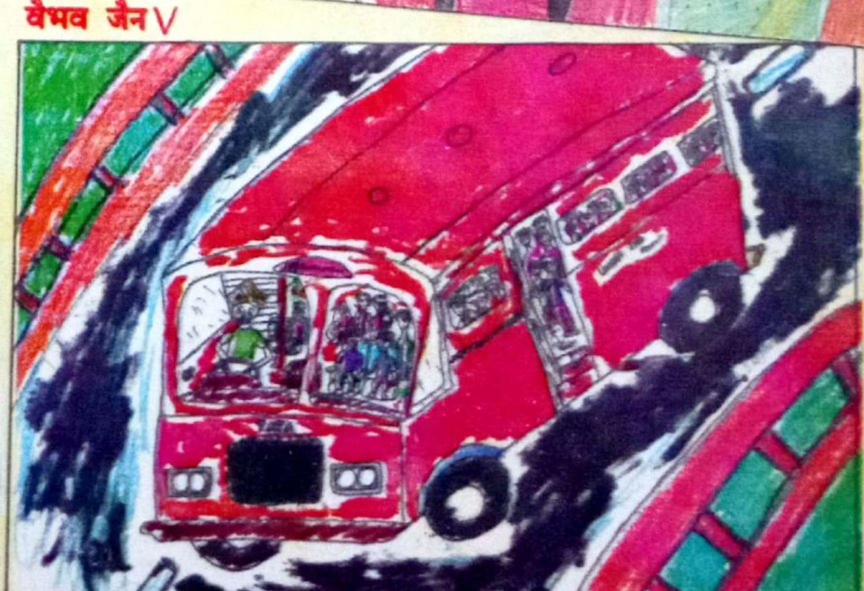
वत्सला काकरू >



श्वेता वार्ष्णेय V



वैभव जैन V



विश्व की महान कृतियां : कन्नड़

बज उठी तलवार

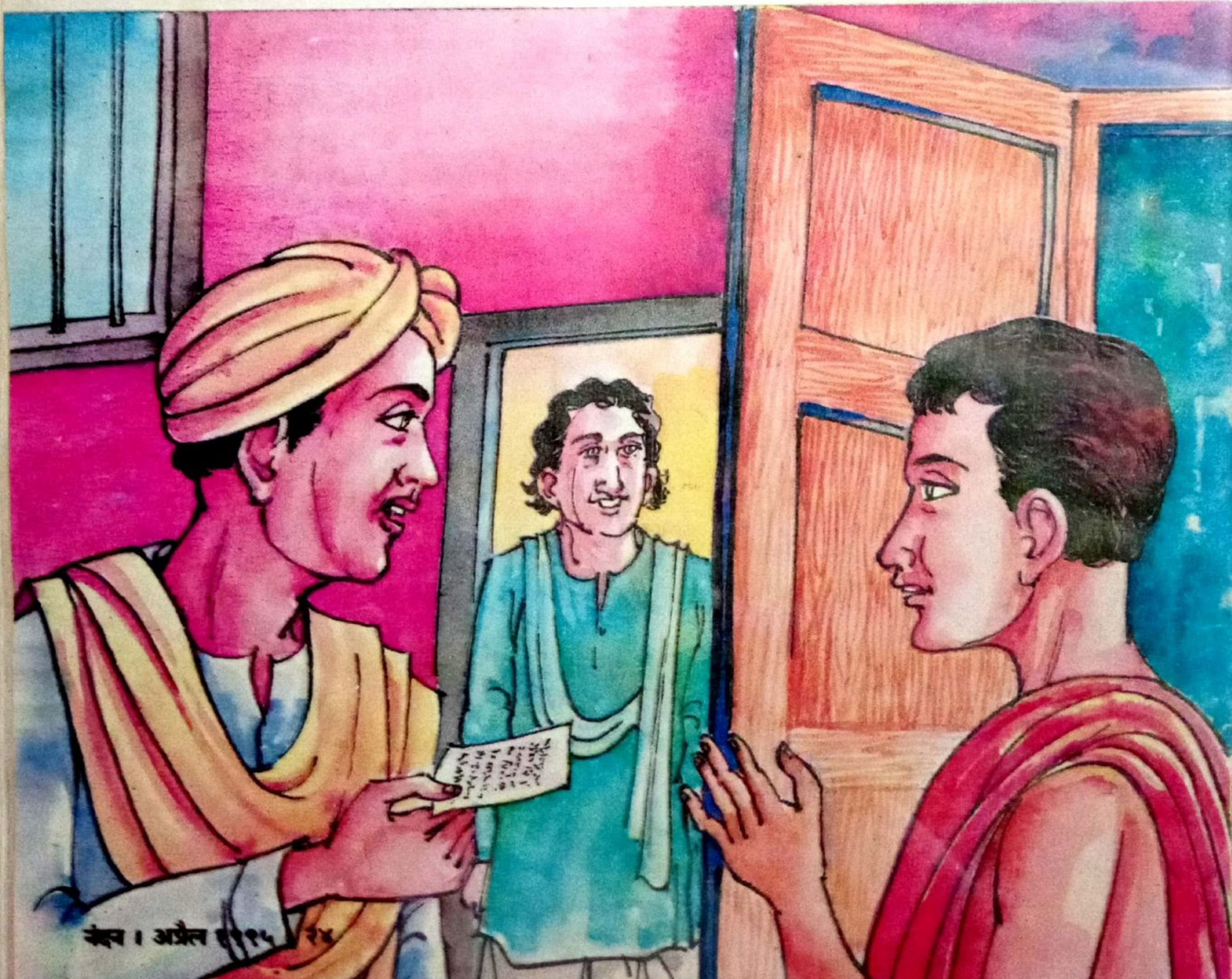
—अ. न. कृष्णराव

एक थे ब्राह्मण सदाशिव शास्त्री। वीणा बजाने में कुशल थे। राजनीति के दांव-पेचों में उनकी अच्छी गति थी। एक दिन सदाशिव कित्तूर राज्य की ओर चल पड़े। रास्ते में एक नगर पड़ा बैलहोंगल। वहां के मुखिया थे चिदम्बरम दीक्षित। वह भले और नेक थे। उनकी मुलाकात सदाशिव से हो गई। दोनों एक-दूसरे से मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। चिदम्बरम उन्हें अपने घर ले गए। सदाशिव ने नहा-धोकर खाना खाया, फिर सो गए।

शाम हुई, सदाशिव जागे। चिदम्बरम ने कहा—"चलिए, नगर के बाहर घूमने चलते हैं।" यह सुन, सदाशिव उनके साथ चल पड़े। कुछ देर बाद वे एक बगीचे में पहुंचे। वहां एक बहुत बड़ा अखाड़ा था। फिर वह पहलवानों को बुला लाए। उनमें एक था बालण्णा। दूसरे का नाम था गजवीर।

पहलवानों का गुरु था नागरकट्टी। उसका इशारा पाते ही दोनों पहलवान भिड़ गए। लेकिन वे अंत तक बराबरी पर ही रहे।

तभी नागरकट्टी ने चिदम्बरम से कुश्ती लड़ने के लिए कहा। चिदम्बरम हंसकर रह गए। नागरकट्टी के बार-बार कहने पर चिदम्बरम को ताव आ गया। फिर क्या था, दोनों अधेड़ पहलवान मैदान में जा डटे।



कुश्ती शुरू हो गई।

सदाशिव को लगा, चिदम्बरम हार जाएंगे, पर तभी चिदम्बरम ने नागरकट्टी को पटखनी दे दी।

कुश्ती खत्म होने के बाद वे घर पहुंचे। चिदम्बरम बोले—"शास्त्री जी, मैं आपका वीणा वादन सुनना चाहता हूं।" वे दोनों मंदिर में पहुंचे। वहां काफी लोग इकट्ठा थे। सदाशिव ने वीणा उठाई और लगे बजाने। लोग भाव-विभोर होकर झूमने लगे।

चिदम्बरम ने कहा—"शास्त्री जी, आप जैसे गुणी कित्तूर के महाराज मल्लसर्ज के दरबार में रहें, तो दरबार की शोभा में चार चांद लग जाएंगे। मैं आपके वहां जाने की व्यवस्था कर देता हूं।" सदाशिव इस बात को टाल न सके।

अगले दिन चिदम्बरम ने रायण्णा को बुलाया। कहा—"रायण्णा, तुम सदाशिव जी को दरबार में ले जाओ। मेरी तरफ से महाराज को यह चिट्ठी दे देना।" कहते हुए उन्होंने चिट्ठी उसे थमा दी।

रायण्णा बैलगाड़ी लेने चला गया। चिदम्बरम ने सदाशिव से कहा—"आपको दरबार में कोई परेशानी नहीं होगी। उनके दो नायब दीवान हैं—मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराय। दोनों ही अंग्रेजों से गुपचुप मिलते रहते हैं। वे महाराज का वध कर राज्य हड़पना चाहते हैं।"

चिदम्बरम और सदाशिव गले मिले। चिदम्बरम ने सदाशिव को बैलगाड़ी में बैठाया।

कुछ घंटे बाद बैलगाड़ी कित्तूर के महल के दरवाजे पर खड़ी थी। रायण्णा सदाशिव को राजा के पास ले गया। उसने राजा को प्रणाम किया। फिर चिदम्बरम का पत्र राजा को दे दिया।

राजा मल्लसर्ज ने पत्र पढ़ा, तो सदाशिव को गले लगा लिया। वह बोले—"आपका यहां रहना मेरे लिए निश्चय ही लाभकारी होगा।" तभी गुरु सिद्दप्पा आ गए। वह प्रधान दीवान थे। राजा उन पर बहुत विश्वास करते थे।

एक दिन राजा मल्लसर्ज के कहने पर सदाशिव



ने वीणा बजाई। दरबार में रानी चेन्नम्मा भी बैठी थीं। वीणा वादन सुन सब झूम उठे। वीणा थमी तो राजा ने गले से सोने का हार उतारा और सदाशिव के गले में डाल दिया।

रानी बोलीं—"शास्त्री जी, आप मुझे भी वीणा बजाना सिखा दें। वैसे मैं थोड़ा-बहुत बजा भी लेती हूं। जब महाराज उदास हो जाते हैं, तो मैं वीणा बजाकर उनका मन बहलाती हूं।" शास्त्री जी ने हां कर दी।

एक दिन दरबार लगा था, तभी एक गुप्तचर आया। उसने राजा से कहा—"महाराज, पेशवा बाजीराव ने हमारी सीमाओं पर पड़ाव डाल दिया है। वह कभी भी हम पर हमला कर सकता है।"

यह सुन गुरु सिद्दप्पा ने कहा—"राजन! हम अभी युद्ध करने की स्थिति में नहीं हैं। अच्छा यही है कि हम पेशवा से संधि कर लें।" पर मल्लप्पा ने इसका विरोध किया।

राजा अगले दिन पेशवा से मिलने चल पड़े। वह पेशवा से मिले, संधि की बात की। लेकिन पेशवा ने उन्हें कैद कर लिया। कहा—"आप एक लाख पचहत्तर हजार रुपए जुर्माना दें, तो मैं आपको रिहा कर सकता हूं।" राजा मल्लसर्ज ने मन मारकर शर्त स्वीकार कर ली। लेकिन वह इस सदमे को सहन न

कर सके। एक दिन उनका निधन हो गया।

कुछ दिन बाद रानी चेन्नम्मा ने बड़ी रानी रुद्रव्वा के बेटे शिवलिंग रुद्रसर्ज को राजगद्दी सौंप दी। पर राजकाज की बागडोर उन्हीं के हाथों में रही।

एक दिन शिवलिंग रुद्रसर्ज बीमार पड़ गया। बहुत इलाज करने पर भी उसे बचाया न जा सका। रानी चेन्नम्मा शोक में डूब गईं। उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। वह शिवलिंग रुद्रसर्ज को बेहद चाहती थीं। रानी का मन राजकाज से उचट गया था। चिदम्बरम को यह पता चला, तो दरबार में आए। उन्होंने रानी को धीरज बंधाया। उन्होंने गुरु सिद्दप्पा और सदाशिव से सलाह-मशविरा किया। रानी से कहा—"रानी जी, आप मास्त मरडीगौडा के पुत्र गुरुलिंग रुद्रसर्ज को गोद ले लें, अन्यथा अंग्रेज इस राज्य को कभी भी हड़प सकते हैं।" पर मल्लप्पा ने कहा—"ऐसा करने पर अंग्रेज हमसे नाराज हो जाएंगे। हमें तरह-तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।" रानी ने कहा—"यह हमारा अपने राज्य का मामला है। अंग्रेजों को इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

एक दिन अंग्रेज जनरल मनरो ने रानी चेन्नम्मा को पत्र लिखा। पत्र पढ़ते ही रानी बौखला गईं। उन्होंने कहा—"अंग्रेजों ने हमारी खानापुर जागीर को हड़पने का इरादा बना रखा है। इसके साथ उन्होंने हमसे भारी हर्जाना मांगा है। ऐसा न करने से हम पर हमला होगा। आप सब युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।"

नगर में युद्ध की सूचना दे दी गई। घर-घर में युद्ध की तैयारी होने लगी।

एक रात मौका पाकर मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराय थैकरे के कैम्प में पहुंचे। उन्होंने रानी चेन्नम्मा की युद्ध नीति के बारे में थैकरे को विस्तार से बता दिया। थैकरे ने कहा—"ठीक है, हम जीत गए, तो कित्तूर का राज्य तुम दोनों को सौंप देंगे, पर जब तक रानी चेन्नम्मा जिंदा हैं, तब तक यह काम बहुत कठिन है।"

मल्लप्पा ने कहा—"थैकरे साहब, मैंने रानी चेन्नम्मा को ठिकाने लगाने का उपाय सोच लिया है।" फिर दोनों वहां से चले आए।

मल्लप्पा ने रानी चेन्नम्मा की दासी महांतव्वा को अपने यहां बुलाया। उससे कहा—"तुम रानी को खीर में जहर दे दो। मैं तुम्हें इनाम में एक जागीर दे दूंगा। फिर तुम मजे से रहना।"

महांतव्वा मल्लप्पा शेट्टी के लालच में फंस गई। उसने 'हां' कर दी। मल्लप्पा ने उसे जहर की एक पुड़िया थमा दी। महांतव्वा महल में पहुंची। उसने खीर बनाई। फिर उसमें जहर मिला दिया। वह दोपहर होने की प्रतीक्षा करने लगी।

इसी बीच सदाशिव महल में पहुंचे। वह रानी के पास गए। उन्होंने रानी को इस षड्‌यंत्र के बारे में बता दिया। फिर उन्होंने कहा—"रानी जी, मुझे यह खबर मल्लप्पा की दासी कलावती ने दी थी। उसने अपने कानों से सुना था। उसने महांतव्वा को जहर की पुड़िया लेते देखा भी था।"

दोपहर हो गई, महांतव्वा खीर की थाली लेकर रानी चेन्नम्मा के कक्ष में पहुंची। रानी चेन्नम्मा बोलीं—"आज तो तुमने बहुत बढ़िया खीर बनाई है। पहले तुम चखो, फिर मैं खाऊंगी।" कहते हुए उन्होंने खीर की थाली उसकी तरफ बढ़ा दी। यह देख, महांतव्वा का चेहरा पीला पड़ गया। वह कांपने लगी। रानी चेन्नम्मा ने कड़ककर पूछा, तो उसने सचाई कबूल कर ली। सैनिकों ने उसे कैद कर लिया।

अंग्रेजों ने कित्तूर की सीमा पर चौकसी बढ़ा दी। रानी चेन्नम्मा भी युद्ध की तैयारी में जुटी थीं। एक दिन उन्होंने एक जगह कुछ किशोर लड़कों को युद्ध का अभ्यास करते देखा। उनमें एक किशोर गजब का निशानेबाज था। रानी चेन्नम्मा ने उसे अपने पास बुलाया, उसका नाम पूछा। किशोर ने कहा—"मेरा

अ. न. कृष्णराव (१९०८-१९७१) जन्म कोलार, (कर्नाटक)। साहित्य की सभी विधाओं में अनेक पुस्तकें लिखीं। सांध्यराग, उदयराग, मंगलसूत्र, गृहलक्ष्मी, रानी चेन्नम्मा आदि प्रसिद्ध कृतियां हैं। यहां रानी चेन्नम्मा की कथा संक्षेप में दे रहे हैं। —सं.

नाम बाला है । एक बार महाराज मल्लसर्ज ने मेरे पिता की बहुत मदद की थी । मेरे पिता कहते हैं, आप बहुत वीर एवं साहसी रानी हैं । मैं भी आपके साथ युद्ध के मैदान में जाना चाहता हूं ।'' रानी चेन्नम्मा बाला की बातें सुनकर खुश हो गईं । उन्होंने बाला को अपना अंगरक्षक बना लिया ।

एक दिन मौका पाकर अंग्रेजों ने कित्तूर के किले को चारों तरफ से घेर लिया । थैकरे ने घोषणा की—'यदि महारानी हमसे संधि कर लें, तो हम युद्ध नहीं करेंगे ।' लेकिन रानी चेन्नम्मा ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया । तभी किले का फाटक खुला । कित्तूर के रणबांकुरों ने अंग्रेजों पर हमला बोल दिया । थैकरे ने रानी चेन्नम्मा पर गोली चलाई । पर बाला बीच में आ गया । रानी बच गईं, लेकिन बाला शहीद हो गया । रानी की तलवार ने भयंकर मार काट मचाई । अंग्रेजों में हाहाकार मच गया । इसी बीच कित्तूर के एक सैनिक ने थैकरे पर गोली चला दी । थैकरे की मृत्यु हो गई । यह खबर सुनते ही अंग्रेजों के होश उड़ गए । वे पीछे हटने लगे । कित्तूर की सेना जीत गई ।

नगर में विजय उत्सव मनाया जा रहा था, पर रानी उदास थीं । क्योंकि बाला उनसे सदा के लिए बहुत दूर चला गया था । पूरे नगर में उसकी वीरता की चर्चा हो रही थी । उधर अंग्रेज कमिश्नर चैपलिन की नींद उड़ गई । उसने फिर एक चाल चली । कित्तूर के किले के प्रधान रक्षक शिवबसप्पा को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया । शिवबसप्पा उसकी चाल में फंस गया ।

अंग्रेजों ने कुछ दिन बाद कित्तूर पर फिर धावा बोल दिया । कित्तूर की सेना पूरे उत्साह के साथ लड़ रही थी । अंग्रेजों ने तोपें दागनी शुरू कर दीं । रानी चेन्नम्मा ने भी अपने तोपचियों को तोपें चलाने का आदेश दे दिया । दोनों तरफ से तोपें चल रही थीं । पर यह क्या ! कित्तूर की तोपें बेकार साबित हुईं । क्योंकि शिवबसप्पा ने बारूद में गोबर मिला दिया था । उधर अंग्रेजों की तोपों ने कित्तूर के अनेक सैनिकों को धराशायी कर दिया ।



गुरु सिद्दप्पा, चिदम्बरम और सदाशिव शास्त्री ने गजब का मोर्चा संभाल रखा था । पर तोपों के आगे वे भी कब तक टिकते ! गुरु सिद्दप्पा ने रानी से कहा—''आप यहां से दूर चली जाएं, अन्यथा आप पर भी खतरा आ सकता है ।'' रानी चेन्नम्मा ने ऐसा करने से मना कर दिया । पर सदाशिव ने कई बार कहा, तो रानी चेन्नम्मा न चाहते हुए भी वहां से चली गईं । रास्ते में अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया । रानी चेन्नम्मा ने तलवार खींच ली । उनकी तलवार दुश्मनों की तलवार से बज उठी । रानी की वीरता देखते ही बनती थी । लड़ते-लड़ते रानी अकेली पड़ गईं । अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ लिया ।

कित्तूर की सेना जीत कर भी हार गई । अंग्रेजों ने शिवबसप्पा को भी उसकी गद्दारी का अच्छा सबक सिखाया । एक सैनिक ने उसे मौत के घाट उतार दिया । कमिश्नर चैपलिन ने रानी चेन्नम्मा से कहा—''आप मुझे अपने बचे हुए सैनिकों का पता-ठिकाना बता दें, तो मैं आपको आजाद कर सकता हूं ।'' पर रानी ने ऐसा करने से मना कर दिया । अंग्रेजों का प्रलोभन उनके देश-प्रेम को कम न कर सका । आज भी रानी चेन्नम्मा को कित्तूर की वीर रानी के रूप में याद किया जाता है ।

(प्रस्तुत—डा. नरेंद्रकुमार)

गवाह

—डा. ओम्प्रकाश सिंहल

वियतनाम में एक अत्याचारी महाजन रहता था। उसके पास अथाह धन था, फिर भी संतोष न था। हमेशा किसानों का शोषण करता रहता। जरूरतमंद किसान रुपए उधार मांगने आते। वह बहुत ज्यादा ब्याज पर उधार देता। यदि कोई किसान समय पर पैसे न लौटा पाता, तो उस पर नाना प्रकार के अत्याचार करता।

संयोग की बात, एक बार एक किसान ने महाजन से रुपए उधार लिए। ब्याज समेत ठीक समय पर लौटाने का वायदा किया। पर वह अपना वायदा न निभा सका। बार-बार अपनी मजबूरी बताकर कुछ और मोहलत मांग लेता। इस तरह काफी समय गुजर गया। एक दिन महाजन ने किसान के घर जाकर अपने रुपए वसूल करने का फैसला कर लिया। उसने मन ही मन यह भी निश्चय कर लिया कि यदि किसान ने रुपए न लौटाए, तो वह बदले में कोई कीमती चीज उठा लाएगा।

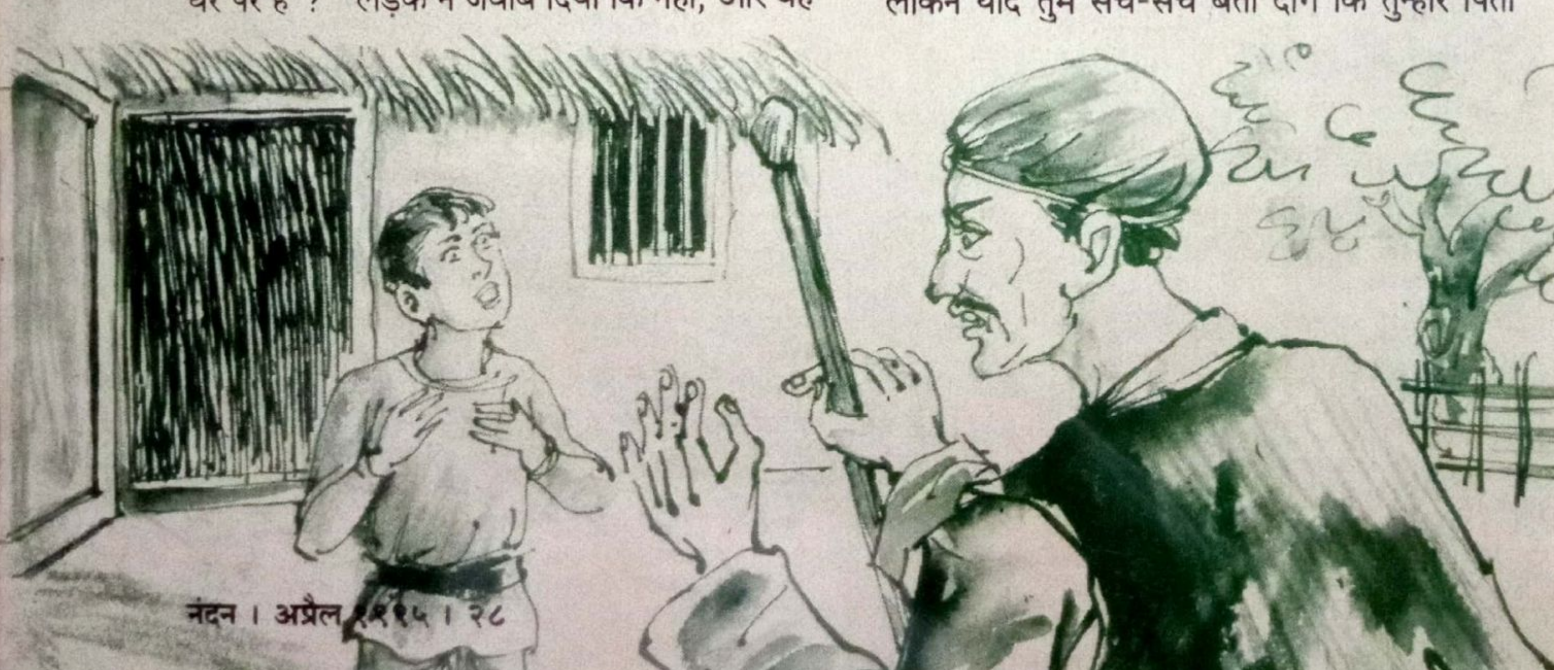
महाजन किसान के घर पहुंचा। घर पर न किसान था, न उसकी पत्नी। बस, दस-बारह साल का एक लड़का खेल में मस्त था। महाजन ने उससे रोबीली आवाज में पूछा—"क्या तुम्हारे माता-पिता घर पर हैं ?" लड़के ने जवाब दिया कि नहीं, और वह फिर खेल में मस्त हो गया। महाजन को इस उपेक्षा पर बड़ा गुस्सा आया। उसने फिर पूछा—"जल्दी बताओ, वे कहां हैं ?"

इस बार भी लड़के ने महाजन की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और खेलने में लगा रहा। यह देख, महाजन गुस्से से आग-बबूला हो उठा। उसने लगभग चीखते हुए पूछा—"कहां हैं तुम्हारे माता-पिता ?"

लड़के ने जान-बूझकर धीरे-धीरे जवाब देना शुरू किया—"मेरे पिता जी जिंदा पेड़ों को काटने और मुर्दा पेड़ों को रोपने गए हैं। मेरी मां हवा बेचने और चांदनी ख़रीदने गई है।"

यह उत्तर सुनकर महाजन को लगा कि लड़का उसे मूर्ख बना रहा है। उसने लड़के को धमकाते हुए कहा—"तुम यह कैसी ऊटपटांग बातें कर रहे हो ! मैंने जो सवाल पूछा है उसका ठीक-ठीक जवाब दो, नहीं तो देख लो यह लाठी।" महाजन की लाठी डरावनी थी—खूब मोटी और लंबी। लड़का उसे देखकर मन ही मन बहुत डरा। फिर भी उसने हिम्मत से काम लिया और वही जवाब दोहरा दिया।

जब महाजन ने देखा कि बच्चे पर डराने-धमकाने का कोई असर नहीं हो रहा है, तो उसने चतुराई से काम लेना ठीक समझा। उसने बच्चे को समझाते हुए कहा—"बेटे, मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम्हारे पिता जी ने मुझसे रुपए उधार लिए थे। उन्होंने वे आज तक नहीं लौटाए। आज मैं अपने रुपए लेने आया हूं। लेकिन यदि तुम सच-सच बता दोगे कि तुम्हारे पिता





इस समय कहां हैं, तो मैं रुपए वापस नहीं मांगूंगा।''

बच्चे ने महाजन की ओर देखते हुए कहा—''क्यों मजाक कर रहे हैं ! मैं आपकी बात पर यकीन कैसे कर सकता हूं ?''

महाजन ने कहा—''मैं पृथ्वी और आकाश को साक्षी बनाकर कह रहा हूं। अगर तुम मुझे यह बता दोगे कि इस समय तुम्हारे माता-पिता कहां हैं, तो मैं उधार दिए रुपए वापस नहीं मांगूंगा।''

लड़के ने कहा—''पृथ्वी और आकाश बोल नहीं सकते। इसलिए उन्हें गवाह नहीं बनाया जा सकता। यदि आप किसी जीवित प्राणी को गवाह बनाएं, तो मैं आपकी बात मान लूंगा।''

महाजन ने झोंपड़ी के सामने उगे बांस पर बैठी मक्खी की ओर इशारा किया। बोला—''मैं इस मक्खी को गवाह बनाकर वायदा करता हूं। अगर तुम मुझे अपने माता-पिता का पता बता दोगे, तो मैं तुम्हारे पिता को उधार दिए गए रुपए माफ कर दूंगा।''

बच्चे ने महाजन की बात स्वीकार करते हुए कहना शुरू किया—''मैंने आपसे कहा था कि पिता जी जिंदा पेड़ों को काटने और मुर्दा पेड़ों को रोपने गए हैं। इसका मतलब यह है कि वे पेड़ काटकर किसी मकान के सामने बाड़ लगाने गए हैं। मैंने कहा था कि मेरी मां हवा बेचने और चांदनी खरीदने गई है। मेरी बात का मतलब यह था कि वह पंखे बेचने और बिक्री से मिलने वाले पैसों से तेल खरीदने गई है, जिससे घर में चांदनी जैसी रोशनी हो सके।''

महाजन ने कहा—''तुम वास्तव में एक बुद्धिमान बालक हो। मैंने तुम्हारे पिता को दिया सारा उधार माफ कर दिया है। कुछ दिन बाद आकर तुम्हारे पिता को स्वयं यह बात बता जाऊंगा।''

यह कहकर महाजन मन ही मन लड़के की बेवकूफी पर हंसता हुआ अपने घर चला गया। कुछ दिन बाद वह किसान के घर फिर आया। इस बार किसान और उसकी पत्नी घर पर थे। महाजन ने किसान से अपने रुपए वापस मांगे। किसान ने अपनी विवशता बताते हुए कुछ समय और मांगा।

यह सुनते ही महाजन का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसने किसान को गालियां देनी शुरू कीं, फिर लाठी से पीटने लगा। इस पर पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। उन्होंने बीच-बचाव किया और किसान को पिटने से बचाया।

उस समय किसान का लड़का कहीं खेलने गया हुआ था। इसी बीच वह लौट आया। लड़के ने महाजन को अपने पिता से यह कहते सुना कि आज वह अपने रुपए लिए बिना नहीं जाएगा। तब उसने महाजन से कहा—''आपने तो पिता जी का कर्ज माफ कर दिया था !''

महाजन बोला—''तुम झूठ बोलते हो। मैंने कर्ज माफ करने की बात कभी नहीं कही।'' लड़के ने अपने माता-पिता को पिछली बातें बता दीं। कहा—''जब कर्ज माफ हो गया तो रुपए वापस करने का प्रश्न ही नहीं उठता।'' महाजन राजा से शिकायत

करने की धमकी देकर चला गया।

महाजन ने राजा से शिकायत कर दी। राजा ने किसान और महाजन दोनों को दरबार में बुला भेजा। किसान अपने बेटे को साथ लेकर दरबार में पहुंचा। राजा ने महाजन और किसान के बेटे की बातें ध्यान से सुनीं। फिर किसान के बेटे से कहा—"तुम्हारा कहना है कि महाजन ने तुमसे कहा था कि उधार माफ कर दिया गया है। लेकिन महाजन का कहना है कि उसने ऐसा कभी नहीं कहा था। क्या अपनी बात सिद्ध करने के लिए तुम्हारे पास कोई प्रमाण है?"

लड़के ने कहा—"महाराज! इन्होंने एक मक्खी को गवाह बनाकर, उसके सामने उधार माफ करने की बात कही थी।"

लड़के की बात सुनकर राजा की भृकुटि तन गई। उसने लड़के से कहा—"यह राज दरबार है। यहां पर ऐसी मनगढ़ंत बातें नहीं कही जातीं।"

लड़का बोला—"महाराज! क्षमा करें, मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं। इन्होंने अपनी नाक पर बैठी मक्खी को गवाह बनाकर उधार माफ करने का वचन दिया था।"

यह सुनते ही महाजन का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। लड़के के कुछ और कहने से पहले वह बोला—"ओ झूठे, मक्खी मेरी नाक पर नहीं, बल्कि तेरी झोंपड़ी के सामने उगे बांस पर बैठी थी।" यह कहते ही वह रुक गया। महाजन को लगा कि यह कहकर जैसे उसने कोई बड़ी भारी गलती कर दी। उसका सोचना एकदम सही था। उसकी बात सुनते ही राजा ठहाका मारकर हंस पड़ा। राजा के साथ दरबारी भी हंसे। फिर राजा ने अपने को संयत करते हुए महाजन से कहा—"तुम्हारी बात से यह सिद्ध होता है कि लड़के की बात सही है। मेरा आदेश है कि तुम्हें अपना वचन निभाना पड़ेगा।"

राजा का आदेश सुनकर महाजन का चेहरा उतर गया। दरबार में उपस्थित सभी लोगों ने लड़के की सूझ-बूझ की सराहना की।

(वियतनामी लोककथा)

संग दिखाए रंग

—डा. विजय अग्रवाल

चंदन का घना जंगल था। वहां चंदन के पेड़ों की डालियां झूम-झूम कर नाचती थीं। चंदन की सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती। गांव के लोग खुश हो जाते थे।

चंदन के वृक्ष भी यह सोचकर खुश हो जाते कि लोग उनकी प्रशंसा करते हैं। लोग प्रशंसा करें भी क्यों न, क्योंकि उनसे लोगों को सुगंधित लकड़ियां मिलती थीं। लोग चंदन घिसकर भगवान पर चढ़ाते। जब गर्मी से परेशान हो जाते, तो उसका लेप माथे पर लगाते थे।

इसी वन में चंदन का एक बहुत पुराना वृक्ष था। उसकी लम्बी-चौड़ी डालियां धीरे-धीरे बूढ़ी हो गई थीं। उसके नीचे चारों ओर कीचड़ जमा होने लगा।

चंदन के पेड़ के नीचे यह कीचड़ आराम से पड़ा रहता। चंदन के पेड़ की ठंडी और सुगंधित हवा लेता। इस कारण उस कीचड़ की दुर्गंध थोड़ी कम हो गई थी। कुछ समय बाद कीचड़ को यही लगने लगा कि वह सुगंधित कीचड़ है। वह यह सोचता–'मैं सभी कीचड़ों से अच्छा हूं, क्योंकि सारे कीचड़ों से मेरी गंध अलग है।' लेकिन कुछ दिन बाद वह यह सोचने लगा—'मैं चंदन से भी अधिक सुगंधित हूं।' वह यह बात भूल ही गया कि उसकी सुगंध चंदन के कारण है।

एक दिन चंदन वन में जोर की आंधी आई। आंधी से बूढ़े पेड़ की एक मोटी डाल कीचड़ में जा गिरी। चंदन की लकड़ी को अपनी गोद में पाकर कीचड़ खूब खुश हुआ। उसे इस बात का घमंड हो गया कि उसने चंदन को आश्रय दिया है। पर चंदन की डाली ने कहा—"मैंने तुम्हें इतने दिनों तक अपनी छाया में रखा है। यदि मेरी छाया तुम पर न होती, तो तुम कब के सूख गए होते!"

फिर बहस इस बात पर होने लगी कि दोनों में अधिक शीतल कौन है? चंदन ने कहा— "भाई



कीचड़, तू कभी भी मेरी बराबरी नहीं कर सकता । मेरी शीतलता को सारा संसार जानता है । मुझमें इतनी शक्ति है कि मैं ज्वर के ताप को शांत कर सकता हूं । यदि शरीर का कोई अंग जल गया हो, तो मैं उसे शीतल कर सकता हूं ।''

कीचड़ ने कहा—''चंदन, तुम अपनी प्रशंसा करने में बहुत कुशल हो । पर मुझमें जो गुण हैं, वे तुम्हारे पास नहीं हैं । मैं हमेशा नम रहता हूं । गीला रहने के कारण मुझमें हमेशा शीतलता बनी रहती है । गर्म से गर्म वस्तु भी मेरा स्पर्श पाकर शीतल हो जाती है ।''

चंदन उसकी यह बात मानने को तैयार नहीं था । चंदन ने कहा—''लेकिन तुम्हारी जो शीतलता है, वह मेरे कारण है । यदि मेरी छाया तुम पर से हट जाए, तो तुम देखते ही देखते सूख जाओगे । तुम्हारी शीतलता भी नष्ट हो जाएगी ।''

कीचड़ कहां मानने वाला था ! उसने जवाब दिया— ''जो शीतल होता है, वह न कभी सूखता है और न ही टूटता है । यदि तुम सचमुच शीतल थे, तो फिर अपने पेड़ से टूटकर अलग क्यों हुए ?'' इस तरह दोनों अपनी-अपनी बातों पर डटे थे ।

अंत में दोनों ने सोचा कि किसी तीसरे के पास चला जाए । उसी से यह पूछा जाए कि दोनों में शीतल कौन है ?''

यह निर्णय कर दोनों वहां से चले । थोड़ी ही दूर पर उन्हें एक मेढक दिखाई पड़ा । दोनों ने निर्णय किया कि मेढक से ही विवाद का फैसला कराया जाए ।

मेढक ने दोनों की बात बड़े ध्यान से सुनी ! जब वह चंदन की बात सुनता, तो उसे लगता कि चंदन ही शीतल है । लेकिन जब वह कीचड़ की बात सुनता, तो उसे लगने लगता कि कीचड़ शीतल है ।

सहसा मेढक अपना फैसला सुनाने से पहले तीन-चार बार उछला । वह एक पत्थर पर जा बैठा । उसने अपना फैसला सुनाते हुए कहा—''चंदन, तुममें शीतलता है, फिर भी तुम शीतलता में कीचड़ की बराबरी नहीं कर सकते । संसार में सबसे शीतल कीचड़ ही है ।''

यह सुनकर चंदन निराश हो गया । कीचड़ खुशी के मारे इतराने लगा । फैसला सुनाने के बाद मेढक उछला, फिर वह कीचड़ में चला गया ।

हमेशा कीचड़ में रहने वाले मेढक से भला और दूसरी उम्मीद भी क्या की जा सकती थी ! चंदन की संगत में रहकर कीचड़ सुगंधित हो गया था । पर कीचड़ की संगत में रहकर मेढक चंदन के गुणों से अनजान था । ●

पहाड़ कहता है

कंकर, पत्थर, चट्टानों का
है पूरा भंडार पहाड़,
भरे पड़े रहते हैं इसमें
झाड़ी, झाड़ और झंखाड़ ।

गांव-गांव में, शहर-शहर में
चर्चा रहती है सब ओर,
कितना खुरदुर, ऊबड़-खाबड़
यह पहाड़ है बहुत कठोर ।

लेकिन यह चर्चा भी शायद
दूर-दूर तक चलती है,
पत्थर वाले इस पहाड़ से
ही तो नदी निकलती है ।

केवल बाहर ही बाहर से
नहीं किसी को आंको जी,
सबसे ये कहता पहाड़ है
भीतर भी तो झांको जी !

—राजा चौरसिया

घुंघराले बाल

पापा जी के काले बाल
चाचा के घुंघराले बाल,
मम्मी के सिर पर हैं कैसे
भूरे और निराले बाल !

बाबा के हैं पीले बाल
दादी के हैं ढीले बाल,
चांदी जैसे नाना-नानी
के लगते चमकीले बाल ।

टामी के झबरीले बाल
गुड़िया के हैं नीले बाल,
तेल पिए मामा के रहते
हरदम गीले-गीले बाल ।

कहीं किसी के न्यारे बाल
कहीं किसी के प्यारे बाल,
भइया के सिर पर हैं रहते
सुंदर, सजे-संवारे बाल ।

—सुंदरलाल 'अरुणेश'



मामा जी आए

मामा जी आए हैं घर पर
बन करके मेहमान रे,
दिल्ली से आए हैं वह तो
लिए बहुत सामान रे !

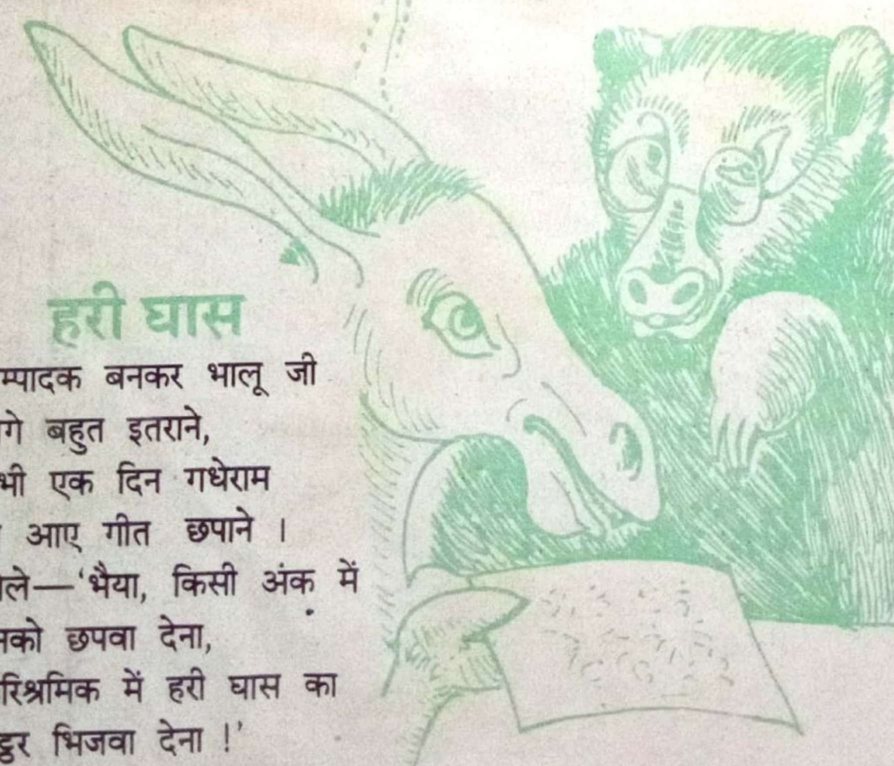
कुक्कू की खातिर मोटर है
गुड़िया की खातिर गुड़िया,
खेल-खिलौने बड़े सलोने
चलते फिरते हैं बढ़िया ।
छुक-छुक गाड़ी का इंजन है
चाबी जिसकी जान रे !

नैन मटकते इस गुड़िया के
लेटा दो, सो जाती है,
झपकाकर अपनी पलकों को
सपनों में खो जाती है ।
शायद 'नंदन' पढ़ती होगी
होंठों पर मुसकान रे !

एक घड़ी है ऐसी देखो
बोले जैसे बंदर है,
छुटकी मित्री कहती—'पापा,
बंदर इसके अंदर है ।'
बच्चा जो भी समझ न पाए
वह ही तो नादान रे !

बोले तभी देखकर पापा
'ओ बच्चों के मामा जी !
चाय तुम्हारी हो गई ठंडी
बंद करो यह ड्रामा जी !
बच्चों को प्यारे मामा हैं
आज हुई पहचान रे !'

—बाबूराम शर्मा 'विभाकर'



हरी घास

सम्पादक बनकर भालू जी
लगे बहुत इतराने,
तभी एक दिन गधेराम
ले आए गीत छपाने ।
बोले—'भैया, किसी अंक में
इनको छपवा देना,
पारिश्रमिक में हरी घास का
गट्ठर भिजवा देना !'

—मदन देवड़ा


नया मंदिर
राजा विक्रमदेव सरयूनगर के राजा थे। उनके शासन में प्रजा प्रसन्न थी।
महाराज की जय !
महाराज की जय !
एक बार राजा भ्रमण पर गए। बाजल गांव के बाहर प्राचीन मंदिर के अवशेष देखे।
मंदिर अत्यंत प्राचीन है !
विशाल और भव्य रहा होगा !
राजा विक्रमदेव ने मंदिर के फिर से निर्माण की घोषणा कर दी। इस पर गांव वाले बहुत प्रसन्न हुए।
सारा खर्च राज कोष से...
धन्य हो महाराज !
लेकिन तभी पड़ोसी राजा से युद्ध छिड़ गया। राज्य का वातावरण बदल गया।
हम शांति चाहते हैं, किंतु शत्रु हमें कायर न समझे !



युद्ध लम्बा चला । सरयूनगर के काफी सैनिक मारे गए । पर अंत में विजय विक्रमदेव की हुई ।
इस बार तुम्हें छोड़ता हूं, किंतु अगली बार...
सरयूनगर में विजय पर्व धूमधाम से मनाया गया ।
कुछ दिन बाद बाजल गांव के लोग राजा के पास आए । वे मंदिर के निर्माण के बारे में जानना चाहते थे ।
युद्ध समाप्त हो गया । अब मंदिर निर्माण में देर न होगी !
महाराज !
उसी समय मंत्री राजा विक्रमदेव से मिला । साथ में कोषाध्यक्ष था । उन्होंने बताया—
युद्ध में बहुत खर्च हुआ है । खजाना खाली...
मंदिर का निर्माण फिर कभी...
मैंने वचन दिया है ।


विक्रमदेव उलझन में फंस गए । आखिर उन्होंने एक उपाय सोचा ।
हम व्यापारियों पर कर लगाएंगे ।
जी, महाराज !
नए करों की घोषणा हो गई । राजा प्रायः वेश बदल कर प्रजा का हाल जानने निकलते थे ।
रातोरात इतने दाम बढ़ा दिए । मैं राजा से शिकायत करूंगा ।
मैं क्या करूं ? राजा ने नए कर लगाए हैं ।
!!
फिर तो इस तरह के झगड़ों के समाचार राजा को अक्सर मिलने लगे । दाम अंधाधुंध बढ़ गए थे ।
यह कैसा अंधेर है !
रास्ता खाली करो। भागो...
राजा सोच में पड़ गए । उन्होंने मंत्री को बुलाया । उससे राय पूछी ।
महाराज, अशांति बढ़ रही है !
हमें नए कर हटाने होंगे ।



इस पर विशेष दरबार लगाया गया । राजा विक्रमदेव ने नए कर वापस लेने की घोषणा की ।
तब मंदिर कैसे बनेगा ! धन कहां से...
महाराज, हमें किसी से डरना नहीं चाहिए । सख्ती से...
राजा ने कहा...
महाराज, यह कैसी बात !
मंदिर अवश्य बनेगा । इसके लिए हम अपना खर्च घटाएंगे ।
महाराजा विक्रमदेव ने राजसी खर्चों में कई कटौतियों की घोषणा कर दी ।
जगह-जगह दान-पात्र रखवा दो । लोग स्वयं दें तो ठीक...
!!
!!
फिर तो दरबारी एक-एक करके अपने योगदान की घोषणा करने लगे ।
महाराज, हम लोग भी अपने खर्चों में कटौती करेंगे । उसे मंदिर के लिए देंगे ।
कुलदीप
इस तरह वृद्धि वापस लेने पर भी मंदिर के लिए धन की कमी न हुई ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन	-बच्चों का अखबार- **नंदन बाल समाचार**	नंदन का शुल्क एक वर्ष : ६५ रुपए दो वर्ष : १२५ रुपए

वर्ष : ३१ अंक : ६ अप्रैल '९५, नई दिल्ली: चैत्र-वैशाख, शक सं. १९१७

धरोहर देश की बच्चों के लिए

नई दिल्ली । कठपुतलियां कहानियां सुनाती हैं । वे कहती हैं—हमारा देश बहुत बड़ा है । तरह-तरह की कलाओं, गीत-नृत्य-नाटक से सजा हुआ । हमारी यह धरोहर ही पूरे देश को एक रखती है । यह बात बच्चों तक पहुंचे । उन्हें इस विषय में अधिक से अधिक जानकारी मिले, इसके लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाता है । भारत सरकार का सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र ऐसा करता है । अध्यापक बच्चों को किताबी जानकारी से अलग, देश के बारे में बता सकें, केंद्र की यही कोशिश रहती है ।

देश के दूरदराज इलाकों से आए शिक्षकों को विभिन्न भाषाओं के बारे में बताया जाता है । नृत्य दिखाए जाते हैं । ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी दी जाती है । रामायण-महाभारत के बारे में बताया जाता है ।

जानकारी बढ़ाने के लिए पुतलियों के इस्तेमाल के बारे में भी बताया जाता है । कठपुतलियों के जरिए पुराण कथाओं, लोक कथाओं आदि का प्रदर्शन करना सिखाया जाता है । पुतलियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों की भी जानकारी दी जाती है ।

यही नहीं, हमारे यहां की विभिन्न कलाएं, मिट्टी और लकड़ी की कारीगरी के बारे में भी अध्यापकों को बताया जाता है । अध्यापकों को किताबें, स्लाइड्स, कैसेट और प्रोजेक्टर भी दिए जाते हैं जिससे कि पढ़ाते वक्त वे इन चीजों की मदद लेकर बच्चों को सही जानकारी दे सकें ।

लाइसेंस मिला

लंदन । डेविड गस्ट को कार चलाने के लिए लाइसेंस पाने में पूरे सत्रह वर्ष लगे । कारण यह था कि जब भी डेविड का इम्तिहान हुआ, वह घबराहट में फेल हो गया । इस दौरान उसने छह सौ बत्तीस पाठ याद किए । आठ प्रशिक्षक बदले । पांच कारें तोड़ीं । इन सत्रह वर्षों में डेविड ने लाइसेंस पाने के लिए ढाई लाख रुपए खर्च कर दिए । अंत में डेविड इम्तिहान में पास हो गया ।

अमरीका के गरीब

वाशिंगटन । अमरीका में हर ग्यारहवां आदमी गरीब है । अमरीका में गरीब परिवार वह है, जिसमें चार सदस्य हैं और जिसकी आमदनी १४,७६३ डालर से कम है । यही नहीं इन गरीबों को अपनी आधी आमदनी आवास पर खर्च कर देनी पड़ती है । अमरीका में सबसे ज्यादा गरीब काले लोग हैं ।

दुर्गा भाभी का सम्मान

गाजियाबाद । दिल्ली सरकार आजादी की लड़ाई में शामिल दुर्गा भाभी को हर साल इक्यावन हजार रुपए देगी । गाजियाबाद में जाकर दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना ने दुर्गा भाभी का अभिनंदन किया ।

चित्रकला प्रतियोगिता के परिणाम

नई दिल्ली । 'नंदन' की ओर से राजधानी के पांच विद्यालयों—ममता मार्डर्न स्कूल, विकासपुरी; हैप्पी स्कूल, दरियागंज; बालभवन पब्लिक स्कूल, मयूर विहार; त्यागी पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड और ए. पी. जे. पब्लिक स्कूल साकेत में चित्रकला प्रतियोगिताएं की गईं । इन प्रतियोगिताओं में हजारों बच्चों ने भाग लिया ।

७ से ९ वर्ष के वर्ग में विजेता बच्चों के नाम हैं—प्रथम : वैशाली सिन्हा; वत्सला काकड्डू; शिल्पा पनेसर; नितिन रावत; हर्ष मोदी । द्वितीय : रोहित कालरा; तन्मय; कशिश; अंकुर चंद्रा; अनिल रावत । तृतीय : मेघा गुप्ता; सैय्यद मोहम्मद; याचना गुप्ता; अनन्या भट्टाचार्य; मीनल शुक्ला ।

१० से १३ वर्ष के वर्ग में विजेताओं के नाम हैं—प्रथम : आरती; यवनिका; वैभव जैन; श्वेता वार्ष्णेय; प्रशांत वर्मा । द्वितीय : किशोर पांडेय; रीतू तिवारी; प्रतिभा पनेसर; आशीष अधिकारी; कंचन । तृतीय : सुमंता; शिवानी भल्ला; शैली गुप्ता; उदित वार्ष्णेय; पवन शर्मा । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों को सौ सांत्वना पुरस्कार भी दिए जाएंगे । विजेताओं को अलग से सूचना भेजी जाएगी ।

पेरिस की सड़कें

पेरिस । फ्रांस में पिछले दिनों तेज बारिश हुई । वहां सड़कों पर इतना पानी भर गया कि बड़ी-बड़ी बसें और कारें बहने लगीं ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

नंदन बाल समाचार

ईश्वर बिना मांगे ही सब कुछ दे देता है। —संत तुकाराम

बीत गया विज्ञान दिवस

विज्ञान दिवस हर साल आता है, बीत जाता है। हर आदमी को विज्ञान से जोड़ना आसान नहीं। लेकिन लाखों बच्चे स्कूल-कालिजों में विज्ञान पढ़ते हैं। सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं में हजारों विज्ञानकर्मी और वैज्ञानिक हैं। विज्ञान दिवस उनके लिए एक त्योहार जैसा क्यों न हो?

भारत के महान वैज्ञानिक सी.वी. रमन ने प्रकाश किरणों पर खोज की थी। गुलाम भारत में उन्हें इस खोज पर नोबेल पुरस्कार मिला था। उसी की याद में 'विज्ञान दिवस' की शुरुआत की गई। लेकिन कठिनाई यह है कि विज्ञान शब्द आते ही हम अंग्रेजी में सोचने लगते हैं। विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए जो पुस्तिकाएं या सामग्री बनती है, वह भी अंग्रेजी में। बालक तक पहुंचने के लिए उसकी भाषा अपनाना जरूरी है। हर स्कूल में, हर शहर में विज्ञान दिवस मनाया जाना चाहिए।

इनसे मिलिए



इस वर्ष श्री अशोक वाजपेयी को उनकी पुस्तक—'कहीं नहीं वहीं' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। श्री वाजपेयी जाने-माने कवि और आलोचक हैं। उनका कहना है कि बच्चों के लिए लिखना बहुत कठिन काम है। बच्चों के कल्पना लोक तक बड़े पहुंच सकें, तभी उनके लिए कुछ अच्छा लिखा जा सकता है। अभी संसार में बहुत कुछ ऐसा बचा है जिस पर बच्चे आश्चर्य कर सकते हैं। नया जान सकते हैं। लेखकों को उनके लिए लिखने को 'खेल' की तरह लेना चाहिए।

इस दुनिया को बच्चे खेल का मैदान ही समझते हैं। यही भावना उनके अबोधपन को बनाए रखती है।

प्रशासनिक अधिकारी अशोक वाजपेयी की कविताओं में पंडिताऊ शब्द नहीं बल्कि सरल शब्द होते हैं। मां, पिता, घर, पेड़, चिड़िया और बच्चे—इनकी चर्चा वह करते हैं। उनका यह भी कहना है कि बच्चों को अपनी मातृभाषा को जानना चाहिए। उन्हें अपने आसपास के पेड़ों, पक्षियों, नदियों, पशुओं सभी की जानकारी होनी चाहिए।

गांधी और किंग्सले

नई दिल्ली। बेन किंग्सले गांधी फिल्म में महात्मा बने थे। उनका कहना है कि वह भारतीय हैं और उनका असली नाम किशन बान जी है। यदि वह अपना नाम न बदलते तो पश्चिमी जगत की फिल्मों में कभी सफल न होते।

एक पद कितने आवेदन

तिरुअनंतपुरम्। केरल में खादी और ग्रामीण उद्योग बोर्ड में सोलह क्लर्कों की नौकरियां थीं। इन नौकरियों के लिए दस लाख आवेदन-पत्र आए।

उन्नीस विषयों में एम. ए.

बम्बई। डा. श्रीकांत जिचकर राज्यसभा के सांसद हैं। उन्होंने उन्नीस विषयों में एम. ए. किया है। समझा जाता है कि भारत में वह सबसे अधिक एम. ए. की डिग्रियां पाने वाले व्यक्ति हैं। यही नहीं उन्होंने महाराष्ट्र में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए भी अभियान चलाया और सफलता पाई।

इलायची वाली अम्मा

धनबाद। वैसे तो उनका नाम है लक्ष्मण कौर। मगर लोग उन्हें इलायची वाली अम्मा कहते हैं। उनसे जो भी मिलने आता है, उसे वह इलायची देती हैं। उन्हें जानवरों से भी बड़ा लगाव है। अपने को सुभाषचंद्र बोस की सेना का सिपाही बताने वाली अम्मा की उम्र है पचानवे वर्ष।

क्यों मारा?

न्यूयार्क। पुलिस के एक हवलदार की बंदूक और बिल्ले छीन लिए गए क्योंकि उसने पुलिस विभाग के एक कुत्ते फ्रेड को मार डाला। हवलदार हेक्टर कोलेजो का कहना है कि कुत्ता बहुत अनुशासनहीन हो गया था। वह इधर-उधर घूमता रहता था। हेक्टर ने एक दिन गुस्से में उसे खूब मारा। फिर कार में डालकर पशुशाला में छोड़ आया। वहां कुत्ता फ्रेड मर गया और कोलेजो के खिलाफ कार्यवाही की गई।

अमरीका भी शामिल

संयुक्त राष्ट्र। अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकार समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। अब तक कुल १७७ देश इस समझौते पर हस्ताक्षर कर चुके हैं। इस समझौते में बच्चों को हर तरह के शोषण से बचाने तथा शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी अधिकार दिलाने की बात कही गई है।

फुर्ती और सौ साल

बर्न। स्विट्ज़रलैंड में रहते हैं, फ्रेडरिक गेरबर। ठीक सौ वर्ष की उम्र में उन्होंने काम छोड़ा था। और काम भी कैसे-कैसे ? वह खेती करते थे। दूध बेचते थे। फ्रेडरिक अब १०८ वर्ष के हैं। उनका कहना है कि अब वह उतने फुर्तीले नहीं रहे जितने सौ वर्ष की उम्र में थे।

गोभी की शर्त

आरा। बिहार में एक गोभी एक हजार एक रुपए में बिकी। इस गोभी के फूल में रत्न नहीं जड़े हुए थे। हुआ यूं कि एक आदमी ने गोभी का फूल खरीदा। एक दूसरे आदमी को भी वही फूल पसंद आया। बात बढ़ गई और अंत में जिस आदमी को गोभी का फूल पसंद आया था, उसने एक हजार एक रुपए देकर उसे खरीद लिया।

खुदाई में मिली नहर

कुणाल (हिसार)। यहां खुदाई में एक नहर का पता चला है। समझा जाता है कि सरस्वती नदी से गांव तक पानी पहुंचाने के लिए,नहर का इस्तेमाल किया जाता होगा। हरियाणा के विशेषज्ञ माधव आचार्य का कहना है कि भारतीय उप महाद्वीप में सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े किसी स्थान पर कभी नहर नहीं मिली।

बापू की पौत्री

नई दिल्ली। महात्मा गांधी की पौत्री इला गांधी दक्षिण अफ्रीका की नेल्सन मंडेला सरकार में सांसद हैं। पिछले दिनों वह भारत आईं। दक्षिण अफ्रीका में वह बूढ़ों और बच्चों के लिए काम करती हैं। इला ने गांधी जी के साथ सेवाग्राम में कुछ दिन बिताए थे। तब वह आठ वर्ष की थीं। फीनिक्स के जिस घर में महात्मा गांधी रहते थे, वह उसे गांधी संग्रहालय बना रही हैं।

तोता बना गवाह

लंदन। जार्जीना मार्गन ने एक तोता खरीदा था। लेकिन वह चोरी हो गया। तोता चुराने वाला पकड़ा गया। मगर उसने कहा कि यह उसी का तोता है। उसका नाम ब्लू है। लेकिन कुमारी मार्गन ने अदालत में कहा कि वह सबको दिखाएंगी कि तोता उन्हीं का है। जैसे ही उन्होंने तोते को उठाया, उसने अपने पंख फुलाए और दो बार सीटी बजाई। यहां तक कि वह बार-बार कु. मार्गन के पास ही जाना चाहता था।

मैं बेकार नहीं हूं

वाशिंगटन। आज से बीस साल पहले जीवन बचाने के लिए जैफ कीप की एक टांग काट दी गई थी। लेकिन अब वह बाईस वर्ष की उम्र में नकली टांग सेभागा वह पांच हजार, तीन सौ किलोमीटर दौड़ा। लोगों ने गुब्बारे उड़ाकर और तालियां बजाकर हर जगह स्वागत किया। कीप लोगों को बताना चाहता था —'मैं दुनिया के लिए बेकार नहीं हुआ हूं।'

मानस चीनी भाषा में

नई दिल्ली। पेइचिंग विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष हैं प्रो. हांग। उन्होंने रामचरित मानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। यह अनुवाद भी कविता में ही है। उनका कहना है कि भारत एक महान देश है। संयुक्त राष्ट्र में भारत की आवाज हिंदी में ही सुनी जानी चाहिए।

पहली सदी का जहाज

एथेंस। यूनान के द्वीप के पास एक जहाज के अवशेष मिले हैं। यह जहाज समुद्र में चालीस मीटर की गहराई में डूबा है। जहाज के अंदर एक सुराही भी मिली है। समझा जाता है कि यह जहाज पहली सदी का है।

नन्हे समाचार

□ लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर एक सूटकेस के अंदर से पंख फड़फड़ाने की आवाजें सुनाई दीं तो उसे खोला गया। उसमें बहुत-से परिंदे बंद थे। सूटकेस के मालिक को परिंदों की तस्करी के आरोप में पकड़ लिया गया।

□ बलारिया में एक आदमी ट्रेन के शौचालय में फिसल गया। उसके धक्के से कूड़ादान उलट गया। नीचे एक पैकेट में २ लाख रु. के नोट मिले। भले आदमी ने रकम पुलिस को सौंप दी।

□ अमरीका के स्टीव फासेट ने गुब्बारे से लटके झूले में बैठकर कोरिया से कनाडा तक की यात्रा की। ६००० मील की अकेली यात्रा में उसने प्रशांत महासागर पार किया। यह एक विश्व रिकार्ड है।

□ पूजा और अर्जुन पुलिस के खोजी कुत्ते हैं। बंगलौर में हुई पुलिस परेड में उन्हें स्वर्ण और रजत पदक दिए गए।

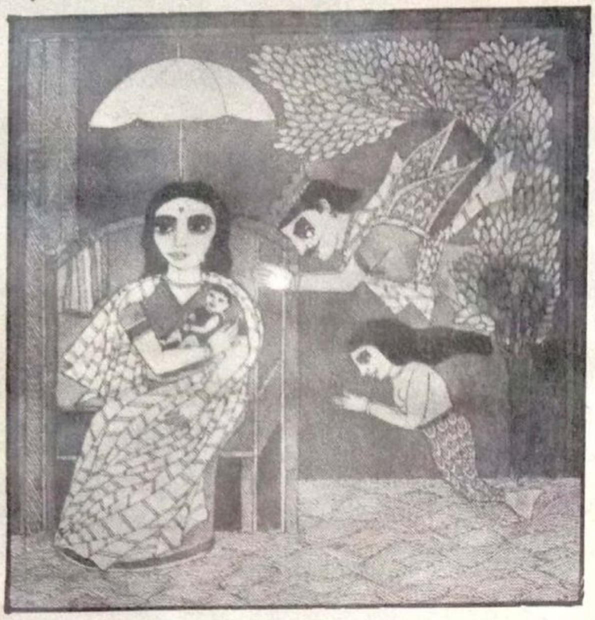
□ अरुणाचल के पश्चिम कामेंग जिले में काली गरदन वाले दुर्लभ सारसों के लिए एक अभय वन बनाया जा रहा है। ये कड़ी सर्दी में तिब्बत तथा अन्य ठंडे क्षेत्रों से यहां हर वर्ष आते हैं।

□ सीडरहेम, स्वीडन में, एक बिल्ली पेड़ पर जा चढ़ी। बर्फ गिरी तो वह फंस गई। उतरने के लिए चिल्लाने लगी। लोगों ने फायर ब्रिगेड को बुलवाया। बिल्ली को तो पेड़ से उतार लिया गया, पर उसकी पूंछ ऊपर ही फंसी रह गई।

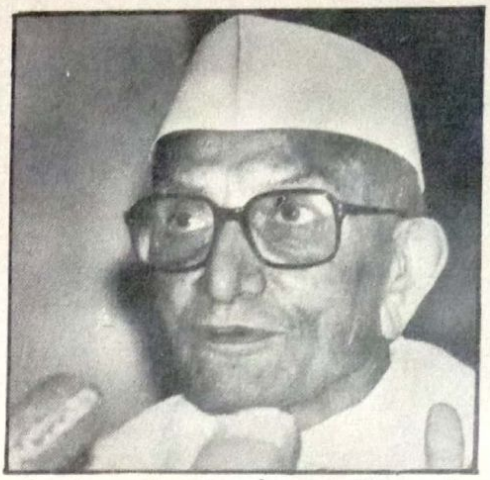
□ लंदन में सरकस के जोकरों का विश्व सम्मेलन हुआ।

□ न्यूयार्क में एक आदमी को बिना टिकट रेल यात्रा के जुर्म में पकड़ा गया। उसकी जेबों में पंद्रह हजार डालर निकले। उसने कहा— 'यह धन मेरे अफसर का है, मैं इसमें से कुछ भी खर्च नहीं कर सकता था।'

सचित्र समाचार



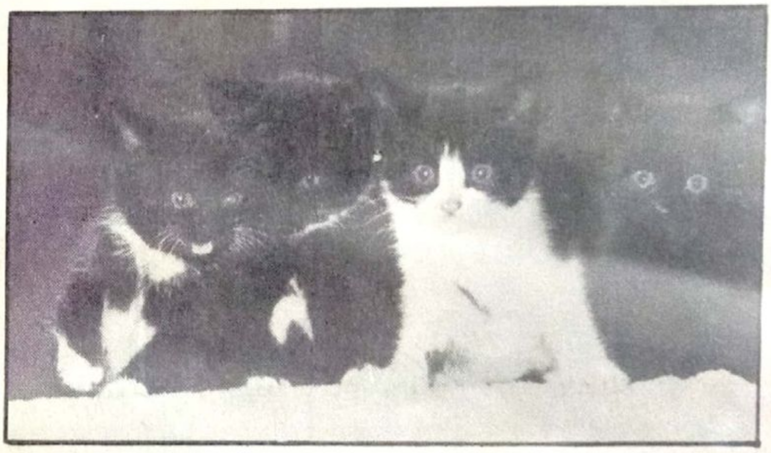
बच्चों की संस्था 'क्राई' की ओर से चित्रकला प्रदर्शनी। बद्रीनारायण का एक चित्र 'मां के लिए।



मोरारजी देसाई : सौवां जन्मदिनः बधाई। 'नंदन' में अनेक वर्षों तक बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देते रहे हैं।



हिन्दुस्तान टाइम्स के प्रमुख छायाकार एस. एन. सिन्हा का चित्र 'यादें': ललित कला अकादमी द्वारा पहला राष्ट्रीय पुरस्कार।



लंदन में ये बिल्ली के बच्चे मोमजामे की थैली में बंद मिले। जूलिएट मार्टन नाम की समाज सेवी महिला ने बचाया।

साल्जबर्ग (आस्ट्रिया) की प्रदर्शनी में एक पैन : कीमत तीन करोड़ रुपए से अधिक।





दुनिया की सबसे छोटी जादूगरनी कृति पारेख : बम्बई में एक प्रदर्शन के दौरान।


कान में रुई
बोलनपुर का एक किसान बेहद बातूनी था । लोगों ने उसका नाम ही बोलनसिंह रख दिया था ।
उसकी पत्नी शांति भी बहुत परेशान थी । एक दिन...
कम बोला करो ! बक-झक में जरूरी काम तक भूल जाते हो ।
चुप ! कान में रुई ठूंस लिया कर ।
घर में रुई थी नहीं । शांति ने पड़ोसी के लड़के को रुई लाने धुनिए के पास भेजा...
इतनी रुई का शांति बहन क्या करेगी ?
कान में ठूंसेगी !
ये बातें वहां से गुजरते शांति के मामा ने सुनीं । वह उसी दिन दूसरे गांव से आए थे...
मामा जी, आप! कब आए ? मामी कैसी हैं ?
अभी आया... अच्छा हूं... यह रुई क्यों मंगाई ?


शांति ने मामा को अपनी परेशानी बताई
हूं ! आलसी, ऊपर से बातूनी ...बंटाधार ।
कुछ करो मामा जी, मैं तो बहरी हो जाऊंगी ।
मामा-भांजी ने मिलकर एक योजना बनाई । शाम को बोलनसिंह घर आया तो...
मामा जी कह रहे थे, पहाड़ी पर हमारे पुरखों की हवेली थी । वहां हमारी बेशुमार दौलत दबी पड़ी है ।
सच ! कहां हैं, मामा जी ?
मामा जी ने कहा
खजाना सिर्फ इसी पूर्णमासी की रात को मिलेगा । आते-जाते एकदम चुप रहना होगा । वर्ना...
एकदम चुप रहूंगा । बोलूंगा क्यों ?
पूर्णमासी से एक दिन पहले...
सवेरे से फिर बक-बक...
आज तो बोल लेने दे भाग्यवान !


पूर्णमासी के दिन...
अपने-अपने खेत मुझे बेच दो ।
कच्चे घर की जगह महल बनवाना है मुझे ।
महाजन से उसका बगीचा खरीदना है ।
?
?
?
उसी दिन शाम को...
दो बोरे और एक खच्चर भी साथ ले लो । सूरज छिपते ही चल देंगे । और हां रास्ते में...
नहीं बोलूंगा !
रात होते ही मामा और बोलन खच्चर पर बोरियां लाद चल पड़े । आधी पहाड़ी पार करते-करते...
उफ ! कुछ न बोला, तो भेजा और पेट दोनों फट जाएंगे ।... मगर करूं क्या ? बोला तो खजाना...
चुप्पी सहन न हुई, तो बोलन पानी पीने के बहाने दूर स्थित झरने पर चला गया । चट्टान पर बैठ, लगा बक-बक करने...
मैं दुनिया का सबसे बड़ा अमीर । मैं दुनिया का सबसे...


बक-बक करते उसे घंटों हो गए । कब रात बीत गई, पता ही न चला...
दूर से यह सब देखते मामा ने आकर उसे आवाज दी...
तुमने हद कर दी भांजे ! सारा खजाना खो दिया...रात बीत गई । एकादशी आ गई ।
हे भगवान ! क्या हो गया । अरे ! अब मैं इतनी सारी चीजें कैसे खरीदूंगा ?
रोता-झींकता बोलनसिंह मामा के साथ घर लौटा...
कहां है खजाना ? हीरे, मोती...जेवरात ! हमारे पुरखों के...
चुप ! सब मेरी बक-बक खा गई। मुझे कहीं का न रखा !
और उस दिन के बाद से...
बोलनसिंह को क्या हो गया ?
बातूनीपन हवा... नाम बदलना होगा.. चुपसिंह ।
पता नहीं । कुछ न कुछ तो जरूर हुआ होगा !

झील का उपहार

— वैष्णवी



झोंपड़ी में एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। बूढ़े की उम्र थी नब्बे वर्ष और बुढ़िया की अस्सी। एक दिन बूढ़ा लकड़ियां काटने पहाड़ियों पर गया। वह बहुत देर तक चलता रहा। कभी-कभी थकावट से आराम करने बैठ जाता। जंगल में पहुंचकर उसने ढेर सारी लकड़ियां काटीं। फिर गट्ठर ले, नीचे उतरने लगा। धूप बहुत थी। वह धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था।

वह बहुत थक चुका था। उसने लकड़ियों का गट्ठर जमीन पर रख दिया। पास में एक झील देखी। बूढ़े ने झील का ठंडा पानी पिया। फिर एक झपकी लेने झील के किनारे लेट गया। तुरंत उसकी आंख लग गई। जब वह जागा, तो देखा कि सूरज डूब रहा था। उसने लकड़ियों का गट्ठर उठाया और जल्दी-जल्दी चल दिया। उसे आश्चर्य हुआ कि वह बड़ी तेजी से चल रहा था। उसे थकावट महसूस नहीं हो रही थी। लकड़ियों का गट्ठर भी बहुत हलका-सा लग रहा था।

घर पर उसकी बुढ़िया पत्नी इंतजार कर रही थी। काफी देर हो चुकी थी। उसने सोचा कि घर से बाहर जाकर बूढ़े को देखूं। पता नहीं इतनी देर कैसे हो गई ? वह घर से बाहर आई, तो उसने देखा कि एक युवक लकड़ियों का गट्ठर लेकर आ रहा था। उसने युवक से पूछा—"तुमने जंगल में एक बूढ़े को देखा?"

"क्या तू मुझे देख नहीं रही है ? या मुझे नहीं जानती ?"—उसके पति ने कहा।

"मुझ से मजाक मत करो।" बुढ़िया ने कहा—"तुम तो पचास साल बाद मेरे जैसे दिखोगे।"

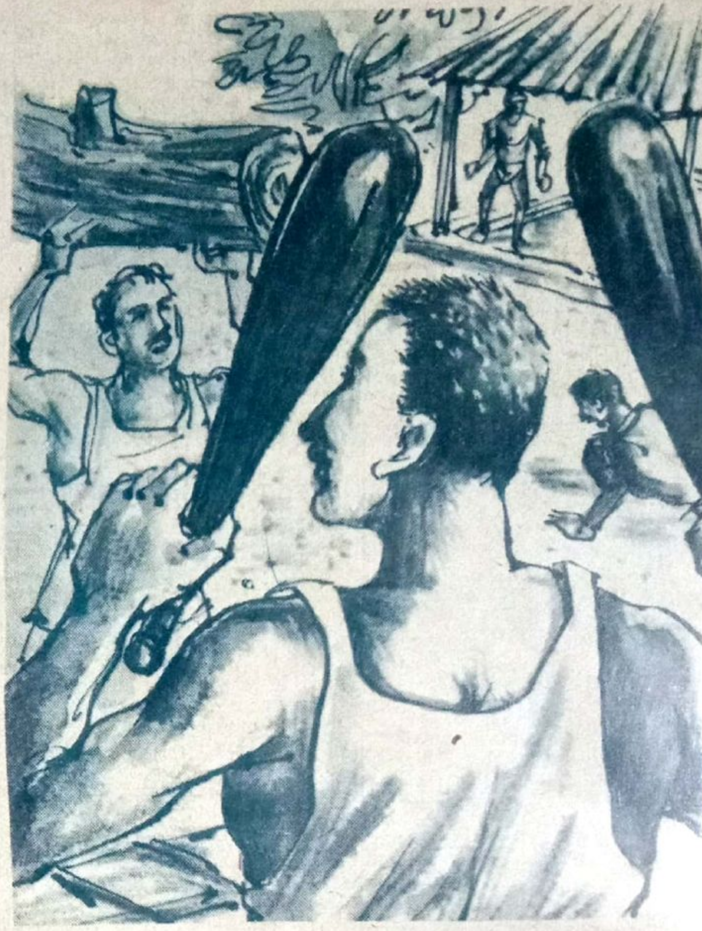
तब बूढ़े की समझ में आया कि उसने उस झील का पानी पिया था, जिसके बारे में उसका पिता कभी बताया करता था। पिता का कहना था कि उस झील का पानी पीते ही बूढ़ा युवक बन जाता है।

बूढ़े ने सारा किस्सा बुढ़िया को बताया। बुढ़िया ने भी उस झील का पानी पीना चाहा। वह तुरंत उस झील को ढूंढ़ने चल दी।

बुढ़िया के जाने के थोड़ी देर बाद ही अंधेरा होने लगा। बूढ़े ने सोचा कि उसे भी बुढ़िया के पास जाना चाहिए। झील के पास जाकर वह इधर-उधर देखने लगा। पर वहां बुढ़िया दिखाई नहीं दी। अपनी पत्नी को वह बहुत देर तक ढूंढ़ता रहा। अचानक झाड़ियों में से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। बूढ़ा उस ओर गया। वहां बुढ़िया के कपड़ों में लिपटी एक बच्ची लेटी रो रही थी। बुढ़िया ने अपने पति से भी अधिक जवान बनना चाहा था इसलिए झील का ढेर सारा पानी पी लिया था। (रूसी लोककथा)

काला जादू

—किरणकुमारी



काशीपुर गांव में एक बड़े पहलवान थे। नाम था जूठन पांडे। कसरत करना, कुश्ती लड़ना, भैंस पालना और बढ़िया भोजन करना उनके शौक थे। उनका अपना परिवार था नहीं। सुबह होते ही उनका अखाड़ा कुश्ती सीखने वाले नौजवानों से भर जाता। गिनतियां गिनते हुए लोग डंड-बैठकें लगाते, मुगदर भांजते और पेड़ों के भारी-भारी तनों को उठा-उठाकर कसरत करते। पूरी तरह थक जाने के बाद कुश्ती लड़ते और जोर आजमाइश करते। पांडे जी के अखाड़े में दो नौजवान बड़े ताकतवर थे। उनकी कुश्ती का बड़ा नाम था। जब उन दोनों की कुश्ती होती, तो आसपास के इलाकों के लोग इकट्ठे हो जाते और दोनों की हिम्मत बढ़ाते। घंटों कुश्ती लड़ने के बाद वे दोनों पस्त होकर गिर जाते। उनके चेले और प्रशंसक उनकी खूब मालिश करते, दूध-मलाई और ठंडाई पिलाते। तब कहीं जाकर वे उठने के काबिल होते। इन पहलवानों में एक तो काशीपुर का ही था और रिश्ते में पांडे जी का भतीजा लगता था। नाम था उसका चिरकुट पांडे। दूसरा बगल के गांव शेरपुर का था। उसका नाम था लंगट पांडे।

जब चिरकुट और लंगट कुश्ती लड़ते, तो देखने वाले समझते कि ये दोनों एक-दूसरे के दुश्मन हैं। लेकिन वास्तविकता यह थी कि दोनों में आपस में बहुत प्रेम और भाईचारा था। वे दोनों एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे। जब अखाड़े में उतरते तो सब-कुछ भूलकर कुश्ती लड़ते। यही शिक्षा गुरु जूठन पांडे ने दी थी और वे उस पर पूरी तरह अमल करते थे।

एक बार वसंत पंचमी के दिन कुंडेश्वर के जमींदार ने बहुत बड़े दंगल का आयोजन किया। बहुत दूर-दूर से अनेक नामी पहलवान अपने दल-बल सहित वहां इकट्ठे होने लगे। जूठन पांडे ने भी अपनी शिष्य मंडली इकट्ठी की और दंगल में भाग लेने चल पड़े।

रास्ते के एक गांव में उनके एक शिष्य की ननिहाल पड़ती थी। शाम का पड़ाव उसी गांव के पास पड़ा। जब खाने का न्योता मिला, तो अन्य लोगों को वहीं अपना खाना बनाने का आदेश देकर, सिर्फ चार लोगों के साथ वह अपने शिष्य के ननिहाल में भोजन करने गए। खूब छककर खाया। सारा भोजन समाप्त हो गया। दुबारा बनाने की तैयारी देखकर जूठन पांडे जी ने अपने शिष्यों को उठने का संकेत दिया। कहां तो इतने पहलवानों को खिलाने की तैयारी थी और कहां चार ही पहलवानों को खिलाना भारी पड़ने लगा!

भोजन के बाद नए बने ईंट के बरामदे में उन्हें बैठाया गया। गांव के कई लोग वहां एकत्र थे। उनमें से किसी ने व्यंग्य किया—"पहलवान, खाना तो खूब खाते हो, कुछ दम भी है?" सुनते ही गुरु जूठन पांडे की भृकुटियां तन गईं। बरामदे के जिस मजबूत पाए के सहारे वह बैठे थे, उस पर उन्होंने पीठ रगड़ दी। पाया दीवार सहित भरभराकर गिरने लगा। सभी लोग घबराकर भाग चले। गुरु ने आदेश दिया—"चलो, अब यहां एक मिनट भी नहीं ठहरेंगे।" वहां से लौटकर वह अपनी मंडली में वापस आ गए।

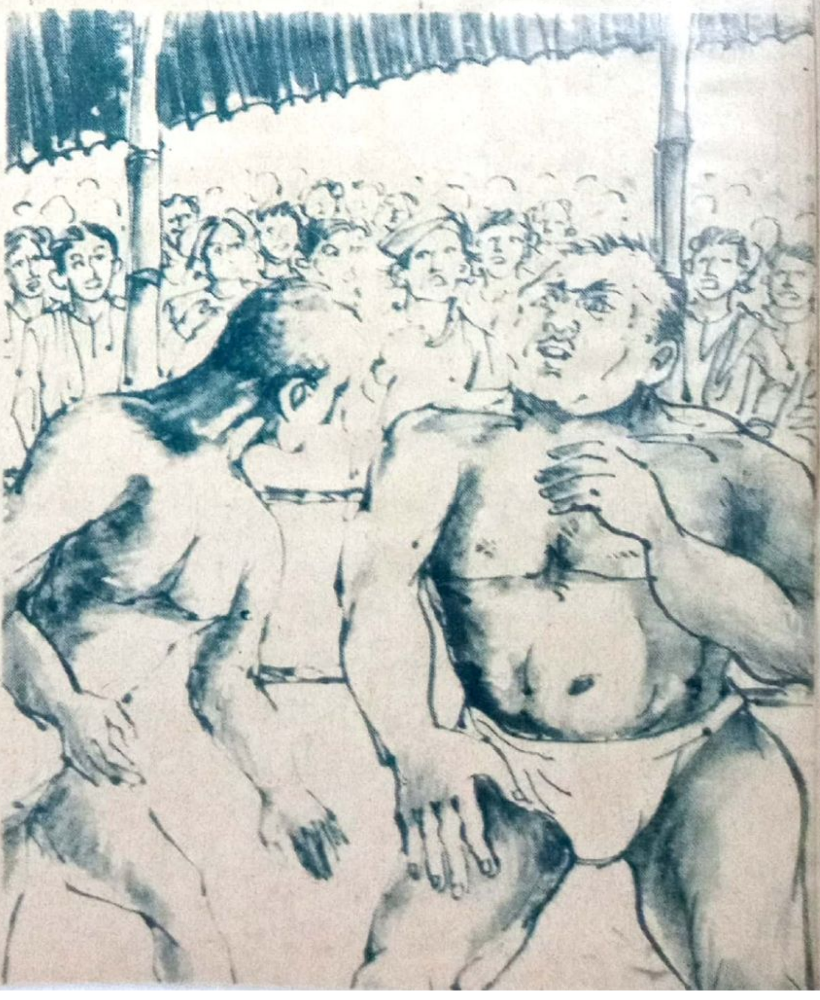
दूसरे दिन सुबह ही टोली ने कुंडेश्वर के लिए

प्रस्थान किया। अगले दिन दूर-दूर से आए पहलवानों से पूरा पंडाल भरा था। कई अखाड़ों पर कुश्तियां हो रही थीं। तीन दिनों की लगातार छंटनी के बाद मात्र दस पहलवान अलग-अलग भार वाले वर्गों में विजयी रहे। उनमें चिरकुट और लंगट भी थे। अब सबसे अच्छे पहलवान को चुना जाना था, जिसे 'शेरे हिंद' की उपाधि दी जाने वाली थी। आखिर चिरकुट और लंगट मैदान में बच गए। दो घंटे की लगातार कुश्ती के बाद भी कुछ फैसला नहीं हो पाया। तब जमींदार ने अपने एक भयानक मंगोलियाई पहलवान को अपने अतिथि गृह से बुलवाया। इस पहलवान को बहुत पैसे देकर जमींदार ने अपनी सेवा में खास इसी दिन के लिए बुलाया था। उस मंगोलियाई पहलवान को देखकर ही बहुत पहलवानों को पसीना छूटने लगा। वह अत्यंत विशाल, भयानक और खूंखार था। उसकी मांसपेशियां लोहे की बनी लगती थीं। उसे अखाड़े के बीच खड़ा करके जमींदार ने घोषणा की—"इन दोनों में से जो भी पांच मिनट से ज्यादा मेरे इस पहलवान से कुश्ती लड़ लेगा, उसे ही 'शेरे हिंद' की पदवी दी जाएगी। यह कुश्ती कल होगी क्योंकि पहलवान थक चुके हैं।"

वहां उपस्थित लोगों में से किसी ने भी मंगोलियाई पहलवान की कुश्ती नहीं देखी थी। साथ ही वह पहलवान चिरकुट और लंगट से डेढ़ गुना ऊंचा और भारी था। यह कुश्ती एक बेमेल कुश्ती थी और जूठन जी को लगा कि उनके अखाड़े की इज्जत उतारने के लिए ही यह खास दंगल आयोजित किया गया था। इससे पहले जमींदार ने ऐसी कुश्ती कभी आयोजित नहीं की थी। अपनी टोली में पहुंचकर काफी देर तक वे सभी विचार-विमर्श करते रहे, लेकिन किसी परिणाम पर नहीं पहुंचे। थक-हारकर सभी सोने चले गए।

सुबह हुई। खूब तैयारी के साथ जूठन पांडे का दल अखाड़े पर एकत्र हुआ। आज की प्रतियोगिता देखने के लिए बहुत दूर-दूर के गांवों से लोग आए थे। रंग-बिरंगे झंडों से अखाड़े को सजाया गया था। पांडे जी के पहलवान पूरी तरह शांत थे। मंगोलियाई पहलवान अखाड़े में उतारा गया। वह ताल ठोकता हुआ अखाड़े का चक्कर लगाने लगा। उसका घमंड देखकर कई पहलवानों का खून खौल उठा, लेकिन उसकी विशालता और भयानक सूरत देखकर किसी को मैदान में उतरने की हिम्मत नहीं हो रही थी। इतने में लंगट पांडे ने अपना ढीला-ढाला चोगा निकाल फेंका और अखाड़े में कूद पड़े। उनको देखते ही मंगोलियाई पहलवान भूखे शेर की तरह उन पर टूट पड़ा। लंगट पांडे फुर्ती से उसका वार बचाते हुए मौके की तलाश करते रहे। पंद्रह मिनट बीत जाने के बाद भी कोई फैसला नहीं हो सका। गुस्से में मंगोलियाई ने लंगट को अपनी फौलादी जकड़ में जकड़ लिया और उनका बायां कान काटने की कोशिश की। बहुत हो-हल्ले के बाद लंगट को छुड़ाया जा सका।

अपनी इस विजय से मंगोलियाई पहलवान और भयावना लगने लगा। चिरकुट अपना गुस्सा और न रोक सका। उसने जमींदार की तरफ देखते हुए घोषणा की—"जिस पहलवान पर आपको इतना गर्व है,



अगर मैंने उसे पांच मिनट में जमीन न सुंघा दी, तो जूठन गुरु का यह शिष्य कभी आपको मुंह नहीं दिखाएगा।''

जमींदार ने इसे चिरकुट की एक बकवास समझा, लेकिन जैसे ही अखाड़े में चिरकुट ने मंगोलियाई पहलवान से हाथ मिलाया और मंगोलियाई ने उसे अपनी तरफ खींचा, उसने कोई ऐसा दांव मारा कि उसका हाथ छूट गया। अपने ही वजन और झटके से वह विशालकाय पहलवान अखाड़े से बाहर जा गिरा। वह गुस्से में भरा ऊपर आया और चिरकुट पर भूखे भेड़िए की तरह झपटा, लेकिन चिरकुट ने फिर ऐसा दांव मारा कि वह हवा में उड़कर बड़े जोर से नीचे गिरा। उसके गिरते ही चिरकुट ने बड़ी फुर्ती से उसके पांवों को एक-दूसरे से इस तरह फंसा दिया कि वह उठने से लाचार हो गया। फिर उसे पलटकर उसकी बांहें भी उसी तरह फंसा दीं,मंगोलियाईदर्द से चीखने लगा। चिरकुट ने अपने दल के पहलवानों को आदेश दिया—''देखो, जमींदार के लोग इसे छुड़ा न पाएं। आधे घंटे के बाद यह कभी कुश्ती लड़ने के लायक नहीं रहेगा।'' तुरंत उन लोगों ने अखाड़ा घेर लिया और पहरे पर खड़े हो गए। दर्शक जोर-जोर से चिरकुट और जूठन गुरु का जय-जयकार करने लगे। जमींदार डरकर घर भाग गया।

आधे घंटे बाद जब मंगोलियाई पहलवान को चिरकुट ने पेच से मुक्त किया तो वह मुश्किल से चलने-फिरने लायक था। धीरे-धीरे थोड़ी ताकत आई, तो वह घिसटकर अखाड़े से उतरा। उसका सारा घमंड चूर-चूर हो गया था।

जूठन गुरु ने चिरकुट पहलवान को गले लगा लिया। उनका चेहरा आंसुओं से भीगा था। उन्होंने कहा—''बेटा, आज तूने माटी की इज्जत रख ली। कुश्ती का 'काला जादू' जो मैंने तुझे कभी सिखाया था, उसे सही समय पर काम में लाकर तूने सबकी लाज रख ली। अब यहां से चलो। इनाम अब हम तुम्हें देंगे।'' वापस आकर जूठन गुरु ने अपनी सारी जमीन-जायदाद चिरकुट के नाम कर दी। ●

सिर पर हाथ

—सन्तोषकुमार शर्मा

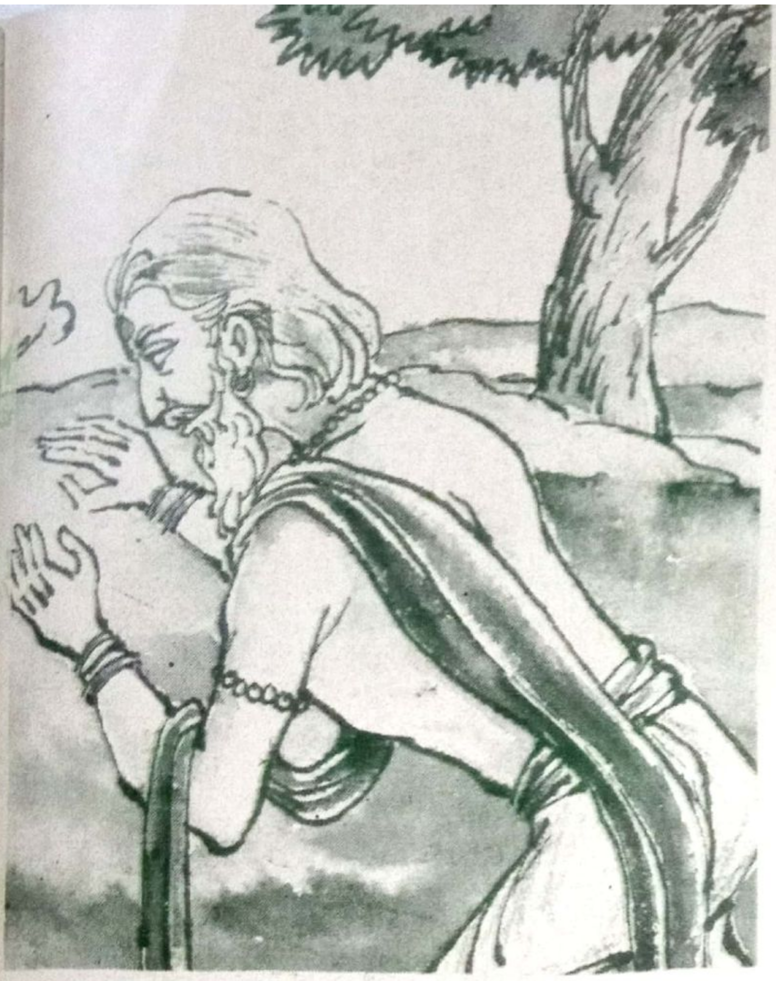


प्राचीन काल में ऋषि दिवाकर के आश्रम में दो बालक पढ़ते थे। एक चंदनपुर राज्य के राजा असितसेन का पुत्र वीरसेन था। दूसरा बालक माधोपुर राज्य के एक गरीब सिपाही का पुत्र चंद्रपाल था। दोनों बालक चतुर और बलवान थे। इसी कारण उन दोनों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लगी रहती थी।

ऋषि दिवाकर ने दोनों शिष्यों को विद्या में पारंगत कर दिया। दोनों की शिक्षा पूरी हो गई। जब गुरु दक्षिणा देने का वक्त आया, तो वीरसेन ने गुरु जी को ढेर सारा धन दिया। चंद्रपाल गरीब परिवार का था। बस,उसने गुरु जी से इतना ही कहा—''गुरुदेव, अभी मैं आपकी गुरु दक्षिणा देने में असमर्थ हूं लेकिन आपकी गुरु दक्षिणा मुझ पर उधार है।''

ऋषि दिवाकर ने दोनों बालकों को आशीर्वाद देकर आश्रम से विदा किया।

कुछ दिनों बाद वीरसेन के पिता असितसेन का निधन हो गया। वीरसेन चंदनपुर का राजा बन गया। उसके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी।



उधर चंद्रपाल माधोपुर राज्य की सेना में सिपाही बन गया। वहां का राजा उसकी योग्यता से कुछ ही दिनों में प्रसन्न हो गया। उसने चंद्रपाल को सेनापति बना दिया। सेनापति बनने के साथ ही वह घमंडी हो गया। अब वह राजा बनने का सपना देखने लगा।

एक दिन माधोपुर का राजा चंद्रपाल के साथ शिकार खेलने गया। पर चंद्रपाल ने जंगल में धोखे से राजा की हत्या कर दी। अब वह स्वयं माधोपुर का राजा बन बैठा।

राजगद्दी पर बैठते ही चंद्रपाल ने अपने पड़ोसी राज्यों पर अधिकार कर लिया।

चंद्रपाल के मन में अपने सहपाठी;चंदनपुर के राजा वीरसेन को हराने की इच्छा दबी हुई थी। एक दिन उसने वीरसेन के पास युद्ध करने या हार मानने का संदेश भिजवाया।

वीरसेन ने इसके उत्तर में संदेश भेजा—'हम शांति के पक्षधर हैं। वैसे भी आप मेरे गुरु भाई हैं। इसलिए आप अपने फैसले पर दोबारा विचार करें।'

लेकिन चंद्रपाल अहंकार के मद में चूर था। वह हर हालत में वीरसेन को नीचा दिखाना चाहता था। इसलिए उसने वीरसेन के पास एक और संदेश भिजवाया—'युद्ध के मैदान में कोई मित्र या भाई नहीं होता। हमारा फैसला अडिग है।'

चंदनपुर के राजा वीरसेन की सेना भी कम ताकतवर नहीं थी। पर वह शांतिप्रिय था। वह खून-खराबे से बचना चाहता था। इसलिए वह चिंता में डूब गया। उसके गुरु दिवाकर ने, जो कि अब राजगुरु बन गए थे, राजा को समझाया—"वीरसेन, युद्ध की तैयारी करो। पर युद्ध शुरू करने से पहले तुम मेरी राह देखना।"

युद्धभूमि में चंद्रपाल और वीरसेन की सेनाएं आमने-सामने खड़ी थीं। युद्ध शुरू होने ही वाला था कि चंद्रपाल की नजर दूर से आते हुए अपने गुरु ऋषि दिवाकर पर पड़ी। चंद्रपाल ने रथ से उतरकर गुरु को प्रणाम किया। ऋषि बोले—"चंद्रपाल, मेरी गुरु दक्षिणा अभी तक तुम पर उधार है।"

चंद्रपाल ने सोचा—'कहीं गुरु जी वीरसेन से युद्ध करने के लिए मना न कर दें।' वह बोला—"गुरुदेव, आप गुरु दक्षिणा में मुझसे कुछ भी मांग सकते हैं। लेकिन इस समय वीरसेन से युद्ध करने से मुझे रोकने का कष्ट न करें।"

गुरु जी बोले—"चंद्रपाल! मैं तुम्हें युद्ध करने से नहीं रोकूंगा। मुझे तुम्हारे धन व राज्य की भी आवश्यकता नहीं है। मुझे तो दक्षिणा में सिर्फ तुम्हारा अहंकार चाहिए।"

यह सुनते ही चंद्रपाल को अपनी गलतियों का भान हो गया। तुरंत उसने अपना मुकुट गुरु दिवाकर के चरणों में रख दिया और उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

ऋषि दिवाकर ने चंद्रपाल को उठाया। उसके सिर पर राजमुकुट रख दिया।

"अहंकार मनुष्य की बुद्धि को नष्ट कर देता है। आज तुमने अहंकार को तज कर मुझे अनूठी गुरु दक्षिणा दी है।"—कहते हुए उन्होंने प्यार भरा हाथ चंद्रपाल के सिर पर रख दिया। ●

सोना-पानी

—दिलीपकुमार तेतरवे



मगध का राजा अग्रसेन राजकाज में कुशल था। उसका खजाना हमेशा भरा रहता। उसकी सेना का सभी लोहा मानते थे। उसके राज्य में विद्वान, लेखक, कवि आदि का खूब सम्मान होता था।

एक दिन राजा अग्रसेन के दरबार में सूर्यभट्ट नाम का एक विद्वान आया। उसने पानी की महत्ता पर कई बातें बताईं। राजा ने खुश होकर सूर्यभट्ट को सोने की सौ मुद्राएं पुरस्कार में दीं।

राजा का कोषपाल जीवक रानी रूपमती का मुंहलगा था। उसने रानी को तुरंत सूचित कर दिया कि राजा ने सूर्यभट्ट को सोने की सौ मुद्राएं पुरस्कार में दी हैं। रानी को दान-धर्म और पुरस्कार में कम विश्वास था।

राजा अग्रसेन जैसे ही रानी के कक्ष में पहुंचा, रानी ने क्रोध में भर उससे कहा—"राजन, आजकल आप सोना और पानी एक तराजू से तोल रहे हैं?"

राजा ने पूछा—"रूपमती, तुम यह क्या कह रही हो?"

"आज किसी ने दरबार में पानी के बारे में कुछ बताया, तो आपने उसे सोने की सौ मुद्राएं दे दीं।"—रानी ने व्यंग्य करते हुए कहा।

राजा ने रानी को समझाते हुए कहा—"रूपमती, आदमी के जीवन में पानी का महत्व सोने से ज्यादा है। आदमी सोने के बिना जीवित रह सकता है, लेकिन पानी के बिना नहीं। फिर पानी का संचय करना तो राजा का धर्म है।"

रानी ने हंसते हुए कहा—"राजन, आप भूल रहे हैं। अगर आज आपका खजाना खाली हो जाए, तो सारा राज-काज ठप हो जाएगा। सोना पाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन पानी के लिए बस एक घड़े को कुएं में डालना पड़ता है।"

राजा अग्रसेन ने रानी से बहस करना ठीक नहीं समझा। उसने कहा—"रूपमती, मैं इस विषय पर तुमसे छह महीने के बाद बात करूंगा।"

राजा अग्रसेन ने सूर्यभट्ट की सलाह पर अमल करते हुए पूरे राज्य में कई नहर, तालाब आदि खुदवा दिए। राज्य की नदियों के पानी को इकट्ठा करने के लिए बांध भी बनवाए।

वर्षा का मौसम आया और चला गया, लेकिन पानी नहीं बरसा। राजा अग्रसेन फिर भी निश्चिंत था। उसके राज्य के किसान नहर, बांध और तालाबों में संचित जल का लाभ उठाकर खेती में लगे हुए थे।

एक दिन राजा ने रानी रूपमती से कहा—"रानी, अब तो तुमने देख ही लिया कि पानी का कितना मोल है? मैं समझता हूं कि सूर्यभट्ट को सोने की सौ मुद्राएं देना उचित था।"

रानी को धन का अहंकार था। वह बोली—"राजन, आप यह क्यों भूल जाते हैं कि नहर, तालाब और बांध बनवाने के लिए आपको खजाने का सोना ही खर्च करना पड़ा है। सोना न होता, तो सूर्यभट्ट आपके पास पानी का महत्व बतलाने नहीं आता। सूर्यभट्ट ने आपको जो कुछ भी बतलाया, सोना पाने के लिए ही बतलाया था।"

राजा ने खिन्न होकर कहा—"रूपमती, इस विषय पर छह माह के बाद बातचीत करने का निर्णय लिया था। अभी छह माह बीतने में दो दिन शेष हैं।"

रानी ने हंसते हुए कहा—"राजन, दो दिन के

बाद भी मैं यही कहूंगी।''

रानी रूपमती को आखेट का शौक था। वह दूसरे दिन अपनी कुछ सहेलियों और दो सैनिकों के साथ निकल पड़ी। घने जंगल में रानी को एक हिरन दिखाई पड़ा। वह अपना घोड़ा हिरन के पीछे दौड़ाने लगी। भाग-दौड़ में न जाने कब रानी की सहेलियां और सैनिक रानी से अलग हो गए। रानी जब हिरन को अपने तीरों का निशाना नहीं बना पाई, तब उसने पीछे मुड़कर देखा। उसकी सहेलियों और सैनिकों का कहीं अता-पता ही नहीं था। वह घबरा गई। भय के मारे उसका कंठ सूखने लगा। उसने पानी के लिए अपनी नजर इधर-उधर दौड़ाई। ऊंचे टीले पर चढ़कर भी देखा, मगर कहीं पानी नजर नहीं आया। उसे लग रहा था—'अगर मैंने थोड़ी देर और पानी नहीं पिया, तो मैं प्यासी ही मर जाऊंगी।'

सहसा रानी को एक साधु अपनी ओर आता नजर आया। साधु के कमंडल को वह ललचाई नजर से देख रही थी। साधु जैसे ही उसके निकट पहुंचा, उसने साधु को पुकारते हुए पूछा—''महात्मा जी, आपके कमंडल में पानी तो होगा ?''

साधु ने बताया—''हां देवी।''

रानी ने अपना कंठहार साधु की ओर बढ़ाते हुए कहा—''महात्मा जी, मेरे कंठहार के बदले, आप अपना पानी से भरा कमंडल मुझे दे दें।''

''देवी, मैं यह कंठहार लेकर क्या करूंगा ?''—साधु ने पूछा।

रानी ने घमंड के साथ कहा—''महात्मा जी, यह कंठहार नौ लाख मुद्राओं का है।''

साधु समझ गया कि रानी को अपने धन का घमंड है। उसने कहा—''लेकिन, मेरे कमंडल का जल तो अमूल्य है। मैं इसे नौ लाख के कंठहार के बदले क्यों दे दूं ?'' यह कहकर साधु अपने रास्ते पर बढ़ गया।

कुछ देर बाद प्यास के मारे रानी का और बुरा हाल हो गया। वह सोचने लगी—'थोड़ी देर के बाद मैं प्यासी ही मर जाऊंगी। फिर मेरे लाखों के सोने के जेवरातों का क्या होगा ?'

''देवी, इस जंगल में अकेली क्या कर रही हो ?''—एक राही की आवाज ने रानी का ध्यान अपनी ओर खींचा।

रानी ने बड़ी मुश्किल से कहा—''राही, मैं प्यास से मरी जा रही हूं। तुम मुझे दो घूंट पानी पिला सकते हो ?''

''देवी, आपके तन पर इतना सोना है। फिर भी आप पानी के लिए हाथ फैला रही हैं !''

''इस समय मेरे लिए पानी दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।''—रानी बोली।

राही ने रानी को कहा—''देवी, अभी तो आप एक साधु से पानी खरीदने की बात कर रही थीं। लेकिन अब आप पानी को अनमोल बतला रही हैं।''

''तब मैं नहीं, मेरा अहंकार बोल रहा था।''—रानी ने सिर झुकाते हुए कहा।

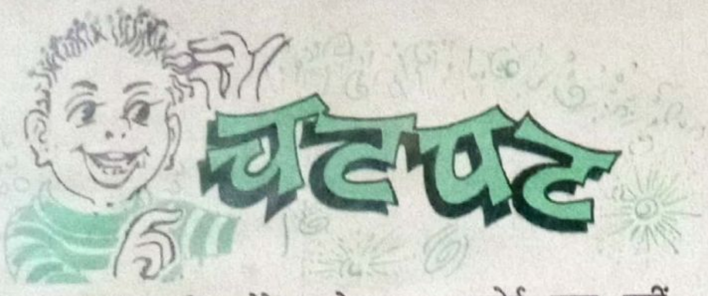
राही ने पीतल का एक पात्र निकाला और उसे रानी की ओर बढ़ाते हुए कहा—''देवी ! लीजिए, पानी पी लीजिए।''

रानी रूपमती ने पात्र अपने हाथ में लेकर एक ही सांस में पानी पी डाला। पानी पीकर वह बोली—''राही, आपने पानी पिलाकर मेरी जान बचाई है। आज पानी मुझे अमृत-सा लगा। क्या मैं आपका नाम जान सकती हूं ?''

राही ने कहा—''मेरा नाम सूर्यभट्ट है।''

रानी आश्चर्य से सूर्यभट्ट को देखती रह गई। सूर्यभट्ट ने कहा—''देवी, आप सोच रही हैं कि जो व्यक्ति पानी पर भाषण देकर सोने की सौ मुद्राएं पुरस्कार में ले सकता है। वह पानी पिलाने का क्या मूल्य लेगा ? मैं विद्या-दान के बदले पुरस्कार लेता हूं। लेकिन प्यासे को पानी पिलाना तो मानव का धर्म है।'' यह सुन, रानी ने झट सूर्यभट्ट के चरण छू लिए।

उसी समय राजा अग्रसेन रानी को खोजता हुआ वहां आ पहुंचा। राजा ने रानी को सूर्यभट्ट के चरण छूते देखकर समझ लिया कि अब रानी को पानी की कीमत अवश्य मालूम हो गई होगी। ●



चटपट

□ अधिकारी—मेरे रहते तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

कर्मचारी—पर आप तो अगले महीने सेवा-मुक्त होने वाले हैं। उसके बाद मेरा क्या होगा?

□ पत्नी—यदि चोर दरवाजा तोड़कर घर में आ जाए तो...?

पति—तो क्या! मकान-मालिक दूसरा दरवाजा लगवा देगा।

□ एक आदमी—आश्चर्य है, आज तक तुमने मेरा नाम नहीं सुना।

दूसरा आदमी—हां, क्योंकि मुझे कुछ ऊंचा सुनाई देता है।

□ मां—बेटा, आज मैं तुम्हारी कोई शिकायत नहीं सुनना चाहती। बोलो, तुम क्या कहते हो?

बेटा—यही कि मैं आज स्कूल न जाऊं।

□ एक मित्र—मैं तुमसे दोस्ती कैसे तोड़ सकता हूं!

दूसरा मित्र—तो फिर मुझे ही तुमसे दोस्ती तोड़नी पड़ेगी।

□ चोर—यदि मैं अपने सारे अपराध कबूल कर लूं, तो भी आपको क्या फायदा होगा?

दारोगा—फायदा यही होगा कि मेरी तरक्की हो जाएगी।

□ ग्राहक—अंगूर तो खट्टे हैं, मुझे नहीं चाहिएं।

दुकानदार—भाई साहब, लेकिन अभी तो आपने बेर चखकर देखा था, फिर अंगूर कैसे खट्टे हो गए!

□ विकास—सौरभ, इस बार मेरे जन्म दिन पर तुम क्या उपहार दोगे?

सौरभ—कल ही तुमने नए जूते खरीदे हैं। सोचता हूं कि इस बार मैं तुम्हें पालिश की एक डिबिया दे दूं।

□ सुरेश—आपने निशानेबाजी कहां से सीखी।

निशानेबाज—घर से। मैं बचपन में गुलेल से घर की चीजों पर निशाने का अभ्यास करता था।

□ एक चित्रकार—यह चित्र तो तुमने बढ़िया बनाया है। लेकिन एक कमी रह गई।

दूसरा चित्रकार—हां, हुआ यूं कि चित्र बनाते समय तुम्हारी याद आ गई और चित्र में यह कमी रह ही गई।

□ राहगीर—तुम्हारा घोड़ा घास क्यों नहीं खा रहा है?

तांगे वाला—और दिन तो खा लेता था। पर तुम जैसी भारी-भरकम सवारी को देख, इसकी भूख गायब जो हो गई है।

□ मकान मालिक—तुम दिन में भी सोते रहते हो?

किराएदार—आपके मकान में मच्छर बहुत हैं। वे रात में सोने नहीं देते। मजबूरन दिन में सोना पड़ता है।

□ एक पड़ोसी—भाई साहब, आप रात में गाना कब से गाने लगे?

दूसरा पड़ोसी—जब से यहां का पहरेदार छुट्टी पर गया है, तभी से।

□ छात्र—सर, आप वही प्रश्न बताने का कष्ट करें जो परीक्षा में पूछे जा सकते हैं।

अध्यापक—प्रश्न तो मैंने बता दिए हैं। लेकिन उनके उत्तर तुम लोगों को ही लिखने होंगे।

□ एक सहेली— अब जब भी यहां आना, तो पत्र जरूर डाल देना।

दूसरी सहेली— नहीं, क्योंकि पहले जब भी मैं पत्र डालकर यहां आती थी, तो घर पर ताला लगा मिलता था।

□ एक मित्र—मुझे तुम जैसे मित्रों की हमेशा जरूरत रहती है?

दूसरा मित्र—पर मुझे तो तुम लोगों की कभी-कभी जरूरत होती है। वह भी तब जब कोई और बेवकूफ बनने को तैयार नहीं होता।

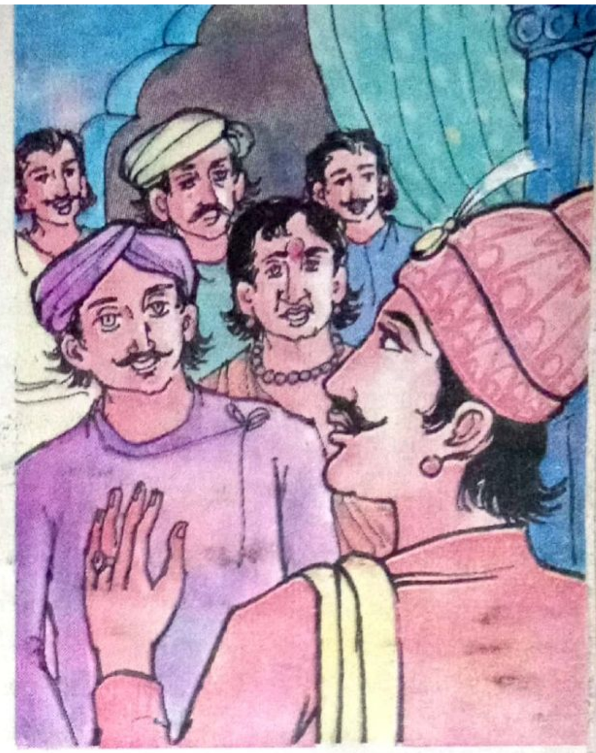
□ सम्पादक—आज कल आप बहुत अच्छा लिख रहे हैं।

लेखक—धन्यवाद, आपने जो पारिश्रमिक में रुपए दिए थे, कल उन्हीं रुपयों से बहुत बढ़िया पैन खरीद कर लाया था। उसी पैन से यह सब लिखा है।

Scanned with CamScanner

तेनालीराम (३२४)

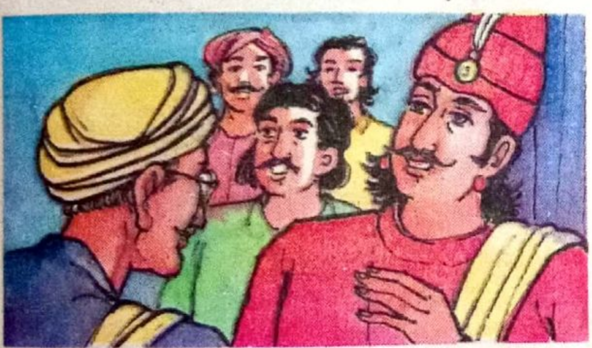
छत से छलांग



हर बड़े त्योहार पर राजा कृष्णदेव राय कोई न कोई प्रतियोगिता करते थे। विजयी प्रतियोगी को राजकीय सम्मान प्राप्त होता था।

होली के अवसर पर राजा ने बड़ी विचित्र प्रतियोगिता की घोषणा की—जो होली के दिन महल की सबसे ऊंची छत से छलांग लगाकर नीचे आने पर भी सकुशल रहेगा, उसे मुंहमांगा पुरस्कार दिया जाएगा।

महल की सबसे ऊंची छत जमीन से लगभग १०० फुट ऊंची थी। वहां से छलांग लगाने वाले का सकुशल क्या, बच पाना भी सम्भव न था। जो इस घोषणा को सुनता, चुप रह जाता। सोचता—राजा सनका गए हैं। दरबारी भी यही सोचते थे, पर राजा से कहे कौन ?



होली में दो दिन रह गए, तो राजा ने दरबार में कहा—"ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी प्रतियोगिता के लिए कोई भी न आया हो। यह तो हमारी घोषणा का अपमान है।"

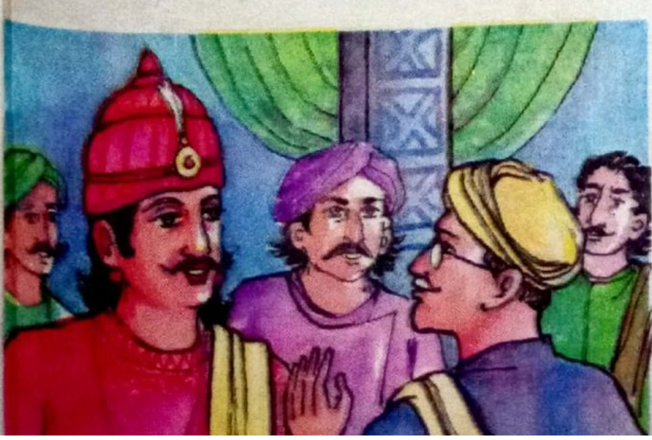
"मैं छलांग लगाऊंगा महाराज।"—अचानक तेनालीराम बोला।

राजा सन्न। दरबारी सन्न। इतने ऊंचे से छलांग लगाने पर तो तेनालीराम की हड्डी-पसली तक न बचेगी। मगर तेनालीराम कहता रहा—"मुझे महाराज की घोषणा की लाज रखनी है।"



आया होली का दिन। सवेरे से ही राजमहल के सामने भीड़ लगनी शुरू हो गई। निर्धारित समय पर तेनालीराम महल की सबसे ऊंची छत पर पहुंच गया। कुछ लोग परेशान थे, तो कुछ खुश कि चलो, आज रास्ते का कांटा अपने आप दूर हो जाएगा।

जैसे ही तेनालीराम ने छलांग लगाई, पलक झपकते ही महल के नीचे मैदान के चारों कोनों में खड़े लोगों ने धरती के ऊपर एक बड़ा-सा जाल तान दिया। तेनालीराम सीधा उस जाल पर गिरा और बच गया।



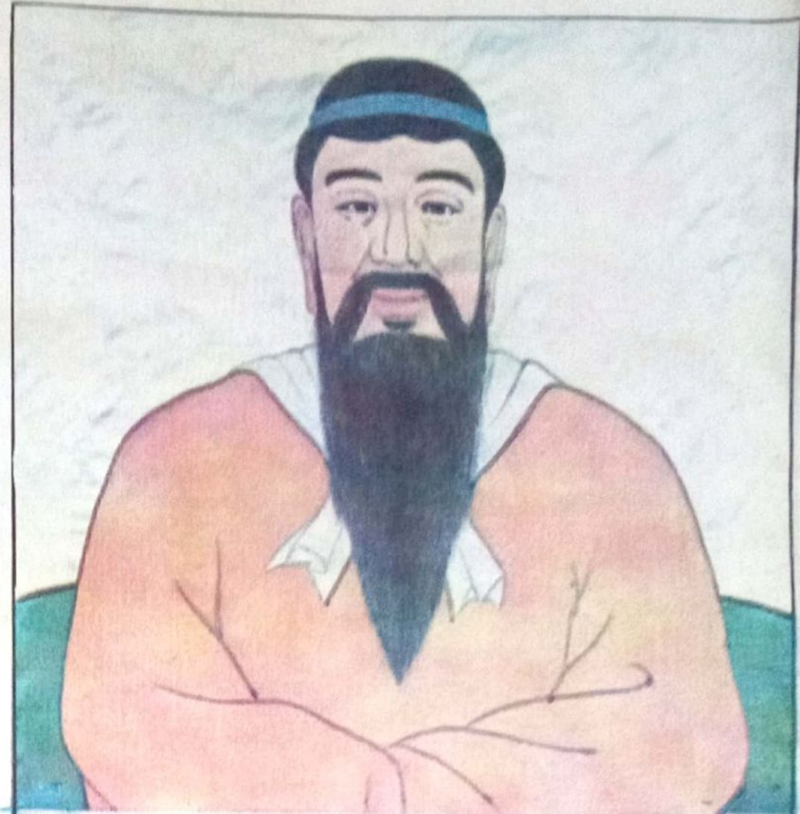
राजा मुसकरा उठे। तेनालीराम ने आकर उन्हें प्रणाम किया तो वह बोले—"तुम तो जाल पर गिरे।"

"घोषणा में जमीन पर गिरने की नहीं महाराज, नीचे आने पर सकुशल रहने की शर्त थी।"—तेनालीराम मुसकराकर बोला—"वह मैंने पूरी कर दी।" ●


दादाजी को है पसंद, दादीमाँ को भी सही,
पापा भी चोरी से खाते, मम्मी तो कम नहीं
हमसब भी जिसके मतवाले, है वही मॉर्टन यही॥
MORTON
SWEETS
उस दिन क्या ही आनन्ददायक स्क्रेबल खेल हो रहा था और उसे जमाने का श्रेय था मॉर्टन को।
मेरे परिवार की तो सदा से ही पहली पसंद रही है—मॉर्टन।
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध,
ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर।
चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ,
लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध।
आहहा! क्या लाज़वाब स्वाद!
जीवन का अनुपम माधुर्य
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
CC/M-3/93 HIN
चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एण्ड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

भगवान का शहर

—दिविक रमेश



स्वर्ग के राजा का एक बेटा था । उसका नाम ह्वान उंग था । राजकुमार ह्वान उंग बहुत ही बुद्धिमान और साहसी था । वह हमेशा धरती पर जाने की सोचता था । एक दिन धरती की ओर देखकर उसने पिता से पूछा—"वहां कौन रहता है ?"

पिता ने बताया—"बहुत से प्राणी—पशु, पक्षी, मछलियां, पेड़ और अजीबोगरीब प्राणी, जिन्हें आदमी कहते हैं ।" यह जानकर तो राजकुमार का मन धरती पर जाने के लिए और भी मचल उठा । राजा ने भी उसकी इच्छा पूरी करनी चाही । उसने धरती के तीन पहाड़ों को ध्यान से देखा । उनमें से ते बेग पहाड़ को चुना, जो कोरिया के उत्तरी भाग में था । तब उसने राजकुमार को बहुत से सेवकों के साथ धरती पर जाने की अनुमति दी ।

राजकुमार सेवकों के साथ धरती पर उतरा । वह चंदन के वृक्ष पर उतरा था । उसने वहीं अपना एक पवित्र शहर बसाया । उसका नाम रखा—भगवान का शहर । अपने को उसने चोन्वांग नाम दिया, जिसका अर्थ था—स्वर्ग का राजा ।

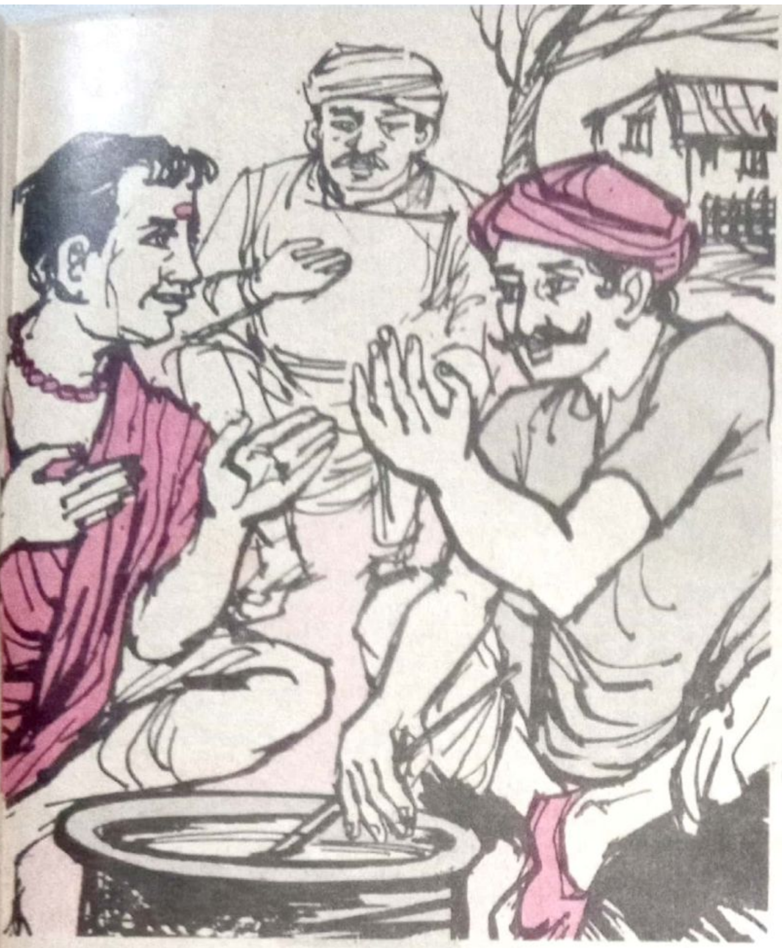
उन्हीं दिनों एक गुफा में भालू और शेर रहते थे । वे मानव बनना चाहते थे । उन्होंने प्रार्थना की । स्वर्ग के राजकुमार का मन पिघल गया । उसने कहा—"मानव बनने के लिए तपस्या करनी होगी । मानव बनना बहुत कठिन काम है । बहुत धैर्य चाहिए ।" दोनों ने हां कर दी । तब उसने कुछ जड़ी-बूटियां देकर कहा—"तुम्हें केवल इस पवित्र भोजन के सहारे सौ दिन तक गुफा में रहना होगा ।"

भालू और शेर खुशी-खुशी गुफा में चले गए । दोनों में भालू ज्यादा धैर्यवान था । उसने अपनी भूख को सहन किया । लेकिन शेर बुरी तरह ऊब गया । जब नहीं सहा गया,तो वहां से भाग गया । इस प्रकार वह शेर से मानव नहीं बन सका । भालू सौ दिन बाद एक सुंदर युवती में बदल गया । उसने प्रार्थना की । राजा ने उसे अपनी रानी बना लिया । रानी ने एक बेटे को जन्म दिया । उसे नाम दिया गया—दन गुन । दन गुन का अर्थ था—चंदन की लकड़ी का राजा ।

प्रजा ने राजकुमार दन गुन के जन्म पर खूब खुशियां मनाईं । बड़ा होकर दन गुन बहुत ही सुंदर और बहादुर बना । उसने अपने पिता को वचन दिया कि वह एक सुंदर देश का निर्माण करेगा । उसने घर छोड़ दिया । ते डांग नदी के दक्षिणी किनारे पर यात्रा की । इस नदी के तट पर उसने अपनी राजधानी बनानी शुरू की । उसका नाम रखा—प्योंगयोंग । साथ ही अपने राज्य का नाम चोसन रखा । चोसन का अर्थ है—सुबह की शांति । और इस प्रकार जन्म हुआ, सुबह की शांति के देश कोरिया का ।

दन गुन कोरिया का पहला मानव राजा था । वह अनेक वर्ष तक राज्य करता रहा । मृत्यु के बाद वह पहाड़ी आत्मा बन गया, जिसे कोरिया में सन सिन कहते हैं । आज भी ते बेग पहाड़ (अब उसे मयोह्यंग सन कहते हैं) पर एक गुफा है, जिसे दन गुन गुफा के नाम से पुकारा जाता है । दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल के पास भी दन गुन के स्मृति-चिह्न देखे जा सकते हैं । कोरिया के जन्म की कहानी खोजने वाला एक बौद्ध भिक्षु था । उसका नाम था इल योन ।


प्यारे बच्चों !
कोरस की मदत से घर में मछलियाँ पकड़ो... मौज उड़ाओ !
प्रिट-पावर के साथ !
ये झूमता-लहराता डैंगलर और अन्य रंगरंगीली चीज़ें कोरस की प्रिट ग्लू स्टिक से बनाएँ. झटपट होनेवाला, साफ़-सुथरा आसान तरीका. न गंदगी, न किचपिच. स्कूल प्रोजेक्ट्स, पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड्स, हस्तकला और उपहारों के लिए शानदार ... बस, अपनी कल्पनाशक्ति का भरपूर इस्तेमाल करो और एक से बढ़कर एक चीज़ें बनाओ. फिर सुनो तारीफ़ अपने शिक्षकों और मित्रों से. कोरस-प्रिट ग्लू स्टिक के साथ जीभर कर मनपसंद चीज़ें बनाओ. सभी स्टेशनरी दुकानों और जनरल स्टोर्स में उपलब्ध.
कोरस
कोरस (इंडिया) लि. का उत्कृष्ट उत्पादन
Stick with Pritt
FROM THE HOUSE OF KORES
The International Favourite
Pritt®
SUPER
Glue Stick
Kores®
मुफ़्त!
तैरती मछली बनाने का तरीका दिखाने वाली मार्गदर्शिका* के लिए अपने नाम व पते के साथ प्रिट के ढक्कन पर लगा स्टिकर और रु. 1 की टिकट वाला लिफाफा नीचे दिये हुए पते पर भेजिए
*31 जुलाई 1995 तक
कोरस (इंडिया) लि.
पो. बॉ. नं. 6558, वर्ली, बंबई 400 018
प्रिट से चिपकाइए. यही हैं अंतरराष्ट्रीय पसंद !
AKA/672-HN



सपने में खीर

—जसविंदर शर्मा

किसी गांव में तीन दोस्त रहते थे—एक पंडित, एक बनिया और एक जाट। तीनों में बहुत गहरी छनती थी। दिन भर तो हरेक अपने काम-धंधे में व्यस्त रहता, लेकिन शाम को वे इकट्ठे होते। हुक्का गुड़गुड़ाते। मिल बैठकर बतियाते तथा अपने सुख-दुःख को एक-दूसरे से बांटते।

एक दिन जाट ने कहा—"पंडित जी, अपनी पत्री देखकर बताओ कोई नई बात। कोई अच्छा शगुन मुहूर्त। यह बारिश तो रुकने का नाम ही नहीं लेती। कोई ऐसी बात बताओ कि मजा आ जाए, मैं तो दुखी हो गया इस बरसात की झड़ी से।" पंडित जी ने उसका दिल रखने के लिए पत्री तो निकाल ली, मगर अनपढ़ जाट को शगुन मुहूर्त, वेद या नक्षत्रों की बातें क्या समझ में आतीं? पंडित जी को अपने पिता की एक बात याद आ गई, सो उन्होंने वही कह सुनाई—"सुन भई जाट। शास्त्रों में कहा गया है—सावन-भादों खीर न खाई, क्यूं जन्म लिया भाई।"

सुनकर जाट के मुंह में भी पानी आ गया। बोला—"यह तो आपने खूब बताया पंडित जी। सचमुच खीर खाने का असली मौसम तो सावन-भादों ही है। आपने हमें इस अपराध से उबार दिया, अब कभी भी कोताही नहीं होगी। चलो, कल खीर बनाते हैं। दूध मैं ले आऊंगा। पंडित जी चावल ले आएंगे, लाला जी चीनी, किशमिश-बादाम-पिस्ता आदि ले आएंगे।"

बात तय हो गई। अगले दिन शाम को तीनों वायदे के अनुसार अपनी-अपनी चीजें ले आए। जाट के खेत पर ही खीर बनाने की तैयारी होने लगी। एक बड़े-से पतीले में खीर पकाई गई। सूखे मेवे, नारियल, मगज, बादाम आदि मिलाए गए। जाट खाने की जल्दी में था। लेकिन पंडित जी फिर अपनी पत्री लेकर बैठ गए। बोले—"शुभ मुहूर्त तो प्रातःकाल पांच बजे का है। वैसे भी ठंडी खीर खाने से खीर का आनंद चौगुना हो जाता है।" अब पंडित जी की बात भला कैसे टाली जाती। वह ठहरे ज्ञानी-ध्यानी। तय हुआ कि खीर ढककर रख दी जाए। तीनों एक जगह सो जाएं। सुबह ब्राह्म मुहूर्त में खीर का आनंद लिया जाए। किस्से-कहानियां कहते तीनों सो गए। मगर जाट की तो नींद ही उड़ी हुई थी। खीर में डले हुए सूखे मेवे, नारियल, किशमिश उसे चैन नहीं लेने दे रहे थे। कई बार उसने पंडित जी की बात याद की कि खीर खाने का सही शगुन तो सुबह का है। कहीं पाप न चढ़ जाए। फिर अपने दोस्तों से दगा करना भी ठीक नहीं। उसने बैचेनी के मारे कई करवटें बदलीं, मगर सब व्यर्थ।

आखिर वह उठा। चुपके से पंडित जी तथा लाला जी की चारपाई के पास जाकर ध्यान से देखा कि वे तो गहरी नींद में सोए हुए हैं। एक बार फिर उसकी आत्मा ने धिक्कारा कि वह गलत कर रहा है। अपने दोस्तों के हिस्से की चीज बिना पूछे खा रहा है। मगर भूख और स्वाद के आगे वह बेबस हो गया था।

पतीले की सारी खीर खाकर ही उसे चैन मिला । इतनी सारी स्वाद भरी खीर उसने पहले कभी नहीं खाई थी । पतीले को अच्छी तरह से धो-मांजकर पुनः अपनी चारपाई पर आ लेटा । जल्द ही उसे नींद आ गई ।

अभी पौ फटी ही थी कि पंडित जी की आंख खुल गई । उन्हें वैसे भी ब्राह्म मुहूर्त में उठने की आदत थी । प्रभु का नाम लेकर उन्होंने लाला जी को आवाज दी । 'राम-राम' कहते हुए लाला जी भी उठ बैठे । उन्होंने जाट को भी उठाना चाहा मगर जाट अपने किए पर लज्जित था । इसलिए चादर ताने लेटा रहा ।

पंडित जी रात को देखे सपने का बयान करने लगे—"लाला जी, मैं रात को सपने में काशी गया । वहां पर बहुत बड़ा धार्मिक सम्मेलन चल रहा था । बड़े-बड़े विद्वानों ने अपने भाषण दिए । सुनकर आत्मा प्रसन्न हो गई ।"

लाला जी बोले—"वाह ! पंडित जी, आपका तो जीवन सफल हो गया । मगर मैं सपने में काबुल-कंधार गया हुआ था । वहां से मैंने बहुत सारे मेवे खरीदे । जब काफिला लेकर वापस आ रहा था, तो रास्ते में डाकुओं ने सारा सामान लूट लिया ।"

इतने में जाट भी अपनी चादर उतार कर बैठ गया । बोला—"पंडित जी, मेरा सपना भी सुन लीजिए । रात को सोते हुए मैंने एक बड़ा दैत्य देखा । वह राक्षस मेरी चारपाई के पास आकर खड़ा हो गया । मुझे उठाकर बोला—'उठ, चल खीर खा ।' मैंने कहा—'मैं ऐसा नहीं कर सकता । उसमें मेरे दोस्तों का भी हिस्सा हैं ।' मगर राक्षस कहां सुनने वाला था। उसका भयंकर चेहरा, खौफनाक आंखें तथा बड़े-बड़े नाखून देखकर, मुझे जबरन सारी खीर खानी पड़ी ।" लाला जी बीच में बोले—"भई, हमें जगा लिया होता ।" जाट भी हाजिर जवाब था । बोला—"लाला जी, आप तो काबुल-कंधार की तरफ गए हुए थे और पंडित जी काशी में भाषण सुन रहे थे । तब मैं आप लोगों को कैसे बुलाता ।" जाट की बात सुनकर वे दोनों हंसने लगे । क्या करते, खीर तो खत्म हो चुकी थी ।

डर गायब

—शम्सुद्दीन

किंटू अपने माता-पिता और पांच भाई-बहनों के साथ बस्तर की केशकाल की घाटी में रहता था । वे कच्चे मकान में रहते थे । जंगल में उनका घर सबसे बड़ा था, क्योंकि किंटू के पिता किटुम्बा आदिवासियों के मुखिया थे ।

किंटू, उसके दो भाई और तीन बहनें वही सीखतीं जिनकी बड़ी होने पर उन्हें आवश्यकता हो सकती थी । किंटू को सबसे अधिक सीखना पड़ता था, क्योंकि वह सबसे बड़ा लड़का था । बड़े होने पर उसे ही मुखिया बनना था । मुखिया का भाला चलाने में माहिर होना आवश्यक था । किंटू प्रतिदिन झाड़ पर लाल निशान बनाकर उस पर अपना भाला फेंका करता ।

किंटू ढोल बजाना भी सीखता था । वह ढोल पर अपने हाथ मारकर कई प्रकार की आवाजें निकालता, जैसा कि आदिवासियों में गांव-गांव में संदेश भेजते समय किया जाता था । कभी-कभी ढोलों को जोर-जोर से बजाकर संदेश दिया जाता—'सावधान ! सावधान ! दुश्मन धावा बोलने आ रहे हैं ।' कभी कहा जाता—'पूर्व की ओर से बड़ा तूफान आ रहा है ।'

किंटू ने कई प्रकार के नाच भी सीखे । उसके पिता ने उसके लिए लाल चमकदार पंखों का एक सुंदर मुकुट बनवा दिया था ।

केशकाल की घाटी के लोग रात में आग जलाकर उसके चारों तरफ बैठ जाते । वे बातें करते और गाने गाते थे । जब कबीले के बूढ़े आदमी शेर और चीतों के शिकार की गाथाएं सुनाते, तो किंटू उन्हें सुनकर भय से कांपने लगता ।

कभी-कभी किंटू रात में जाग जाता । वह जंगली जानवरों की आवाजें सुनकर चुपचाप पड़ा रहता । वह यह सोचकर घबरा जाता कि जब वह बड़ा होगा, तो उसके पिता शिकार करने जंगल भेजेंगे । वह यह भी

जानता था कि मुखिया के लड़के को डरपोक नहीं होना चाहिए।

एक दिन किंटू ने सोचा—'उसे किसी आदिवासी जादूगर के पास जाकर निडर होने का जादू सीखना चाहिए।' यह सोच, वह घर से निकल गया। फिर वह एक आदिवासी जादूगर के पास पहुंचा।

वह आदिवासी जादूगर बहुत बूढ़ा और बुद्धिमान था। उसने किंटू को देखा। किंटू घबरा गया। जादूगर ने उससे पूछा—"मुखिया के लड़के, तुम मेरे पास क्यों आए हो?"

किंटू ने उत्तर दिया—"मैं बड़ी कठिनाई में हूं। जंगली जानवरों की आवाजों से मुझे डर लगता है। जब मैं इतना डरपोक हूं, तो बड़ा होकर मुखिया कैसे बनूंगा?"

जादूगर ने कहा—"इसके लिए मुझे कुछ विचार करना होगा।" उसने अपने लाल कटोरे में से कोई चीज निकालकर किंटू के हाथ पर रख दी। बोला—"इसे ले जाओ। कल जैसे ही सूरज निकले, तो पूर्व की ओर थोड़ी दूर तक चलना। वहां तुम्हें एक



बरगद का पेड़ मिलेगा। उस पेड़ के सामने एक गड्ढा खोदकर उसमें इसे दबा देना। फिर यह मंत्र पढ़ना।" कहते हुए जादूगर ने उसे एक मंत्र बता दिया।

किंटू ने पूछा—"मैं जंगल में अकेला जाऊंगा?"

"हां, तुम अकेले जाओगे।"—जादूगर ने कहा।

किंटू घर लौट आया। उसने रास्ते में मुट्ठी खोलकर जादू की वस्तु देखी—वह किसी फल का सूखा हुआ बीज था। किंटू शाम को खाना भी नहीं खा सका। वह डर के मारे रात भर जागता रहा।

दूसरे दिन जैसे ही सूरज निकला, तो किंटू ने अपना भाला और जादूगर की दी हुई चीज उठाई। वह चुपचाप जंगल की ओर चल पड़ा। जैसे-जैसे वह जंगल में घुसता, जंगल उसे और भी भयानक लगता। जंगल की झाड़ियों के बीच से होकर वह सहमा-सहमा आगे बढ़ रहा था।

किंटू जंगल में पहुंचकर बरगद का पेड़ ढूंढ़ने लगा। किंतु बरगद का पेड़ दिखाई नहीं पड़ा।

किंटू ने लम्बी सांस ली। उसका सिर गर्म और हथेलियां ठंडी हो रही थीं। किंतु वह जादू की वस्तु को बगैर जमीन में दबाए लौटना नहीं चाहता था। वह आगे बढ़ता गया। अंत में एक खुले मैदान में उसे बहुत बड़ा बरगद का पेड़ दिखाई पड़ा। किंटू बड़ा प्रसन्न हुआ। पेड़ के नजदीक पहुंचकर उसने एक गड्ढा खोदा। गड्ढे में उसने जादूगर की दी हुई वस्तु को गाड़ दिया और जादू का मंत्र पढ़ा।

इसके बाद उसने अपना भाला उठाया और वापस होने लगा। अंधेरा हो रहा था। किंटू ने कई बड़े जंगल और नदी-नाले पार किए। उसे लगा कि वह रास्ता भटक गया है। उस समय तक उस पर जादू का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्योंकि उसे पहले से भी अधिक डर लग रहा था। वह सोचने लगा कि उसे जादूगर के पास नहीं जाना चाहिए था।

किंटू ने धीरे-धीरे रोना शुरू कर दिया। उसे लगा कि अब वह अपने घर के लोगों से नहीं मिल

सकेगा। वह घबराकर रुक गया। उसे चारों ओर भयानक जंगल दिखाई पड़ रहा था। उसने अपने भाले को जोर से पकड़ लिया और तेजी से दौड़ना शुरू कर दिया।

तभी किंटू ने देखा—उसके आगे-आगे पांच बंदर भी दौड़ रहे हैं। किंटू उनके पीछे हो गया। बंदरों ने एक बड़े पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। किंटू भी भाले को अपने दांतों के बीच दबाकर बेलों के सहारे उसी बड़े पेड़ पर चढ़ने लगा। वह बड़ी तेजी से पेड़ की ऊंची डाल पर चढ़ गया।

चंद्रमा आकाश में चमकने लगा था। उसकी रोशनी में जंगल का पत्ता-पत्ता चमक रहा था। उसके पैर में जो कड़े थे, वे भी चमकने लगे। इस तरह पेड़ पर बैठे-बैठे कई घंटे बीत गए। वह पेड़ की एक डाली पर टिक कर बंदरों के नजदीक सो गया।

अचानक बंदरों की डरावनी आवाजों ने किंटू को जगा दिया। अंधेरे में किंटू ने नीचे की ओर देखा, तो भय से कांप उठा। उसने नीचे दो तेज चमकदार चीजें देखीं। वह समझ गया कि किसी जानवर की दो आंखें उसे निहार रही हैं।

बंदर छलांग मारकर दूसरे पेड़ पर चले गए। अब किंटू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? तभी दो चमकती हुई आंखें धीरे से सरकीं। किंटू समझ गया कि जानवर उस पर झपटने की तैयारी कर रहा है। वह जानवर चीता था। वह पेड़ को खरोंचते हुए ऊपर चढ़ रहा था। किंटू ने सोचा कि डरने से कोई लाभ नहीं। कुछ न कुछ करना ही होगा।

किंटू झट से डाली पर खड़ा हो गया। उसने बाएं हाथ से पेड़ की एक डाली जोर से पकड़ ली और दाएं हाथ से भाले को कंधे पर उठाया। अंधेरे में चीता उसे ऊपर चढ़ता दिखाई नहीं दे रहा था। किंटू ने साहस बटोरा और पूरी ताकत से भाले को नीचे दे मारा।

भाले के लगते ही एक जोरदार आवाज हुई, कोई भारी-भरकम चीज नीचे गिरी थी। किंटू समझ गया कि अब चीता उसे परेशान नहीं करेगा। किंटू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। थोड़ी देर बाद वह निश्चिंत होकर सो गया।

दिन निकलते ही किंटू की आंखें खुल गईं। अचानक उसे भाले और चीते की याद आई। वह पेड़ से नीचे उतरा। पेड़ के नीचे चीता मरा पड़ा था। उसके पीले रंग में काले धब्बे सुंदर लग रहे थे। किंटू को दुःख हुआ कि उसने सुंदर प्राणी को मार डाला। किंतु जब उसने उसके तेज, चमकदार दांत और खुला जबड़ा देखा, तो अपने दुःख भूल गया। उसने चीते को वहीं छोड़ दिया और भाला लेकर घर चल पड़ा।

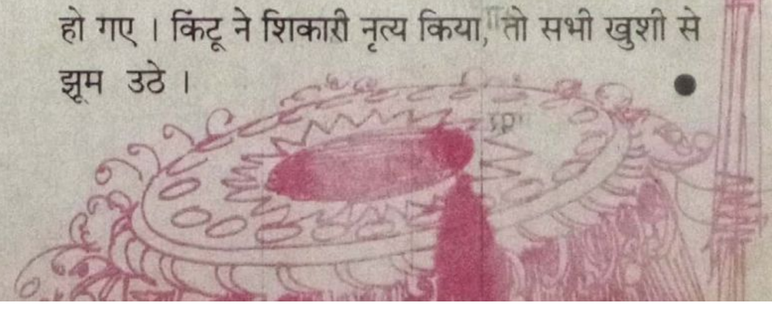
किंटू तेजी से चल रहा था। सहसा रुक गया; उसके कानों में ढोलों की आवाजें सुनाई पड़ीं। वह उन्हीं आवाजों की ओर चल पड़ा।

अचानक किंटू ने देखा—उसके पिता कुछ लोगों के साथ उसकी ओर दौड़े चले आ रहे हैं। किंटू ने भाले को नीचे रख दिया और अपने पिता से लिपट गया। वह बोला—"पिता जी, मैं जंगल में भटक गया था। रात पेड़ पर काटी। वहां मैंने चीते को मार डाला।" किंटू एक सांस में यह सब कह गया। मुखिया किटुम्बा ने बड़े प्यार से उससे पूछा—"बेटा, तुम्हें कोई चोट तो नहीं आई?"

"नहीं, किंतु मुझे भूख बहुत लगी है।"—किंटू ने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा। वे घर पहुंचे, किंटू की मां उसे देख प्रसन्न हो गई। किंटू को उसने बढ़िया-बढ़िया खाना खिलाया।

किंटू ने मारे गए चीते के बारे में बताया। गांव के कुछ लोग चीते को लेने चले गए। कुछ देर बाद वे उस जगह पहुंचे, जहां चीता मरा पड़ा था। वे भारी-भरकम चीते को देख हैरान थे। वे किंटू के साहस और वीरता की प्रशंसा कर रहे थे। वे चीते को लेकर गांव में पहुंचे।

गांव के अनेक आदिवासी मुखिया के घर जमा हो गए। किंटू ने शिकारी नृत्य किया, तो सभी खुशी से झूम उठे। ●



नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अब चलो यहां से —देख रहे हैं ! (बाबा/बापू)

2. उस— का स्वाद अब तक याद है। (आड़ू/आम)

4. तुम— की किस बात से नाराज हो कुमार ? (राम/राजा)

८. उस रात मैंने— की आंखों में सचमुच अंगारे देखे थे ! (काका/काली)

९. —, मैं ही आपका खोया हुआ बेटा हूं। (जी/हां)

११. मगर बिल्लीपुर की राजकुमारी—महल में आई कैसे ! (यहां/वहां)

१२. पानी में रहने वाला एक नटखट जीव।

ऊपर से नीचे

३. आखिर बौने ने बैठे-बैठे— खीर खा ली। (सारी/पूरी)

५. मुझे तुम्हारा—क्या मालूम ? (पता/खाता)

६. मेरी इच्छा है महाराज, राजमहल के प्रांगण में चारों तरफ— नजर आएं। (मोर/मोती)

७. सम्राट अशोक ने बनवाया था यह तीर्थ।

१०. कभी खाया है यह फल ?

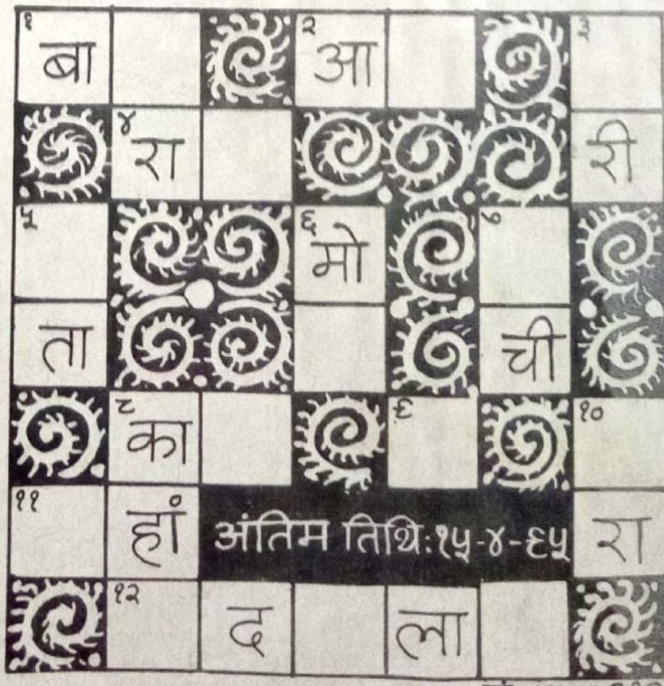
नंदन ज्ञान-पहेली : ३१६

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________

____

____



नं. ज्ञा.प.३१६



सुराही में मुहरें

—राकेशकुमार श्रीवास्तव

रामपुर गांव में तीन किसानों हरिहर, गोपी और बिरजू में बड़ी दोस्ती थी। जमीन-जायदाद तो कोई खास न थी, लेकिन तीनों मेहनती थे। वे अपने खेतों में उपजी सब्जी, फलों आदि को पड़ोस के कस्बे में बेचते थे। इससे उन्हें कुछ मुनाफा हो जाया करता था। किसी तरह गुजारा चल रहा था।

सप्ताह के प्रत्येक इतवार को वे कस्बे के हाट में जरूर जाते थे। एक दिन तीनों ही मित्र कस्बे के बाजार से अपने गांव लौट रहे थे। गर्मियों के दिन थे और चिलचिलाती धूप। तभी हरिहर को प्यास लगी। प्यास तो गोपी और बिरजू को भी लगी थी, लेकिन कुछ और दूर जाते-जाते हरिहर का प्यास से बुरा हाल होने लगा। वह बोला—"दोस्तो, प्यास से गला सूखा जा रहा है। क्यों न पहले किसी ताल-सरोवर से अपनी प्यास बुझा ली जाए!"

"हां, लेकिन इस निर्जन और बंजर पहाड़ियों वाले क्षेत्र में भला पानी कहां मिलेगा?"—गोपी ने कहा।

"नहीं गोपी, ऐसी बात नहीं है। मुख्य रास्ते से दाईं ओर करीब आधे मील की दूरी पर एक पहाड़ी नदी है। वहां का पानी अवश्य ही पीने योग्य होगा।"—हरिहर बोला।

"हां-हां, तुम ठीक ही कहते हो।"—बिरजू ने कहा।

"तो फिर ठीक है, तुम दोनों यहीं पेड़ की छांव में बैठो। मैं अभी पानी पीकर और तुम दोनों के लिए इस सुराही में लेकर आ रहा हूं।"—कहता हुआ हरिहर मुख्य रास्ते से दाईं ओर बढ़ गया।

वास्तव में, कुछ ही दूरी पर छोटा पहाड़ी नाला था, जिसका जल छोटे-छोटे गड्ढों में जमा हुआ था। स्वच्छ जल देख, हरिहर की प्यास और तेज हो गई। उसने पेट भर पानी पिया और फिर मिट्टी की सुराही में कुछ पानी लेकर वह जैसे ही पीछे मुड़ा, सहसा उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ।

सामने कांसे की एक सुराही थी, जिसमें कुछ सोने-चांदी की मुहरें पड़ी हुई थीं। कुछ मुहरें भूमि पर बिखरी पड़ी थीं। ऐसा लग रहा था, मानो वह सुराही पानी में डूबी हुई थी, जो जल के सूखने से ऊपर उभर आई हो।

एक साथ इतना धन देख, हरिहर की खुशी का ठिकाना न रहा। अब वह एक धनी आदमी बन चुका था। लेकिन तभी उसे बिरजू और गोपी की याद आई। मन में एक विचार कौंधा—'यदि मुहरों की चर्चा गोपी और बिरजू से की, तब तो इस समस्त धन के तीन हिस्से हो जाएंगे! नहीं-नहीं, भला ऐसा कैसे हो सकता है? यह धन मुझे प्राप्त हुआ है। इस पर मेरा, सिर्फ मेरा अधिकार है।'

फिर क्या था, धन के लालच में हरिहर वर्षों की

दोस्ती को क्षण में भुला बैठा । उसने मुहरों वाली सुराही को एक अन्य स्थान पर रेत से ढक दिया और पानी की सुराही लेकर तेजी से उस पेड़ की ओर बढ़ा, जहां बिरजू और गोपी उसका इंतजार कर रहे थे ।

"अरे हरिहर, बहुत देर लगा दी तूने ?"—बिरजू ने हरिहर के हाथ से सुराही लेते हुए कहा । हरिहर चुप रह गया ।

तीनों गांव की राह ले चुकें थे । रास्ते भर हरिहर का ध्यान बंटा रहा । बिरजू और गोपी भी उसकी हालत कुछ-कुछ भांप चुके थे ।

गांव पहुंचकर गोपी और बिरजू ने तो अपने घर की राह ली, लेकिन हरिहर उन दोनों की नजरें बचाकर फिर उसी दिशा में भागा ।

सांझ का धुंधलका घिर चुका था । थैले में रखी मुहरों की सुराही लेकर वह जैसे ही बढ़ा, तभी दो व्यक्ति उस पर टूट पड़े । थैला छीनकर अंधेरे में गुम हो गए ।

अब हरिहर पछताने लगा । वह धीमे कदमों से अपने गांव की ओर चल पड़ा । चलते-चलते उसके मन में विचार कौंधा—'काश ! मेरे मन में लालच न आता । उसी समय हम तीनों इसे आपस में बांट लेते । किंतु लालच ने हाथ में आए धन को भी हमसे छीन लिया ।'

हरिहर घर आया, किंतु मुहरों के लुट जाने के कारण उसे रात भर नींद नहीं आई । सुबह उसने देखा , गोपी उसे बुलाने के लिए घर के आंगन में खड़ा है ।

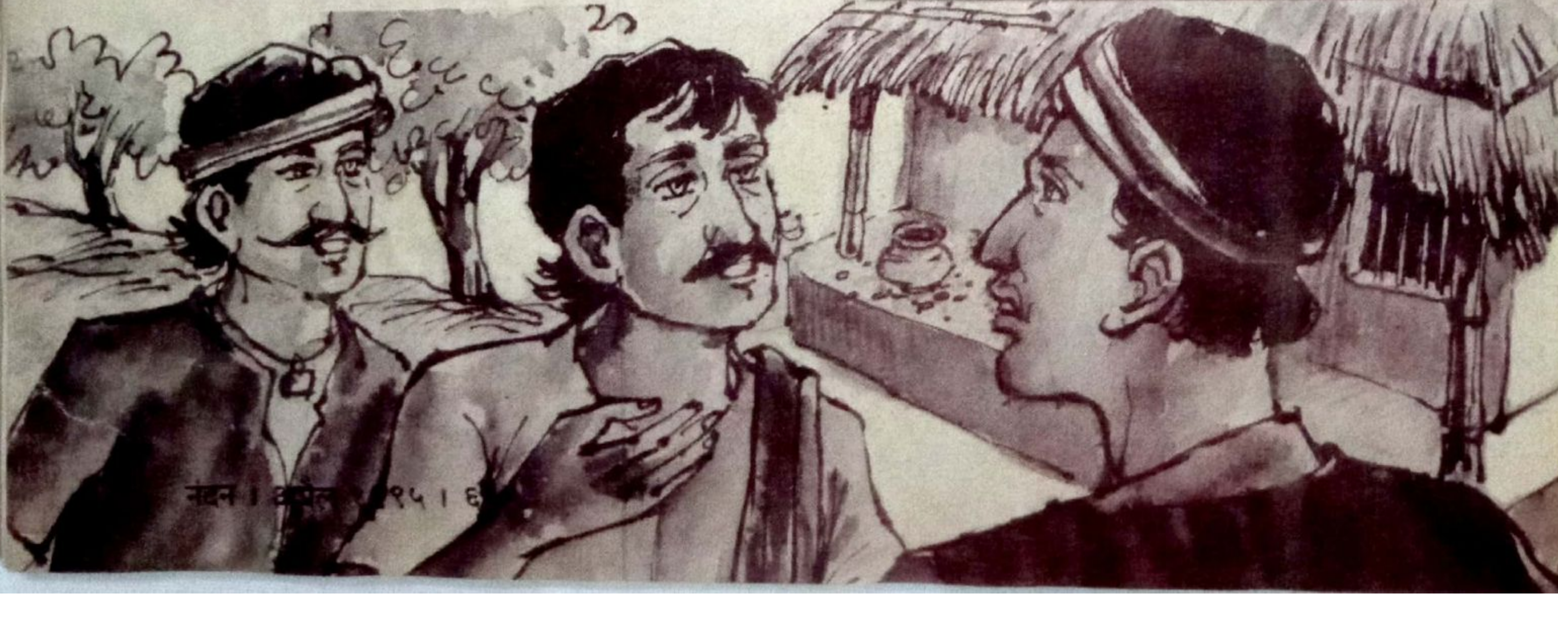
गोपी के बुलाने पर हरिहर बिरजू के घर चल दिया ।

जैसे ही वह बिरजू के घर के बरामदे में पहुंचा, उसकी आंखें चौंधिया गईं । सामने सोने की मुहरें पड़ी थीं जो तीन हिस्से में बंटी थीं । उसे देखते ही बिरजू ने कहा—"आओ, कल के व्यापार में जो मुनाफा हुआ, उसे ले लो ।"

बिरजू की बात सुनकर और मुहरें देखकर हरिहर अवाक् था । बस, इतना ही कह पाया—"किस बात का मुनाफा ?"

"कल जब हम गांव लौटने को थे, तो अपने घर जाने से पहले ही तुम फिर उसी रास्ते पर चल दिए, जिधर से हम आए थे । तुम्हारे वापस जाने से हमें शंका हुई और थोड़ी देर बाद हम तुम्हारे पीछे हो लिए । रास्ते में तुम मुहरों से भरी सुराही को थैले में डालकर ला रहे थे, तो हमने अंधेरे में तुम पर आक्रमण किया और सुराही लूट ली । हमारा उद्देश्य तुम्हें सबक सिखाना था ।"—गोपी ने मुसकराते हुए कहा ।

गोपी की बातें सुनकर हरिहर झेंप गया और उसने अपना सिर नीचा कर लिया । काफी देर तक मौन रहने के बाद उसने धीरे से अपना सिर उठाया । गद्गद् स्वर में कहा—"दोस्तो, वाकई मेरे मन में लालच आ गया था । लालच के कारण मैं अपने मित्रों को समझ न सका, किंतु तुम दोनों ने मित्रता की पहचान करा दी । यह सबक हमेशा मुझे याद रहेगा ।" ●



चीटू-नीटू


नीटू, तुम्हारी गुड़िया अब सयानी हो गई है, क्यों न इसकी शादी...
रामू का गुड्डा मुझे पसंद है, कहो तो उन्हें गुड़िया दिखाने का न्योता...
गुड़िया हमें पसंद है, बताइए बरात कब लाएं लेन-देन की चिंता नहीं, सिर्फ बरात का स्वागत धूम-धड़ाके से-
कितने अच्छे लोग हैं?
फिर भी हमें कपड़े-लत्ते तो... मम्मी यह साड़ी अब पहनतीं नहीं, इससे फेरों का जोड़ा...
और पापा के इस कुर्ते से दूल्हे का जोड़ा...
मंडप तैयार हो गया, मैं अब द्वार सजाता हूं, बरात गली तक...
निपट कर तुम पतीले का नगाड़ा बजाओ और मैं यह बाजा...
क्या शोर-गुल मचा रखा है, सभी बच्चे भीतर क्यों घुसे आ रहे हैं?
इतना नुकसान करके अब रो क्यों रही हो?
मेरी गुड़िया...
धूम-धड़ाके के बीच वे विदा करा कर ले गए, बोले लगन का समय निकला जा रहा है। फेरे घर पर जाकर करा लेंगे।



शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए । इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं । आप भी सोचिए, कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक । उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ अप्रैल '९५ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए । चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

परिणाम : जून '९५ अंक
चित्र : पी. एन. आहूजा

पुरस्कृत चित्र

निताशा शर्मा (९ वर्ष) ११२, सरस्वती नगर, युनिवर्सिटी रोड, ग्वालियर (म. प्र.) ।

इनके चित्र भी पसंद आए— उषा प्रजापति, गया; श्वेता कुमारी, साहेबगंज; नीतू, चंदौसी; शहाना, लक्ष्मी, यमुना विहार, दिल्ली ।



पत्र मिला

□ 'तोते की माला' और 'तेनालीराम' अच्छे लगे। मुझे हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

—रजनीशकुमार, इनरूवा (नेपाल)

□ 'फूल लाओ', 'झूठा नाम', 'देश निकाला', 'तज बाप का राज' और 'पुखरा' कहानियां अच्छी लगीं।

—रमेशकुमार वैष्णव, बालोतरा (राज.)

□ नए अंक में 'फूल लाओ', 'बज उठी भेरी', 'तज बाप का राज' विशेष अच्छी लगीं। 'चीटू-नीटू' और 'चटपट' ने भी खूब हंसाया।

—मनोजकुमार, पौड़ी गढ़वाल (उ. प्र.)

□ फरवरी '९५ अंक अति प्रशंसनीय था। 'कानू', 'तोते की माला', 'हंस बेचारा' व 'बरात गायब' कहानियां बहुत ही रोचक लगीं।

—संदीप बंसल, जालंधर (पंजाब)

□ 'चीटू-नीटू' और 'चटपट' पढ़कर मैं और मेरे परिवार वाले लोटपोट हो गए। 'सोने का चावल' व 'पुरस्कृत कथाएं' भी मजेदार लगीं।

—कुसुमलता, कायमगंज (उ. प्र.)

□ इस अंक में 'तोते की माला', 'हंस बेचारा' और 'बरात गायब' कहानियां बहुत पसंद आईं। हर महीने इसका इंतजार रहता है।

—प्रदीपकुमार सिन्हा, कोटकपूरा (पंजाब)

□ मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं। मेरे परिवार के सभी सदस्यों की यह मनपसंद पत्रिका है। इसका मुख्य आकर्षण 'पत्र-मित्र' स्तंभ है।

—जावेद खान, इंदौर (म. प्र.)

□ मैं इसकी पुरानी पाठिका हूं। मेरे परिवार के सभी सदस्य बड़े ही चाव से पढ़ते हैं। मुझे बाल-समाचार व कहानियां बहुत अच्छी लगती हैं।

—पुतुलसिंह, पटना

□ मैं 'नंदन' का नया पाठक हूं। 'झूठा नाम', 'बरात गायब' व 'हर दिन एक' कहानियां अच्छी लगीं। बच्चों का अखबार आकर्षण का केंद्र था।

—पवन गांधी, करनाल (हरि.)

□ महादेव शंकर का चित्र पसंद आया। 'अजब-अनोखी दुनिया' व 'चटपट' भी बहुत अच्छे लगे।

—बबलू शर्मा, दुर्गापुर (प. बं.)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : मुकेशकुमार शर्मा, खिरनी (राज.); कमल गौतम, फर्रूखाबाद (उ. प्र.); मुकेश लेवे, शाजापुर (म. प्र.)।

आगामी अंक

प्राचीन कथा विशेषांक



बच्चे, किशोर, माता-पिता, दादा-दादी सबका प्यारा यह विशेषांक, जिसमें हैं हमारे ऋषि-मुनियों की अमृतवाणी का रस—

□ **महान संत-महात्माओं, वेद-पुराण, उपनिषद, रामायण, ब्राह्मण ग्रंथ, बौद्ध साहित्य, कथा सरित्सागर, महाभारत आदि की ऐसी कथाएं जिन्हें आप बार-बार पढ़ना चाहेंगे।**

□ देश भर के मंदिरों के दर्शन कीजिए— 'मंदिर-मंदिर नगर-नगर।'

□ **पूरे भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाले महान संत आदि गुरु शंकराचार्य का फ्रेम कराने योग्य रंगीन चित्र।**

□ रमेश कौशिक की कविताएं।

और साथ में आपकी पसंद का सब कुछ— चित्र-कथाएं, तेनालीराम, चीटू-नीटू, प्रतियोगिताएं, समाचार और पुरस्कार।

बार-बार पढ़ने और सहेजकर रखने योग्य मई का विशेषांक।

□ हमारी धरोहर प्रतियोगिता में भाग लीजिए और इनाम जीतिए

अधिक पृष्ठ : अधिक कहानियां

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१४



परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया, लेकिन कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आ सका। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है —

एक गलती : दो : प्रत्येक को एक सौ पचास रुपए
१. सरिता, कानपुर; २. रोहित, वाराणसी।

दो गलती : चौदह : प्रत्येक को पचास रुपए
१. शिवानी, पटना; २. अंशिता बजाज, कैमोर (म.प्र.); ३. चंदन, रांची; ४. सोनी सिंह, फत्तेपुर (सीवान); ५. धन्नाराम चौधरी, ब्यौर्त (कर्नाटक); ६. प्रियंक रानी, गुलजार बाग (पटना); ७. ज्योत्स्ना यादव, कानपुर; ८. अरुंधती, पटना; ९. शम्मी कुमारी, नरहन (समस्तीपुर); १०. पंकज श्रीवास्तव, कानपुर; ११. रविशंकर कुमार, मोतिहारी (पूर्वी चम्पारण); १२. विजया तिवारी, रांची; १३. अतुलकुमार रौंछेला, देहरादून; १४. रणजीत लाल साह, जैतपुर इस्टेट (मुजफ्फरनगर)।

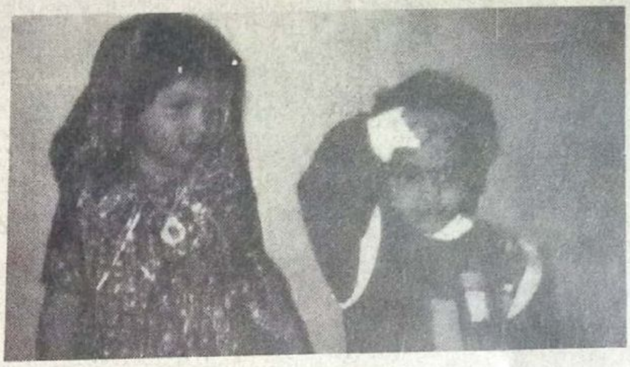
आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर से आती महिला की आस्तीन चढ़ी हुई है।
२. गलियारे का फर्श काला है।
३. शो विंडो में रखे एक बर्तन में एक मछली अधिक है।
४. कुत्ते का कान ऊपर उठा है।
५. माल ले जाने वाली गाड़ी पर लिखा टेलीफोन नम्बर बदल गया है।
६. उसके नीचे लगी जाली छोटी है।
७. टोकरी में बैठी बिल्ली की पूंछ लम्बी है।
८. दाईं ओर के मकान की छत पर एंटीना लगा है।
९. पिंजरा पकड़े व्यक्ति की बाईं कोहनी निकली हुई है।
१०. दुकान के बाहर तने पर्दे से एक रेखा गायब है।

शीर्षक बताइए

परिणाम

ढेर सारे शीर्षक मिले। 'नंदन' फरवरी '९५ अंक में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए।



भाई-बहन का प्यार, महकाए सारा संसार।
—कंचन जैन, १५६ मिंट स्ट्रीट, सॉव कारपेट, तीसरी मंजिल, मद्रास।

बहना ! क्यों है आज उदास, मैं तो हूं तेरे ही पास।
—संजयकुमार गुप्ता, द्वारा सुरेशचंद्र गुप्ता, मुहल्ला-राजेंद्र नगर, टीचर्स कालोनी, बाजपुर, नैनीताल (उ. प्र.)।

दीदी ! तुम न शरमाओ, हंसकर फोटो खिंचवाओ।
—राजेश पांडेय, ३ नं. चारूचंद्र सिंघा लेन, संध्या बाजार, हावड़ा (प. बं.)।

शाम हुई पर पापा न आए, आकर कोई मेरे भइया को बहलाए।
—सौरभ गुप्ता, सी-८/९ ऋषि नगर, उज्जैन (म. प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : श्वेता रोहतगी, धर्मपुरा, दिल्ली; रामफलसिंह पटेल, ग्रा. गहिलारा, जि. सीधी (म. प्र.); शुभम् श्रीवास्तव, चारद्वार, शोणितपुर (असम); रेखा धींग, बम्बोरा, उदयपुर (राज.)।

पाठकों/लेखकों से

- *नंदन कंप्यूटर पर कम्पोज होता है। अतः टाइप की हुई रचनाएं भेजिए।*
- *रचना के साथ डाक टिकट लगा और नाम-पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें।*
- *यदि रचना वेद-पुराणों, अन्य प्राचीन ग्रंथों से ली गई है अथवा ऐतिहासिक है, तो सही संदर्भ का पूरा उल्लेख अवश्य करें।*

अजब-अनोखी दुनिया



नन्हा-सा वीडियो कैमरा : दुनिया का सबसे छोटा वीडियो कैमरा फ्रांस में बना है। कैमरे का नाम है एच. आई.-८ वीडियो रिकार्डर। इसकी लम्बाई है ८० मि.मी., चौड़ाई १०८ मि.मी. और ऊंचाई १४५ मि.मी. यानी साबुनदानी से कुछ बड़ा। वजन है करीब सवा किलो। इसे कमर की पेटी में आसानी से बांधा जा सकता है। आसानी से न दिखाई देने के कारण जासूसों और खोजी पत्रकारों के बड़े काम का कैमरा है।

फ्रांस की ही एक कम्पनी ने फोटोग्राफरों के लिए नन्हा कैमरा बनाया है। साबुन की बड़ी टिकिया के वजन का यह कैमरा बेलनाकार है। करीब चार इंच लम्बे इस कैमरे से फोटो बहुत साफ आती है।

सूटकेस में साइकिल : बस या रेलगाड़ी से उतरकर कम दूरी के लिए आटो या रिक्शा मिलना कठिन होता जा रहा है। ऐसे में अपनी साइकिल पास में हो तो क्या कहने ! रेल या बस में मौजूदा साइकिल के साथ यात्रा करना तो कठिन है। अगर सूटकेस में साइकिल बंद हो जाए, तो काम बने। मुड़वां या फोल्डिंग साइकिलें तो अभी बनती नहीं।

अमरीका के मोंटिज कारपोरेशन ने दो सीट और दो पैडलों वाली एक बड़ी साइकिल बनाई है। इस पर बैठी दोनों सवारियां पैडल मारती हैं। इससे चलाने में ताकत कम लगती है। इस साइकिल की खासियत यह है कि इसे अंग्रेजी के अक्षर जेड के आकार में मोड़ा जा सकता है। यह मुड़ी हुई साइकिल एक बड़े सूटकेस में समा जाती है। साइकिल सूटकेस में रखो और मजे से यात्रा करो।

पंद्रह हजार रुपए में एक किलो फफूंद : फफूंद के भी दिन बदल रहे हैं। फ्रांस में एक खुशबूदार फफूंद की बड़ी मांग है। लोग भोजन में इसका इस्तेमाल करते हैं। यह खुशबूदार फफूंद पंद्रह हजार रुपए प्रति किलो बिकती है।

खुशबूदार फफूंद ओक के वृक्ष के नीचे उगती है। जमीन के ऊपर नहीं बल्कि जमीन के नीचे। इसलिए आसानी से नहीं दिखती। इसे खोजने के लिए खोजी कुत्तों का उपयोग किया जाता है। ये कुत्ते भी जमीन के नीचे की पूरी फफूंद नहीं ढूंढ़ पाते।

खुशबूदार फफूंद खोजने के लिए हाल ही में एक मशीन बनाई गई है। इस चलती-फिरती मशीन में संवेदक लगे हैं। ये संवेदक हमारी नाक की तरह काम करते हैं। ये फफूंद की सुगंध के रसायनों को पहचानकर, उसका पता लगा लेते हैं। इस महंगी और खुशबूदार फफूंद का नाम है—ट्रुफल।

कितनी पुरानी बांसुरी : पुर्तगाल की एक गुफा में कुछ चीजें मिली हैं, उनमें हड्डी की बनी एक बांसुरी भी है।

पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन के पास कुछ लोग घूम रहे थे। उनमें से एक आदमी चट्टान के नीचे फंस गया। कार का पहिया ऊपर उठाने वाले 'जैक' की मदद से चट्टान ऊपर उठाई गई। चट्टान के पीछे एक बड़ी गुफा थी। करीब डेढ़ सौ मानव कंकाल उसमें बिखरे पड़े थे। गुफा में कुल्हाड़ियां, फावड़े, सीप के गहने और बर्तन-भांडे भी मिले हैं।

गुफा में सबसे अनोखी चीज मिली है—छेदों वाली एक हड्डी। लगता है किसी ने उसे तराशकर बांसुरी का रूप दिया था। जानकारों का कहना है कि यह बांसुरी करीब पांच हजार साल पुरानी है।

—बृजमोहन गुप्त

नई पुस्तकें

१. हाथी घोड़ा पालकी
२. चंदा मामा दूर के
३. नीम और गिलहरी
४. सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ते हैं
५. भारत प्यारा देश हमारा
६. सतरंगा पुल

सभी पुस्तकों के लेखक : द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी
प्रथम तीन पुस्तकों के प्रकाशक : ज्वालाप्रसाद विद्यासागर, १२९ जीरो रोड, इलाहाबाद ।
बाकी तीन के प्रकाशक : सागर प्रकाशन, २७, पान दरीबा, इलाहाबाद ।
१ और २ का मूल्य : छह रुपए । शेष चारों का मूल्य : दस रुपए, प्रत्येक ।

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी बच्चों के बेजोड़ कवि हैं । हिंदी जगत में उनकी कविताओं का खूब स्वागत हुआ है ।

'हाथी घोड़ा पालकी' और 'चंदा मामा दूर के'—इन दोनों में शिशु-गीत हैं । ऐसे सुंदर शिशु-गीत एकदम याद हो जाएं, जैसे—

चंगू मंगू/चढ़े पेड़ पर/ लगे तोड़ने आम
आंधी आई/डाली टूटी/ दोनों गिरे धड़ाम

'हवाई जहाज' शीर्षक की चार पंक्तियां हैं—बात अचम्भे की यह देखो/पंख न इसके हिलते हैं/ लगे हुए जो पंखे आगे/ केवल वे ही चलते हैं ।

दोनों पुस्तकों में मोटा टाइप है । चार रंगों की सुंदर छपाई है ।

नीम और गिलहरी—पक्षियों और अन्य जंतुओं से बालक को जोड़ने के लिए ये बारह कविताएं हैं । इनमें खेल-खेल में उनकी आदतों, रहन-सहन का परिचय भी दे दिया गया है । 'बया' के बारे में—

बुनकर चिड़िया बुनकर चिड़िया/ बना घास का लेती ताना/ बना घास का लेती बाना/ उन तानों-बानों से बुनकर/ बना घोंसला लेती चिड़िया/बुनकर चिड़िया

सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ते हैं पुस्तक में तेरह कविताएं हैं । कई कविताएं लम्बी हैं लेकिन सभी दिलचस्प हैं । अटकन-बटकन, शस्त्रों का त्योहार और दीपों का त्योहार खास तौर पर बच्चे पसंद करेंगे ।

भारत प्यारा देश हमारा इसमें देश-प्रेम और एकता का संदेश देने वाली कविता है । अट्ठाइस छंद हैं । हर छंद के साथ चित्र हैं जो भाव को समझने में सहायक हैं । भाषा तो एकदम सरल है ही ।

सतरंगा पुल चौदह लम्बी कविताएं पुस्तक में दी गई हैं । ये कविताएं थोड़े बड़े बच्चों के लिए हैं । हवा, बादल, धूप, हवाई जहाज, पौधे की खुशी, संपेरा जैसे विषयों पर लिखी गई कविताएं मनोरंजक हैं । बच्चे पसंद करेंगे । सभी पुस्तकों के मुखपृष्ठ सुंदर हैं । ये पुस्तकें हर स्कूल में, हर बच्चे तक पहुंचनी चाहिएं ।

पानी-पानी : लेखिका क्षमा शर्मा ; प्रकाशक : जनवाणी प्रकाशन, ३०/२२ ए, गली नं. ५ विश्वासनगर, शाहदरा-दिल्ली ; मूल्य : बारह रुपए ।

छोटी-बड़ी नौ कहानियां पुस्तक में हैं—पानी-पानी, दो गुलाब, मोमबत्ती और दिया, बदल गई कमीजें, घमंडी चिड़िया, एक अकेली बेल, पुल पर पुनीता, बोली मछली, रुई उड़नछू । सभी कथाओं को बच्चे रुचि से पढ़ेंगे लेकिन बदल गई कमीजें, पुल पर पुनीता और रुई उड़नछू खासतौर से अच्छी हैं । इनमें सीख देने की कोशिश नहीं है बल्कि नई तरह से कहानी कही गई है । चित्र अच्छे हैं, छपाई भी अच्छी है ।



आंख बंद

गीदड़ ने मुर्गे को दौड़कर पकड़ लिया । उसे खाने की तैयारी करने लगा ।मुर्गा बोला— "भाई, मैं गोरों के घर पला हूं । पहले गोरों की तरह प्रार्थना कर लो, फिर मुझे खाना ।"

गीदड़ राजी हो गया । पूछा— "गोरे कैसे प्रार्थना करते हैं ?"

मुर्गे ने बताया कि वे दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं ।

गीदड़ दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा । मुर्गा बोला— "ऐसे नहीं, प्रार्थना आंख बंद करके की जाती है, इधर-उधर देखते हुए नहीं ।"

गीदड़ ने वैसा ही किया ।

मुर्गे ने मौका देखा और उड़कर एक छप्पर पर जा बैठा । वहां से उसने गीदड़ को झिड़का— "मक्कार, तू कब से इतना भगत बन गया ?"

—कमलरंजन 'हिमशैल'



वन में भाई

—डा. सुरेंद्रकुमार 'महाचंद्र'

सम्राट भरत चक्रवर्ती बनना चाहते थे। वह इसके लिए दिग्विजय पर निकले। उनकी अधीनता कुछ राजाओं ने बिना किसी विरोध के स्वीकार कर ली। अन्य राजाओं को भरत ने युद्ध में हरा कर अपने अधीन कर लिया था। फिर भी उनकी दिग्विजय अधूरी थी, क्योंकि उनके छोटे भाई पोदनपुर (तक्षशिला) नरेश बाहुबलि ने उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी।

भरत ने बाहुबलि के पास संदेश भिजवाया। बाहुबलि ने उत्तर दिया— 'मुझे यह राज्य पिता ऋषभदेव महाराज ने दिया था। मैं आपका सम्मान करता हूं। कृपया आप इस राज्य पर आक्रमण न करें।'

बाहुबलि का उत्तर पाकर भरत संतुष्ट नहीं हुए। वह गुस्सा हो उठे। वह अपनी दिग्विजय किसी भी हालत में पूरी करना चाहते थे। उन्होंने बाहुबलि पर चढ़ाई करने का विचार बना लिया। रणभेरी बजने लगीं। लेकिन तभी मंत्रियों ने सम्राट भरत को सलाह दी—''सम्राट ! व्यर्थ के नर संहार से क्या लाभ ? वैसे भी यह मामला आप दो भाइयों का है। आप दोनों मिल-बैठकर इसे सुलझा सकते हैं।''

मंत्रियों की बात सुनकर सम्राट ने कहा—''लेकिन यह मामला आपसी तौर पर कैसे सुलझ सकता है ?''

''—सम्राट ! आप दोनों मल्ल युद्ध कर जय-पराजय का निर्णय कर लें। इससे नर संहार नहीं होगा। आपकी बात भी पूरी हो जाएगी।''

बाहुबलि ने इसे स्वीकार कर लिया। भरत को भी मंत्रियों की सलाह जंच गई। दोनों भाई अखाड़े में उतर आए। मल्ल युद्ध प्रारम्भ हुआ। लेकिन भरत को लगा कि वह मल्ल युद्ध में नहीं जीत पाएंगे, तो उन्होंने पिता से प्राप्त 'चक्ररत्न' बाहुबलि पर छोड़ दिया।

'चक्ररत्न' बाहुबलि के समीप पहुंच कर वापस



भरत के पास लौट गया क्योंकि उसके साथ यह शर्त जुड़ी थी कि वह सगे-संबंधियों पर नहीं चलता था। इस बात को भरत भूल गए थे।

भरत के इस नियम विरुद्ध कार्य से बाहुबलि तिलमिला उठे। उन्होंने भरत को अपनी भुजाओं में ऊपर उठा लिया। वह भरत को पृथ्वी पर पटकने ही वाले थे कि सहसा उनमें भाई के प्रति प्रेम उमड़ पड़ा। बाहुबलि ने भरत को छोड़ दिया और बोले—''सम्राट ! मुझे क्षमा करना। इस राज्य और वैभव को धिक्कार है, जिसके मद में अंधा होकर मनुष्य अपने रिश्तों को भी भूल जाता है। यहां तक कि वह छोटे-बड़े का सम्मान करना भी भूल जाता है।''

इतना कहकर बाहुबलि अखाड़े से निकल गए। उन्होंने राजपाट त्याग दिया। फिर दीक्षा ले ली। भरत ने बाहुबलि को बहुत रोका, लेकिन बाहुबलि के कदम वन की तरफ बढ़ गए। ●

रामू के दादा जी

बम्बई की एक चाल में चित्रू अपनी मां, पिता जी और बड़े भाई राजू के साथ रहती थी। वह पांचवीं कक्षा में पढ़ती थी। खेल-कूद के साथ-साथ पढ़ाई में भी होशियार थी। वह बहुत दयालु भी थी। दूसरों का दुःख उससे देखा नहीं जाता था।

एक दिन वह स्कूल से वापस लौट रही थी। उसे बिजली के खम्भे के नीचे एक छोटा-सा लड़का रोता हुआ दिखाई दिया। चित्रू रुकी और धीरे से उस लड़के के पास जाकर बैठ गई। उसने उस लड़के के कंधे पर हाथ रखकर पूछा—"भइया, तुम कौन हो ? इतनी धूप में यहां क्यों बैठे हो ? रो क्यों रहे हो ?"

इस पर लड़के ने सिर उठाकर दर्द भरे नेत्रों से चित्रू की तरफ देखा। कहा—"मेरा नाम रामू है। मैं अपनी विधवा मां के साथ रहता था। दो दिन पहले मेरी मां गुजर गई। अब मेरा इस दुनिया में कोई भी नहीं है। सिर्फ दादा जी हैं जो गांव में रहते हैं।"

रामू की कहानी सुनकर चित्रू की आंखों में पानी भर आया उससे उसका दुःख देखा नहीं गया। वह बड़े ही प्यार से उसे अपने घर ले आई। डरते हुए चित्रू अपनी मां के पास गई और उन्हें रामू की कहानी सुनाई। सारी बात सुनकर मां ने चित्रू को गले से लगा लिया।

अगले दिन सुबह जब चित्रू स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही थी, तो दरवाजे की घंटी बजी। उसने सोचा शायद अखबार वाला आया होगा। लेकिन देखती क्या है कि सामने इंस्पेक्टर अंकल खड़े हैं।

पापा के पूछने पर इंस्पेक्टर अंकल ने जेब से एक फोटो निकाला। कहा—"क्या आप इस लड़के को जानते हैं ? क्योंकि उसे कल चित्रू के साथ देखा गया था।" अंकल की बात सुनकर चित्रू ने रामू की पूरी कहानी सुना दी।

कहानी सुनकर अंकल मुसकराए। बोले—"अब तुम उसकी चिंता न करो। रामू के दादा



जी मेरे पिता जी के मित्र हैं। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर रामू का पता बताया। दादा जी ने रामू को गांव बुलाया है।'' यह सुनकर सब लोग बहुत खुश हुए। चिन्नू को भी बहुत अच्छा लग रहा था कि रामू अब दादा जी के साथ रहेगा। लेकिन उसे रामू के जाने का दुःख भी हो रहा था। एक ही दिन में उसे उससे बहुत लगाव हो गया था। रामू के जाने पर चिन्नू ने अपना बस्ता उठाया और अपने भइया के साथ स्कूल की तरफ चल दी। वह आज बहुत खुश थी।

—नंदिनी अग्रवाल, थाणे (महा.)

अकेले न जाना

मौसम सुहावना था। रामू और जमाल समुद्र की तरफ बढ़े जा रहे थे। जमाल के हाथ में अपने पिता का मछली पकड़ने वाला जाल भी था। लेकिन जमाल थोड़ा डरा हुआ था। रामू के साथ पहली बार वह अकेले मछलियां पकड़ने निकला था। उसके पिता का कहना था कि यह इलाका खतरनाक समुद्री जानवरों से भरा हुआ था।

वे नाव खेते हुए बहुत दूर तक आ पहुंचे थे। उन्होंने जाल फेंका। जब जाल बाहर निकाला तो उसमें बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियां फंसी हुई थीं। वे आगे बढ़े और दोबारा से जाल फेंका। जैसे ही जाल खींचने लगे तो लगा, जाल बहुत भारी है। अचानक एक झटका लगा और जाल दोबारा समुद्र में जा गिरा। जमाल ने उसे पकड़ने की कोशिश की तो वह भी समुद्र में जा गिरा।

जमाल के तो होश ही उड़ गए। रामू भी घबरा उठा। जैसे-तैसे उसने जमाल को नाव पर खींचा। उधर जाल में फंसा जानवर जोर से उछला तो रामू और जमाल के मुंह से चीख निकल गई। यह तो एक भारी भरकम शार्क थी। शायद यह वही शार्क थी जो अब तक कई आदमियों को मार चुकी थी और कइयों को घायल कर चुकी थी। शार्क को देखकर रामू और जमाल की तो जान पर बन आई। अगर कहीं यह शार्क जाल तोड़कर बाहर निकल आई तो क्या होगा? अचानक उन्होंने देखा कि शार्क जाल से बाहर निकल, उनकी नाव की तरफ बढ़ रही थी। रामू और जमाल को लगा कि बस कुछ ही देर में शार्क उनके टुकड़े-टुकड़े कर देगी।

अचानक एक भाला तेजी से आकर शार्क के शरीर में घुस गया। शार्क भाले समेत पानी में गायब हो गई। तभी बहुत-सी नौकाओं पर सवार दूसरे नाविक भी वहां आ पहुंचे। उनमें जमाल के पिता तथा खादिम चाचा भी थे।

जमाल के पिता उसे डांटने लगे तो रामू ने सुबकते हुए कहा—''आज अगर आप न आते तो हमारी जान न बचती। जमाल तो इधर आने के लिए मना कर रहा था। मैं ही उसे इधर ले आया।''

जमाल के पिता बोले—''आज यदि खादिम ने तुम्हें न देखा होता, तो हमें कभी पता ही न चलता कि तुम इधर आए हो। हमें मालूम था कि यहां एक खतरनाक शार्क है।''

रामू और जमाल दोनों खादिम चाचा से लिपट गए। उन्होंने निश्चय किया कि वे बहादुरी के काम तो करेंगे, मगर ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिससे जान का खतरा हो।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक पुलिस इंस्पेक्टर वहां आए। उन्होंने दोनों बच्चों के चित्र मांगे। कहा कि हम सरकार से कहेंगे कि तुम दोनों को बहादुरी के लिए पुरस्कार दिया जाए।

—प्रवीणकुमार, त्रिवेंद्रम

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं: राजीव रोशन, जोगबनी (नेपाल); तुषार शर्मा, गाजियाबाद; शीतल, भिवानी; सौरभ नाग, मेरठ।

बाल सभा



अमित



पूरन शर्मा



चन्दन कुमार



आलोक



पुष्पा

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. नकुल गोयल, १० वर्ष, मकान नं. १२५५, सैक्टर २२-बी, चंडीगढ़; २. प्रमोदकुमार, १२, ग्रा.+पो. सहार, लक्ष्मी पुस्तकालय के नजदीक, जि. भोजपुर (बि.); ३. रजनीशकुमार पोद्दार, १२, अरुणकुमार पोद्दार, ग्रा.+पो.इनरूवा बाजार, जि. सुनसरी (नेपाल); ४. केदार चौधरी, १४, ग्रा. ईटवा, पो. दशरथपुर, जि. मुंगेर (बि.); ५. जितेंद्र यादव, १४, म. नं. ४०, सरसावा, जि. सहारनपुर (उ. प्र.); ६. संदीपकुमार वर्मा, १५, लाजपत नगर, नजदीक हनुमान मंदिर, म. नं. १७/६, फतेहाबाद, हिसार; ७. हरीशकुमार सिंह, १२, बद्रीसिंह, ग्रा.+पो. दुलौर, वाया जगदीशपुर, जि. भोजपुर (बि.); ८. प्रकाशचंद्र लोहार, १३, ग्रा. वणवासा, पो. भेखरेड़, तहसील आसपुर, जि. डूंगरपुर (राज.); ९. प्रियंका, १४, चितलकर प्रियंवद १/५, वायुसेना स्टेशन, अर्जुनगढ़, नई दिल्ली; १०. अभिनवकुमार मिश्र, १५, युगेश्वर मिश्र, प्रोफेसर कालोनी, समस्तीपुर (बि.); ११. धर्मेंद्रकुमार पाल, १४, चेथम लाईन, प्रयाग स्टेशन, पी-१५५/१, इलाहाबाद; १२. इरफान आलम, १५, म. नं. ई. एफ-११, बी. टी. पी. एस., बेगूसराय (बि.); १३. लालबाबू पांडेय, १४, २, शिमला सतघड़ा रोड, नई बस्ती, पो. प्रभास नगर, जि. हुगली (प. बं.); १४. पूजाकुमारी, १६, राजमहल, कासिम बाजार, जि. साहेबगंज (बि.); १५. शिवपूजन कुमार, १६, धनाटी, सुरसंड, सीतामढ़ी (बि.); १६. कौशलेंद्र सिंह, १५, ग्रा.+पो. बैशकांटी वाया करारी, इलाहाबाद; १७. चांदकुमार मल्होत्रा, १३, शांति देवी, कचहरी के निकट, स्टेशन रोड, नगीना (उ. प्र.); १८. आशीषकुमार जायसवाल, १०, ग्रा.+पो. जामुदाग, जि. रांची; १९. हेमंतसिंह, १४, ग्रा. नरायना कटता, पो. पान्हौरी, तहसील डीग, भरतपुर (राज.); २०. संजीवकुमार, १५, नंदकिशोर प्रसाद, सरिया रोड, पो. बगोदर, जि.गिरिडीह (बि.)।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. रविकांत भास्कर, १४ वर्ष, सीताराम, सी/६७, ए. जी. कालोनी, पटना; २. कपिल पांडेय, १५, ४१/२, प्रभा निकेतन, विवेक विहार-३, कांवली, देहरादून; ३. ललन पांडेय, १५, २, पांचू गोपाल भादुड़ी सरणी, नई बस्ती, पो. प्रभासनगर, रिसड़ा, जि. हुगली (प. बं.); ४. मीनाक्षी बोथरा, १३, अमरचंद बोथरा, पींचा की गली, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर; ५. अजय वधवा, १५, १८३/१८४ भारत नगर, दिल्ली; ६. अंकुरसिंह १२, राजेंद्रसिंह, म. नं. २६४ गांधी नगर, उन्नाव (उ. प्र.); ७. सोनम भगत, १०, अप्सरा ब्यूटी पार्लर, लालबाग, दरभंगा; ८. मनन ललित, ७, एफ-३०, अंसारी नगर, नई दिल्ली; ९. मंजरी खरे, १०, डी ४८/१८९ मिश्र पोखरा, वाराणसी; १०. दीपेशकांत पाठक, १४, शर्मा टेंट हाउस, मंडी स. नं.-३, सबलगढ़, जि. मुरैना (म. प्र.); ११. अमितकुमार अग्रवाल, १५, मातादीन जी अग्रवाल, सदररोड, पो. फारबिसगंज (बि.); १२. अमितकुमार, १४, विजयशंकर प्रसाद, काशीपुर, समस्तीपुर (बि.); १३. संजीव शर्मा, १२, सेंट मेरी कांवेंट स्कूल, पो. बनखेड़ी, जि. होशंगाबाद (म. प्र.); १४. समेरेंद्र गौतम, १६, बी-८३, फ्रेंड्स कालोनी, इटावा; १५. अनीशा यशोधरन, १०, ई १२, हाथीताल कालोनी, जबलपुर (म. प्र.); १६. संजीवकुमार, १५, ग्रा.+पो. राजापाकर बाजार, जि. वैशाली (बि.); १७. प्रवीनकुमार वर्मा, १२, १/४६०, महादेव गली, मोती कटरा, आगरा; १८. अंतरिक्ष कात्यायन, १०, डा. दिनेशकुमार कात्यायन, राम औषधालय, धामपुर (उ. प्र.); १९. स्निग्धा कुकशाल, ११, गोरापड़ाव, पो. अर्जुनपुर,हलद्वानी, नैनीताल; २०. मुकेशकुमार, १३, तनिकप्रसाद सिंह, ग्रा.+पो. मुस्तफापुर, जि. मुंगेर (बि.); २१. अरिंजयकुमार जैन, १६, अध्यक्ष-जैन बाल संघ, पो. दरियाबाद, बाराबंकी; २२. रचना सैनी, १५, महेंद्रकुमार सैनी, १ सिविल लाइन, शेर कोठी, रूड़की; २३. चुनमुनकुमार, १४, श्री जगन्नाथराय दाहियावा, शिया मस्जिद के निकट, छपरा।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


ऐसा भी होता है!
शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. आचानक तेज हवा चलने लगी... और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रुक गई...
उसमें से एक बौना-सा जीव निकला और सोनू से बोला...
"मुझसे दोस्ती करोगे?"
"त... त... तुम हो कौन?"
"मैं मंगल ग्रह से आया हूँ. दोस्ती करने."
सोनू के मुँह से निकल गया
"ठीक है"
"तो ये लो हमारी दोस्ती की निशानी. मेरी मन पसंद चीज़ जो तुम्हारी ही धरती का जादू है."
"जादू?"
"बिल्कुल. न गुठली न छिलका आम का खास मज़ा"
"आम? ऐसी सर्दी में? जल्दी दो."
"तो दोस्त, खोलो मुँह और करो आँखें बंद टाइट और ये लो मेरी प्यारी मैंगो बाइट"
"हं! मैंगो बाइट!"
सोनू खुशी से उछल पड़ा. तो उसकी फ़ेवरेट मैंगो बाइट मंगल ग्रह में भी फ़ेवरेट है!
जैसे ही उसने मैंगो बाइट मुँह में डाली नए दोस्त ने मैंगो बाइट से भरा हुआ एक बॉक्स थमा दिया और "फिर मिलेंगे" कह कर उड़ गया.
mango bite
पारले
मैंगो बाइट

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९५ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

Scanned with CamScanner